

रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' के काव्य का स्वच्छन्दतावादी मूल्यांकन

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध-सार



निर्देशक :

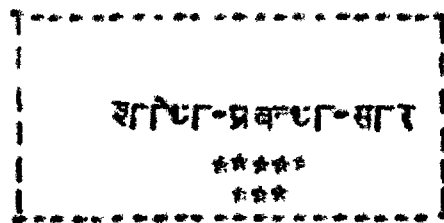
डा० अजय सिंह
एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्.
रीडर

शोधकर्त्री :

कुसुम लता शर्मा

हिन्दी-विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़।



शोध-प्रवन्ध-सार

अंग्रेजी के रोमांटिसिज्म से मिलती-जुलती प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति करने के लिए हिन्दी में 'स्वच्छन्दतावाद' शब्द का प्रयोग किया गया। हिन्दी में 'स्वच्छन्दतावाद' शब्द के प्रयोग तथा इसके लिए पृष्ठांक-पृष्ठांक नाम प्रख्यात विद्वानों ने दिया है। डा० रामेश्वर सात छाण्डेसवाल ने इसे रोमांसवाद कहा है। डा० रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी रोमांटिसिज्म को रोमांसवाद ही कहा है। डा० कैसरी नारायण शुक्ल ने इसे भावुक्तावाद कहा है। प्रसाद जयन्ती 1962 के अवसर पर वाराणसी के सभा भवन में ली रहे कार्यक्रम में इसे रमन्तवाद कहा गया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्वच्छन्दतावाद का प्रयोग नयी काव्य धारा के संदर्भ में करते हुए उसे अंग्रेजी शब्द रोमांटिसिज्म के पर्याय के रूप में स्वीकार किया है। जहाँ उसका अभिप्राय काव्य में नवीन शैली, विषय योजना तथा नाना प्रकार के अन्तरवृत्तियों के उद्घाटन से था। डा० छजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने रोमांटिसिज्म के हिन्दी अनुवाद 'स्वच्छन्दतावाद' पर आपत्ति की थी। लेकिन विकल्प में कोई दूसरा नाम नहीं दे सके हैं। डा० अजय सिंह का इसी संदर्भ में कहना है स्वच्छन्दतावाद 'रोमांटिसिज्म' के बदले उस बातू सिक्के की तरह चल रहा है, जिसे कोई बाजार में रोक नहीं सकता।

'स्वच्छन्दतावाद' शब्द का मूल स्रोत संस्कृत का स्वच्छन्द शब्द है। 'स्वच्छन्द' शब्द की व्युत्पत्ति 'स्व' और 'छन्द' के योग से हुई, जहाँ 'स्व' का अर्थ है अपनी या स्वयं की तथा 'छन्द' का अर्थ है चक्का। इस तरह स्वच्छन्द शब्द का अर्थ हुआ अपनी चक्का से अर्थात् स्वयं की अभिरुची के अनुसार। हिन्दी में भी उसी तरह प्रयुक्त स्वच्छन्द शब्द को भाववाचक संज्ञा के रूप में स्वच्छन्दता के रूप में प्रयुक्त किया जाने लगा तथा जिसका कोशगत अर्थ हुआ-स्वतन्त्रता, स्वाधीनता अर्थात् आजादी।

अंग्रेजी में इस शब्द की व्युत्पत्ति 'रोमांस' शब्द से हुई है। रोमांटिक तथा रोमांटिसिज्म दोनों का मूल उद्गम शब्द रोमांस ही है। रोमांस लैटिन शब्द 'रोमना' से मिलता है। रोमांटिक शब्द रोमांस शब्द से निवृत्त होकर रोमांटिक का रूप धारण करता है। कहा जाता है कि फ्रेडरिक स्क्लेट ने रोमांटिक का सर्वप्रथम प्रयोग 1794 ई० में क्लासिक के साधा-साधा कविता की नयी पुरानी धारा के भेद को स्पष्ट करने के लिए किया जो एक दूसरे का विरोध था।

प्रत्येक भाषा के साहित्य में निरन्तर सृजन के फलस्वरूप रूढ़ियाँ एवं परम्पराएँ बनती हैं। रूढ़ियों की अतिशयता के प्रति समय आने पर विद्रोह होता है और टूटती भी हैं। उन्हें तोड़ना वाला कवि स्वच्छन्द तथा उसकी कविता स्वच्छन्दतावादी होती है। इस तरह क्रमागत रूढ़ियों की तोड़कर चलने वाले साहित्य को स्वच्छन्दतावादी साहित्य कहा जाता है। —

स्वच्छन्दतावाद एक साहित्यिक आन्दोलन है, जो प्रत्येक साहित्य में क्रांति की उठती हुई लहर के बाद उसका सृजन होता है। स्वच्छन्दतावाद अर्थात् रोमांटिसिज्म को क्लासिक विरोधी काव्य-प्रवृत्ति माना जाता है।

नये साहित्यशास्त्र ने कलात्मक दुनिया में शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद तथा यथार्थवाद को जन्म दिया। क्योंकि मानव मन में इन वृत्तियों का निवास है। 'इदम्' की स्थिति में स्वच्छन्दतावादी कला उभारती है। 'अहम्' की स्थिति में शास्त्रीयतावादी कला अपना विस्तार लेती है। 'अति अहम्' की मन स्थिति में यथार्थवादी कला का सृजन होता है। इसलिए कोई भी कवि या कलाकार मात्र स्वच्छन्दतावादी, शास्त्रीयतावादी या यथार्थवादी नहीं होता है, बल्कि उसकी वृत्तियों के क्रमानुसार ही काव्य-कला में ये प्रवृत्तियाँ उभारती चलती हैं। उसे ही हम कभी स्वच्छन्दतावाद, कभी शास्त्रीयतावाद तथा कभी यथार्थवाद के नाम से सम्बोधित करते हैं। 'इदम्' 'अहम्' 'अति अहम्' के कला का विस्तार

काल-क्रम में 'उभारती' रहती है। साहित्य को शास्त्रीयतावाद और स्वच्छन्दतावाद के रूप में विभाजित करते रहते हैं, किन्तु कोई भी कवि ऐसा नहीं हुआ, जिसे विशुद्ध रूप से स्वच्छन्दतावादी शास्त्रीयतावादी या यथार्थवादी कहा जा सके। वस्तुतः शैली में संतुलन, नियन्त्रण और नियमितता की मनोदशा में स्थिरता के कारण शास्त्रीयतावादी कह दिया जाता है, किन्तु ऐसे कवि के भीतर भी स्वच्छन्दतावादी भाव धारा प्रवाहित हो सकती है। इस प्रकार आवेग प्रधान भाव दशा तथा विस्फोट शैली का प्रेमी होने के कारण कवि स्वच्छन्दतावादी समझा जाता है, किन्तु एक छंद तक नियन्त्रण और नियमितता बरते बिना ऐसे कवि का काम नहीं चल सकता।

जब कभी एक वाद की प्रमुखाता से अनुसरण होने लगता है, तब उसके विरोध में दूसरी काव्य धाराएं आर्धभूत होती हैं और एक संतुलन बनाती हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से समस्त विश्व काव्य पर एक नजर डालने से यह भी ज्ञात होता है कि अनेक कवियों ने किसी एक वाद या सीमित सारणी का आधार नहीं लिया है। शास्त्रीयतावादी काव्य, स्वच्छन्दतावादी काव्य तथा यथार्थवादी रचनाएं एक दूसरे के साधनों और उपसर्गों को बराबर अपनाती आयी हैं और यही काव्य के स्वाभाविक विकास के लिए अव्यक्त भी है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शास्त्रीयतावादी तथा स्वच्छन्दतावादी एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं। काव्य-कला का इतिहास इस बात का साक्ष्य है कि शास्त्रीयतावादी युग में भी स्वच्छन्दतावादी रचनाएं होती हैं। शास्त्रीयतावादी कलाकार भी स्वच्छन्दतावादी काव्य रचना करता है और स्वच्छन्दतावादी कवि भी शास्त्रीयतावादी रचना कर सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि न कोई काल, वाद या व्यक्ति निरपेक्ष रूप से शास्त्रीय या स्वच्छन्द होता है। लेकिन मनुष्य की वृत्तियाँ ही कलासिद्ध या रोमांटिक होती हैं। वृत्तियों की प्रधानता के कारण उसकी रचनाएं कभी शास्त्रीयतावादी

और कभी स्वच्छन्दतावादी कहलाती रहती है। देश-विदेश के विद्वानों का स्थान है कि क्लासिक तथा रोमांटिक काव्य के नितांतभिन्न गुण नहीं हैं। एक ही कवि क्लासिक और रोमांटिक दोनों हो सकता है। सभी महान कलाकार क्लासिक तथा रोमांटिक दोनों होते हैं, केवल मध्यम एवं निकृष्ट श्रेणी के कवि कलाकार ही विशुद्ध स्वच्छन्दतावादी या विशुद्ध शास्त्रीयतावादी होते हैं। वस्तुतः सभी बड़े कलाकार अपने युग में रोमांटिक होते हैं।

रोमांटिक कविता केवल कविता का एक प्रकार ही नहीं है बल्कि कविता का एक तत्त्व भी है। इस व्यापक फलक पर रोमांटिक काव्य वह है जो संवेदनात्मक वस्तु को रूपनात्मक रूप में चित्रित करता है।

स्वदेश-विदेश में काव्य का इतिहास एक संदेश देता रहा है और वह यह कि कविता वादमुक्त होकर अपने परम उत्कर्ष को प्राप्त करती है। जब तक कवि की चेतना वादग्रस्त रही है, तब तक पूर्ण समाधि की स्थिति उसके लिए संभाव नहीं होती और पूर्ण समाहिति के बिना पूर्ण आत्माभि व्यक्त संभव नहीं। वाद ग्रस्त चेतना विवाद में उलझ जाती है और विवाद निश्चय ही सर्जन में बाधाक होता है। नया कवि अभी काव्य के आन्दोलन में इतना अधिक ग्रस्त है कि प्रायः समाहिति की स्थिति में नहीं पहुँचा पाता। जब कभी ऐसा होता है तभी उत्कृष्ट काव्य का सर्जन भी होता है, पर यह कविता 'सर्जनवाद' के रीरे में नहीं जाती लेकिन कवि और आलोचक उस पर रोमानी हो जाने का आशेष करने लगता है। मूलतः अच्छी काव्य सर्जन के समय कवि 'वाद' के रीरे में नहीं रह सकता। यदि वह 'वाद' के रीरे के बाहर नहीं निकल पाता तो उत्तम काव्य का सर्जन उसके लिये संभाव नहीं हो सकता जब भी श्रेष्ठ काव्य की रचना होती है, उस समय कवि या तैलक किसी विशेष 'वाद' के रीरे में नहीं होता, प्रत्युत उसके सामने साहित्य का विशाल क्षेत्र पड़ा हुआ रहता है, उसी में वह रहता है, चाहे उसे कोई शास्त्रीय, रोमांटिक या यथार्थवादी काव्या-सार होता है। कविता की शास्त्र रचना ने क्लासिक काव्य को जन्म

दिया। लेकिन कविता अधिक दिनों तक परम्पराओं एवं शास्त्रीय
 शैलीयों में बंधाकर नहीं रह पाती, वह आज के युग में समस्त उचित अनुचित
 बन्धानों को तोड़कर युग की आवश्यकताओं तथा मांगों से संबल पाकर
 स्वच्छन्द रूप में 'कवि के अन्तःकरण से फूट पड़ी', जिसमें 'अस्तित्व जीवन
 कल्पना'। महात्वाकांक्षा, वैयक्तिक सम्मान तथा युग जागरण का समोहन
 गान निहित है। इस प्रकार आधुनिक युग में जिस कविता द्वारा मानव
 समाज की विविध समस्याओं, मनुष्यों की दैनिक अनुभूतियाँ और भावी
 स्वर्णिम कल्पनाओं की अत्यन्त सख्त स्वच्छन्द अभिव्यक्ति होती है, उसे
 हम स्वच्छन्दतावादी कविता के नाम से अभिहित करते हैं।

'स्वच्छन्दतावाद' एक साहित्यिक आन्दोलन है, क्रान्ति है, जीवन
 के प्रति एक विशेष प्रकार की स्थान है। कवि इसमें सर्वोपरि अनुभूतियों की
 अभिव्यक्ति सक्रिय कल्पना एवं अनुभूति के आधार पर करता है। स्व-
 च्छन्दतावादी व्यक्तिवादी होता है। इसमें स्वतंत्रता की तात्परा अधिक
 रहती है, फलतः स्वच्छन्दतावादी कवि रुढ़िगत विचारधाराओं एवं साम्य
 शक्तियों के विरुद्ध विद्रोह करता है। वह क्रांतिकारी विचारों का समावेश
 करता हुआ राष्ट्रीय स्वातंत्रता, सामाजिक न्याय और व्यक्ति स्वातंत्र्य
 की भावनाओं से मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध स्थापित करता है। ऐसी स्थिति
 में कल्पना गतिशील एवं सूक्ष्म होती है जो कवि में भावावेश की स्थिति
 उत्पन्न करती है। कवि की अन्तः दृष्टि ही जब सृजनात्मक कल्पना के माध्यम
 से व्यक्त होती है तो स्वच्छन्दतावादी चेतना उभरती है।

स्वच्छन्दतावादी कवि अपनी वैयक्तिक आन्तरिक व काल्पनिक
 अनुभूति के माध्यम से संसार के उन अप्राप्य तथा गोप्य साधनों एवं तत्त्वों
 की अभिव्यक्ति करता है जिनके सुलभ होने की संभावना रहती है।
 यह सब है कि इस संसार में मानव की सभी इच्छाएँ पूरी नहीं होती किन्तु
 इच्छा मात्र को समाप्त कर देने से कोई भी इच्छा अपने आप पूर्ण भी नहीं
 हो सकती है। जिज्ञासा एवं कामना मानव जीवन के ऐसे तत्व हैं जो उसके
 जीवन को अधिक गतिशील रखाते हैं। यस्तुतः स्वच्छन्दतावाद एक भावना

है, इसके मूल में क्रांति एवं अभिन्नव सृजन की प्रधानता है। स्वच्छन्दतावादी कवि सत्ता, परंपरा एवं रुढ़ियों का विरोधी होता है, वही वह राज-नीतिक, सामाजिक, धार्मिक या साहित्यिक ही क्यों न हो? तत्कालीन स्वच्छन्दतावादी चेतना होती है।

वह प्र व्यक्ति जो प्रकृति को बड़ समझता है तथा मनुष्य को शत्रु समझता है, जो कल्पनाओं को केवल जोड़ने की एक शक्ति समझता है और जो मिथ्याक, बिम्ब, प्रतीक एवं प्रगीत जैसे उपादान का प्रयोग नहीं करता, उसे स्वच्छन्दतावादी नहीं कहा जा सकता। स्वच्छन्दतावादी कविता के मूल उपादान हैं: संयोगात्मक कल्पना शक्ति का प्रयोग, विरोधी चीजों का सामंजस्य, विभाज्य और विभर्ग्य, मानव और प्रकृति, चेतन और अचेतन, केन्द्र और परिधि का विलयन है। इस प्रकार स्वच्छन्दतावादी काव्य-धारा वैयक्तिक आन्तरिक अनुभूतियों के आधार पर विरोधाभास समाप्त करने की साहित्यिक साधना है।

मानव मस्तिष्क की आत्मिक चेतना की आन्तरिक अभिव्यक्ति स्वच्छन्दतावाद है। स्वच्छन्दतावादी कवि यगार्थ की दुनिया से हटकर स्वयं निर्मित संसार में वापस आ जाता है और यही है प्रकृति की और सँटने की शुरुआत होती है। स्वच्छन्दतावादी कवि अपनी अनुभूति को सच्ची अभिव्यक्ति करता है।

इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में 'तत्त्वा' जी की कविताओं में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों की जाँच की गई है।

रामेश्वर ताल छापड़ेतवात 'तत्त्वा' प्रेम, सौन्दर्य और जीवन के कवि है। जीवन के प्रति प्रगाढ़ आस्था और कल्पना, लोक की मधुरिम उद्गार उनके काव्य की विशेषताएँ हैं। प्रकृति के सुन्दर कवि, कला के तत्त्वा वैभव की तात्वी से मस्त यह कवि, हिन्दी काव्य संसार का अभिन्नव 'मत' है। उषा का मदिठोस्तास, रवि रश्मियों का विकास, साध्य

किरणों की गुलाबी गोधा, ज्योत्स्ना का रास, तारकों के भाव भी न गान,
 फूलों की मुस्मान, पंखियों का कलरव, अलियों का गुजन, प्रकृति का स्मन्दन, पुस्तक
 और 'रूप' जैसे कवि के प्राणों में भावों का भण्डार उनके काव्या के अध्ययन
 के बाद छल छल करता विस्तृत है ।

'तस्या' जी का जन्म मीरा की भूमि राज्यस्थान के गोलवाड़ा
 स्थान पर हुआ है । उनके गीतों में रूपना का अपार वैभाव है । उसमें
 जीवन के पलायन का स्वर नहीं है, बल्कि जीवन के प्रति आस्थाघान है।

'पाव लसै की भूमि छीन ली
 पर मन का विश्वास मत छीनी ।
 हवाओं में नीड़ उड़ा के,
 पर मेरा आकाश न छीनी ।

सौन्दर्य, प्रेम, सुभभा और सरसता से मधुरक्यों से सिंचित कविवर 'तस्या'
 की रचनाओं का काव्य-सरिता तब के मधुर पवन-प्रवाह पर बहता मादकता
 भरा सदेश होता है ।

यह वाद जिधर से आता है,

उस और कहीं पर अंगूरी रस का सागर लहराता है ।

कविवर 'तस्या' प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं । प्रसाद साहित्य से
 गहरे रूप से जुड़े रहने से इनको अपर प्रसाद की रोमांटिक कला का प्रभाव
 है । कविवर 'तस्या' के मन में प्रकृति के प्रति आसक्ति भाव है । प्रकृति प्रेमी
 होने से इनकी काव्य-कला में रोमांटिकता आई है । 'हिमावत' में 'तस्या'
 जी ने प्रेम और सौन्दर्य के वास्तव चित्र दिये हैं । इन कविताओं में क्लामय
 रूप चित्रण है, मिलन और विरह के चित्र हैं, स्वच्छन्दता से भरा मादक
 वातावरण है । 'मुड़ा-डवि' शीर्षक कविता में नारी सौन्दर्य का वर्णन
 स्वच्छन्दतावादी शैली में है । कविवर 'तस्या' जी प्रकृति के सुकुमार कवि हैं।

उनकी सेहानी तभी उठी है, जब अभिव्यञ्जना के लिए विवश हो गये उसने अपने में व्यक्तिगत राग-विराग, हृदय के समस्त आवेग-आवेश को स्वच्छन्द होकर उन्मुक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'हिमाचल' में कवि की विभिन्न अनुभूतियों से सम्बन्धित 74 रचनाएँ हैं, जिनमें गीतों की संख्या अधिक है। विषय की दृष्टि से रचनाओं में प्रेम-प्रकृति चित्रण की प्रधानता है। प्रकृति को कवि पर 'तस्पा' जी ने बड़ी तन्मयता से निहारा है। प्रकृति के साथ तन्मयता इतनी अधिक है कि वह अनायास ही प्रकृति के सुन्दार 'कवि' पल' की सहज स्मृति दिता देती है। वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यञ्जना के लिए गीत एक अच्छी काव्य शैली है। इसमें कवि की आन्तरिकता की अभिव्यञ्जना सर्जमयी व विधादमयी स्थितियों में होती रहती है। 'तस्पा' जी मानव-प्रेम, प्रकृति-सौन्दर्य के साध-साध मानव सौन्दर्य के कवि हैं।

श्री रानेश्वरलाल ढाण्डेलवाल 'तस्पा' जी प्रेम सौन्दर्य और विद्रोह के कवि हैं। प्रेम, और सौन्दर्य के द्रष्टा और सृष्टा होने के नाते इनकी कविताओं में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति का प्रचुर मात्रा में मिलती है। प्रकृति प्रेम की वे सारी प्रक्रियाएँ जो रीमाटिक काव्य-कला की होती हैं, इनकी कविताओं में देहायी जा सकती हैं। कविवर 'तस्पा' प्रकृति के सुन्दार कवि हैं। प्रकृति के प्रति सुकौमल कल्पनाएँ इनकी कविताओं में उभारती रहती हैं। इनकी प्रकृति स्वच्छन्दतावादी व छायावादी कवियों की तरह सचेतन है।

'तस्पा' जी के प्रणय गीतों में एक और प्रेम की उदात्त भाँति है तो दूसरी और गहन संशक्त अनुभूति। वे जीवन के मधुमय सुन्दर सुमन की तलाश में हैं और वे प्रेम की महिमा को भी स्वीकार करते हैं।

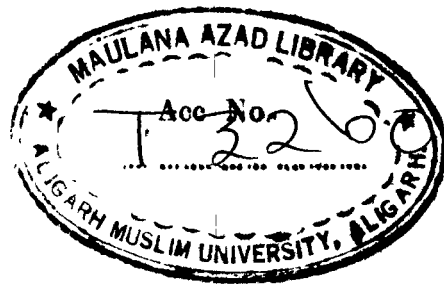
'हिसक जग में जाकर तुम
यह प्रेम दिगाओ, पछी ।
स्वर्गीय प्रेम का मंजुल-
संदेश गुनाओ पछी ।'

इनकी कविताओं में यंत्र-तंत्र लोक-रस एवं लोक जीवन की गहरी छतकती है। कल्पना और अनुभूति का सुन्दर सामंजस्य 'तस्या'जी की अधिकांश कविताओं में है। कुछ कविताएँ भावना प्रधान होने के कारण अत्यन्त मार्मिक बन गई हैं। स्वच्छन्दतावादी प्रेम स्मृति के चित्र 'तस्या'जी की कविताओं में अनेक स्थान पर चित्रित हैं। 'आधी और बादनी' में बादनी छान्ड में गीतों की प्रधानता है। ये गीत वैयक्तिकता व आन्तरिकता की अच्छी प्रस्तुति है। इसी क्रम में इनके वे गीत भी हैं जो 'शोकगीत' हैं। 'प्रथम किरण' में 'बहिन गुलाब की स्मृति' में भी पीड़ा है 'हम शिल्पी संग्रह' के 'मे' तथा नियति अपना ऐसी नगापन दिखाती है कि 'तस्या'जी शोक के सागर में डूब जाते हैं।

'हम शिल्पी संग्रह' के 'अमित-स्मृति कुंज' 'शोक-गीत' है। इसमें कवि ने अपने प्रिय पुत्र 'अमित' की मृत्यु वियोग में अपनी आन्तरिक वेदना को छानितकर रचा दिया है। पीड़ामयी वेदनामयी अभिव्यक्ति की चरम सीमा है। कवि विषादमयी स्थितियों में निमग्न हो जाता है। वस्तुतः 'अमित-स्मृति कुंज' 'निराला की 'सराज-स्मृति' की स्मृति को ताजा करती है। 'शोक-गीत' में आन्तरिक वेदना की गहनता होती है।

वस्तुतः कविवर 'तस्या'जी प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, जीवन की कुसुमता, विद्वपता, आदर्श, यथार्थ की भूमियों में स्वच्छन्द विचरण करते हैं। प्रकृति चित्रण में ऐसी इनकी प्रतिभा अपना रंग उभारती है। कव्य कला की साधना विशेषकर 'गीत' जो पुत्र-शोक की पीड़ा की मार्मिक अभिव्यञ्जना है। यह रचना छान्ड हिन्दी कविता के इतिहास में एक नया संदर्भ देती है। 'शोकगीतों' स्वच्छन्दतावादी कविता की विषादमयी आन्तरिक अभिव्यञ्जना होती है। वस्तुतः गीतों के द्वारा सर्वनात्मक कल्पना के आधार पर कवि ने अपने जीवन की आशामयी तथा विषादमयी आन्तरिक वैयक्तिक ब्रह्म मनः स्थितियों को ईमानदारी से चित्रित किया है जिनमें सच्ची अनुभूति को सफाई मिलती है। वस्तुतः यह सब

काव्यात्मक-कलात्मक अभिव्यञ्जना में स्वच्छन्द कला का विस्तार है ।
 कविवर 'तस्मा' जी की विरासत में स्वच्छन्दतावादी चेतना मिली थी
 और उसी की वे अपने जीवन में जाने-अनजाने हभातते रहे हैं। आधुनिक
 हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य, प्रकृति-चित्रण, आसू, छरना और
 'लहर' के कवि के साहित्य में अवगाहन से लेने वाला साहित्यकार
 स्वच्छन्दतावादी कला से अलग कैसे रह सकता है ?



रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' के काव्य का स्वच्छन्दतावादी मूल्यांकन

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध



निर्देशक :

डा० अजब सिंह

एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्.
रीडर

शोधकर्त्री :

कुसुम लता शर्मा



हिन्दी-विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़।

१९८६

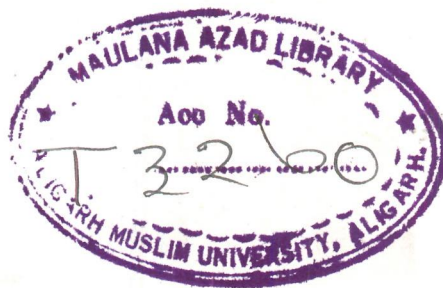
ਪ੍ਰੋ. ਡਾ. ਕੇ. 'ਸਤਨਾਮ' ਸਾਹਿਤਕ ਪੁਸਤਕ ਸ਼ਾਇਰੀ
ਸ਼ਾਇਰੀ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ

ਪ੍ਰੋ. ਡਾ. ਕੇ. 'ਸਤਨਾਮ' ਸਾਹਿਤਕ ਪੁਸਤਕ ਸ਼ਾਇਰੀ

CHECKED-2002



THESIS SECTION



18 MAY 19--



T3270

3239

CHECKED 1996-97

THESIS SECTION

प्रारम्भिक

परम पिता श्री द्वारिकाधारा जी महाराज की असीम कृपा से आज जो भी अनुभूति मुझे हो रही है, उस आनन्द का वर्णन मैं शब्दों में व्यक्त करने में अपने को असमर्थ पा रही हूँ ।

जिस प्रकार प्रकृति अपने स्वस्म को परिवर्तित कर मानव को प्रतिफल नूतन संदेश देती है, उसी चक्र की पुनरावृत्ति मानवी जीवन पर टिकी है । यह जीवन प्रतिफल हर्ष एवं विषाद से भरा है। ठीक ऐसी ही स्थिति है मैं समय के पापड़े जाती हुई अपनी मंजिल को प्राप्त करने में सफल हो सकी हूँ । इस मंजिल को पूर्ण करने में मुझे जिन साहित्यकारों, परिवारी-जनों एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त हुआ, उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करते समय प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूँ ।

छात्र जीवन के प्रारम्भ से ही मेरी अभिरुचि 'आधुनिक काव्य' में रही है । महाकवि जयशंकर प्रसाद, किछोही कवि 'निराला' तथा प्रकृति के सुकुमार कवि 'पत' के काव्य का आस्वादन करती रही हूँ । इसलिए आधुनिक कविता की स्वच्छन्द धारा के प्रति मेरे मन में सहज आकर्षण रहा है ।

वर्तमान सुखामय है जिसका श्रेय मेरे पति श्रद्धांशु श्री राधेश्याम शर्मा 'पत्रकार' को है, अगर इनका पुनीत भाव मेरे प्रति न होता, तो आज का वर्तमान मेरे लिए स्वप्नवत् होता । उन्हीं के अथक प्रयास स्वस्म 'उपहार' मुझे माँ सरस्वती के चरणों से प्राप्त हुआ । एक लौती बेटा प्रिय शशिसता 'पुनम' की सेवाएँ भी मेरी अध्ययनशीलता को प्रोत्साहित करती रही हैं तथा मेरे शोध-प्रबन्ध के निर्माण के योगदान में 'पुनम' की मातृमूर्ति की अपनी महिमा है ।

मेरे निर्देशक श्रद्धांशु साहू जी की उदारता एवं महानता के फलस्वरूप मेरा शोधकार्य गतिशील रहा, उनके प्रति मैं विशेष आभार

उपेक्षित करती हूँ क्योंकि मैं कभी रसधारी होने के कारण गुरु-कृपा की महिमा की जानती हूँ। यह मेरा सौभाग्य है कि हमें निर्देशक के रूप में डा० अबब सिंह जी 'स्वच्छन्दतावाद' के गंभीर अध्येता हैं। साधा ही कविवर 'तस्मा' जी के सम्पूर्ण साहित्य आलोचनात्मक एवं सर्वनात्मक तथ्या उनसे गारेतु जीवन से गरी परिचित रहे हैं। अन्वेषण के क्रम में शांति-प्रबन्ध के विषय में दोनों संदर्भों में मुझे इनसे काफी ज्ञान वर्धन एवं विषय को व्याख्यापित करने के सूत्र मिले। स्वच्छन्दतावाद की व्यापक पत्र पर देखाने की दृष्टि अर्धोय डा० अबब सिंह की आलोचनात्मक वैदुष्य का परिणाम है। तो आस के पूछने पर विलियम ब्लेक रोमांटिक कला-सिद्धान्त के संदर्भों में कहता है: मैं एक नियम का सर्वन करता, नहीं तो दूसरे के बनाये हुए मार्ग पर चलूँगा तो गुलाम हो जाऊँगा। मेरा कार्य तर्क और तुलना करना नहीं है, मेरा कार्य सुनना है। 'वस्तुतः विलियम ब्लेक के इस कथन में सम्पूर्ण स्वच्छन्दतावाद कला की चेतना संकुत हो जाती है। स्वच्छन्दतावाद कवि हर बिन्दु पर अस्ता होता है, उसकी कला में नवीनता होती है। इसलिए परंपरागत काव्य स्पर्ष से इसे विद्रोह भी करना पड़ता है। विद्रोह और जाति इसकी पहचान है। 'स्वच्छन्दतावाद' को व्यापक पत्र पर विश्लेषित करना तथ्या कविवर 'तस्मा' की कविताओं में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों अन्वेषित करना इस शांति-प्रबन्ध में मेरा कार्य रहा है।

विषय सामग्री के क्रम में डा० अबब सिंह तथ्या कविवर 'तस्मा' जी के बीच हुए पत्र-चारों तथ्या साक्षात्कारों से मुझे काफी बत मिला है। इसके लिए मैं अर्धोय डा० अबब सिंह की धन्य हूँ। साधा ही उनकी धर्म पत्नी श्री मती मोहिनी सिंह के सद्व्यवहारों को किन शब्दों में प्रशंसा करूँ, उनकी सरल, मृदु-मुत्तम, अपार स्नेह, वास्तव में एक शांति-पथिक के लिए प्रेरणा एवं स्फूर्ति के स्रोत हैं।

मेरे कार्य को शक्ति प्रदान करने में मेरे अग्रज श्री कैलाश नाथ शर्मा एवं मेरी स्नेहमयी माँ का भी अपूर्व योगदान है २ जब-जब मेरे समक्ष विधन बाधाएँ उपस्थित हुईं तब-तब उन्होंने मुझे धैर्य प्रदान कर कार्य को पूर्ण करने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देती रही ।

जब भी मैं अपना शोध-प्रबन्धों का कार्य करती तभी एक प्रेरणा शक्ति मुझे प्रेरित करती रही, वह थी मेरी प्यारी दीदी श्री मती सुभाषिनी चतुर्वेदी जो कि मेरी शुरु रही है । उन दिनों दिल्ली में प्रधानाचार्या के पद पर आसीन है । उनके आदर्शों पर चलकर ही मेरी सात्विक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हुई है ।

शोध के क्रम में विषय सामग्री को एकत्र करने में जिन महानुभावों से सहायता मिली है, उनमें डा० राम स्नेही तब शर्मा फिराबाबाद तथा डा० वीरेन्द्रकुमार गुप्त अलीगढ़ प्रमुखा हैं । हिन्दी विभागाध्यक्षा डा० प्रेम-
स्वरूप ~~गुप्त~~ गुप्त अलीगढ़ प्रमुखा हैं । हिन्दी विभागाध्यक्षा डा० नवीर मुहम्मद साहब के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ । उन्होंने मुझे इस कार्य को करने में 'समय-समय पर प्रोत्साहन देते रहे । विभाग के उन सभी गुरुजनों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके विचारों का मैंने अपने शोध-प्रबन्ध में उपयोग कर सकी हूँ । डा० तेजवीर सिंह घोखान का सहयोग भी स्मरणीय है श्री मोहन सिंह तथा टंकण कर्ता दोनों ही छात्रवाद के पात्र हैं ।

यह शोध-प्रबन्ध ७ अध्यायों में विभक्त है । प्रथम अध्याय में स्वच्छन्दतावाद का स्वल्प विश्लेषण, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद तथा आधुनिकता को विश्लेषित किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में स्वच्छन्दतावाद के सैद्धान्तिक विश्लेषण, भाव बौद्धि एवं शिल्पगत विशेषताओं के रूप में किया गया है ।

तृतीय अध्याय में नव स्वच्छन्दतावाद की चिन्तन रेखाएँ तथा यथार्थ का स्वच्छन्दतावादी संदर्भ को विश्लेषित किया गया है ।

चतुर्था अध्याय में श्री रामेश्वर ताल ढाण्डैतवाल 'तस्या' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विश्लेषण किया गया है। इनके जीवन परिचय को कुछ व्यस्थित रूप दिया गया है। एक कवि के रूप में 'तस्या' जी का मूल्यांकन विभिन्न विद्वानों की दृष्टि से किया गया है काव्य कृतियों का सामान्य परिचय दिया गया है।

पंचम अध्याय में कविवर 'तस्या' जी की कविताओं में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों को अवलोकित किया गया है।

अन्तिम अध्याय में शोध-निष्कर्ष उपसंहार के रूप में दिया गया है। कुल मिलाकर कविवर 'तस्या' जी के काव्य का स्वच्छन्दतावादी मूल्यांकन अपने में एक मौलिक विषय है, यही इसकी विशेषता है।

लगभग चार वर्षीय इस शोध यात्रा में मेरे लिये जो भी मुठ्ठल और दुःखद क्षण आये वे दुःखद क्षण मेरे लिये 'वस्रपात' हैं।

मेरी धारती दीदी श्री मती सुबोधिनी चतुर्वेदी के पति श्री मिथलेश चतुर्वेदी का 'निधन'। डॉ० 'तस्या' जी के एक सौता पुत्र प्रिय अमिताभ का 'देशावसान' बड़ी हृदय विदारक यह घटनाएँ हैं परन्तु पीछा के गायक कविवर 'तस्या' जी अपनी कविता की पुस्तक का यह नाम पहले ही दे चुके थे 'हम शिल्पी संरास के' जिसके प्रकाशन के समय पुत्र शोक में भी उन्होंने अपनी तूलिका से ममत्व के रंग भारे। मेरी सहयोगी बहिन श्रीमती मुन्नी शर्मा के पुष्प स्वस्म पुत्र का निधन मेरे लिए दुःख से प्रवित करने वाला ही घटना थी।

मुठ्ठल के क्षण भी मुझे प्रेरित कर रहे हैं। जबकि मेरे पति ने 'सार्ध कृष्णा कावेट स्कूल' की स्थापना की, मेरी पुत्री शशिलता 'धूम' ने इस स्कूल में अपनी सेवाएँ प्रदान की। फल प्रभू प्रदत्त है, दिनांक 21-2-1985 को वि० श्री ललितेश कुमार के साथ उसका पाठ्य ग्रहण संस्कार पूर्ण हुआ। वह दिन मेरे जीवन का शुभ दिन था लेकिन

पुत्री वियोग ने मुझे इकछोर दिया । संस्था की भी बड़ी क्षति हुई,
पति की नेत्र-विकृति के कारण वह बंद हो गई मेरे सपनों का महल
टूट गया । ❧❧❧❧❧

जबकि मेरा शांति-प्रबन्ध पूर्ण होने को था । दि० 22-10-1986
को मेरी प्रिय पुत्री ने एक पुत्र रत्न 'को जन्म दिया जिसका दर्शन कर
मैंने प्रभू की दया को सराहा मेरे मुँहा से सहसा निस्सार 'वसदेवकृष्ण'

कवियों की वाणी में शक्ति होती है साधारण व्यक्ति उस
शक्ति से परे है । संसार देखने में विस्तृत है परन्तु इसमें विवरण करने
पर विशेष अनुभूति होती है । बरबस ये पश्चिमी मुँहा से फूट पड़ती है :-

“यह संसार धारा पर छोटा,
छोटी है मन की क्षुब्धता ।
शून्य गगन में मैं उड़ जाऊँ ,
लेकर कवि की कुछ पश्चिमी ॥”

फिराजाबाद के मूर्धन्य साहित्यकार कविवर अशोक श्री उमेश
जोशी जी के आशीर्वाद के फल-सर्वस्व ही मेरा मार्ग प्रशस्त हुआ है ।
ये सब उन्हीं की प्रेरणा है ।

उन शब्दों के साधन ही मैंने अपनी सरस्वती स्वप्ना तुलिका को
विश्राम देती हूँ और नतमस्तक हो उन भूती विसरी विभूतियों को
नमन करती हूँ जिन्होंने मेरी यात्रा में शून्य बिछाये 'शापद' के भूत गये
कि यह भूत तो मेरी शक्ति है ।

प्रस्तुत शांति कार्य करने में मुझे ब्रिटिश लाइब्रेरी नहीं मिली,
अमेरिकन लाइब्रेरी नहीं मिली एवं माँताना आजाद लाइब्रेरी अतीव दूर है
विशेष सहायता मिली है । माँताना आजाद लाइब्रेरी के हिन्दी प्रशासक
के अधिकाारी श्री शिवदत्त शर्मा व श्रीमती विजय गोयल की सेवाएँ

मेरे लिए महत्वपूर्ण रही है। अन्त में शांति-प्रबन्ध के निर्माता मैं बिन
 तैलकों की पुस्तकों का आधार बनाया गया है। उन सभी विद्वान्
 तैलकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

कुसुम लता शर्मा
 श्रीमती कुसुम लता शर्मा

अनुक्रम

प्रथम अध्याय :- स्वच्छन्दतावाद का स्वल्प विश्लेषण

- (क) स्वच्छन्दतावाद का सामान्य परिचय
- (ख) स्वच्छन्दतावाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- (ग) शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद तथा आधुनिकता
- (घ) स्वच्छन्दतावाद के संदर्भ में विद्वानों के अभिमत
 - (1) पश्चात्य
 - (II) भारतीय

द्वितीय अध्याय: स्वच्छन्दतावाद का ऐदम्पान्तिक विश्लेषण

- (क) स्वच्छन्दतावाद का भाव बाँटा
- (ख) स्वच्छन्दतावाद की शिल्पगत विशेषताएँ

तृतीय अध्याय :- स्वच्छन्दतावाद का नवोन्मेषा नव स्वच्छन्दतावाद

- (क) नव स्वच्छन्दतावाद की चिंतन रेखाएँ
- (ख) यथार्थवाद का स्वच्छन्दतावादी संदर्भ

चतुर्थ अध्याय :- रामेश्वरतात ढाण्डैतवात 'तस्मा' व्यक्तित्व

एवं कृतित्व

- (क) व्यक्तित्व: जीवन परिचय एवं यात्राएँ
- (ख) कविधर 'तस्मा' विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में
- (ग) कव्यात्मक काव्य कृतियों का सामान्य परिचय

पंचम अध्याय :- रामेश्वर तत्त ढाण्डेतवात्त 'तस्मा' की कविताओं

में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ

(क) भाव बोध

(ग) शिल्पगत

षष्ठ अध्याय :- उपसंहार

संयानुक्रमणिका :

प्रथम-अध्याय

स्वच्छन्दतावाद का स्वस्य विश्लेषण

(क) स्वच्छन्दतावाद का सामान्य परिचय

(ख) स्वच्छन्दतावाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(ग) शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद तथा आधुनिकता

(घ) स्वच्छन्दतावाद के संदर्भ में विद्वानों के अभिमत

(क) पश्चात्य

(ख) भारतीय

-----1
प्रथम अध्याय :- स्वच्छन्दतावाद का स्वल्प विश्लेषण

(क) स्वच्छन्दतावाद का सामान्य परिचय :

‘अंग्रेजी के ‘रोमांटिसिज्म’ से मिलती जुलती प्रवृत्तियों का अभिव्यक्त करने के लिए हिन्दी में ‘स्वच्छन्दतावाद’ शब्द का प्रयोग किया गया। इसलिए स्वच्छन्दतावाद का स्वच्छन्दतावादी साहित्य से पुराना इतिहास नहीं ढाँखा जा सकता। हिन्दी में ‘स्वच्छन्दतावाद’ शब्द का प्रयोग ‘रोमांटिसिज्म’ के लिए ठीक है या नहीं, यह एक भिन्न प्रश्न है, लेकिन यह शब्द हिन्दी में ‘रोमांटिसिज्म’ के बदले में बालू सिक्के की तरह चल रहा है। ‘स्वच्छन्दतावाद 18 वीं शताब्दी के अन्त एवं उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में पश्चिम में प्रादुर्भूत प्रसिद्ध साहित्यिक, कलात्मक एवं दार्शनिक वाद और रोमांटिसिज्म नामक आन्दोलन का हिन्दी पर्याय है।¹ ‘हिन्दी में ‘स्वच्छन्दतावाद’ शब्द का प्रयोग ‘रोमांटिसिज्म’ के समानार्थी रूप में होता आया है और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने काव्य की नयी धारा का विवेचन करते हुए इसी अर्थ में इसका उल्लेख किया।²

स्वच्छन्दतावाद वस्तुतः एक जीवन दर्शन है जिसमें साहित्यिक कलात्मक और सामाजिक रुढ़िवाद, जड़ शास्त्रीयता और समष्टिगत

1. डा० अजय सिंह, स्वच्छन्दतावादः छायावाद, पृ० 1

2. डॉ० नगेन्द्र, भारतीय साहित्य कौश, पृ० 1401-

3. डा० प्रेमशंकर, हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य, पृ० 3.

वस्तुनिष्ठता के विस्थापन, व्यक्तित्व, और नवीनमैत्र के तत्त्व प्रमुखा हैं। इसका जन्म ऐतिहासिक दृष्टि से नव्य शास्त्रवाद के तुरन्त पश्चात् उसकी प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। अतः एवं उससे सम्बद्धा प्राचीन आदर्शा और पारम्परिक जीवन दृष्टि से भिन्न स्वच्छन्दता के युक्त आयामों में उल्लास पूर्ण भावुकता, रहस्योन्मुखा सौन्दर्य प्रियता, भावनात्मक आदर्शावाद अतिशय संवेदनशीलता, अवसाद पूर्ण मनः स्थिति प्रकृति प्रेम मोह, अतीत प्रेम, अन्तर्मुखा दृष्टि आदि का उन्मेष इसके लिये स्वाभाविक ही था। इसमें पुनित पर इतना और था कि उसकी कोई सुनिश्चित परिभाषा देना सम्भव नहीं है। फिर भी एकर सम्बन्धी के ये शब्द इसकी मूल प्रकृति का अच्छा विश्लेषण करते हैं- स्वच्छन्दतावाद बाह्य अनुभूति से पलायन है, जिससे आन्तरिक अनुभूतियों में रमा जा सके। ह्यूम्स के अनुसार स्वच्छन्द साहित्य जीवन का वह स्वप्नचित्र है जो समाज अथवा यथार्थ परिस्थितियों द्वारा दमित इच्छाओं का प्रथम एवं परि-तीक्ष्ण प्रदान करता है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। जीवन और जगत् के किसी भी क्षेत्र में सदैव एकस्यता, प्रकृति का पसन्द नहीं, बदलाव उसका सहज धर्म है। सत्य ज्ञात ही इसका अपवाद नहीं हो सकती। वस्तुतः शास्त्रीयता के नियमादि भी अधिक दिनों तक शाश्वत न रह सके। भावोत्तेजन के प्रवाह ने पूर्व निर्धारित प्रतिमानों की बड़ झूठाताओं को ध्वस्त कर दिया। इस तरह सदियों से चली आ रही परम्परागत काव्य चेतना को चुनौती देने वाली नवीन काव्य चेतना का निर्माण

करने वाली कविप्रतिभा का उन्मेष हुआ जो बाद में स्वच्छन्दतावाद की आधार पीठि बननी । इस संदर्भ में डा० "शशि भूषण सिंह" का अभिमत है।

"मनुष्य जीवन जीकर ही सन्तुष्ट नहीं है । वह उसकी अनुभूति को मार्मिक शब्दावली में व्यक्त करके कविता को जन्म देता है और उसे जीवन यात्रा की उपलब्धि स्वीकार करता है । जीवन धारा बहते बहते कालान्तर में अपनी गति छानने लगती है, इसका कारण कभी व्यक्ति का अहंकार होता है और कभी सामाजिक विधान की निष्प्राण यान्त्रिकता । लेकिन, उसकी अनुभूति की अभिव्यक्ति में वासीपन आ जाने पर उसे दूर कर जायगी ताने के लिये प्रयत्नशील लोक से हटकर चलने वाले कवि जन्म लेते हैं । वे लट्टियों के अवरोध को दूरकर अनुभूति और अभिव्यक्ति के मार्ग को सज्ज स्वच्छन्द बनाते हैं । ऐसे कवियों को स्वच्छन्द और उनकी कविता को स्वच्छन्दतावाद की संज्ञा दी जाती है ।¹

"स्वच्छन्दतावाद" शब्द का प्रयोग हिन्दी में अंग्रेजी के "रोमांटिसिज्म" से मिलती जुलती प्रवृत्तियों के लिये किया गया । किन्तु स्वच्छन्दतावाद शब्द रोमाण्टिक साहित्य की आत्मा की समग्र विशिष्टताओं को व्यक्त करने में कक्षा तक समर्थ है इस संदर्भ में विद्वानों में मतभेद है । प्रस्तुत परिप्रेक्ष्य में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी का स्थान है- "हूँ विद्वानों ने हिन्दी में इसे स्वच्छन्दतावाद" कहा है परन्तु यह शब्द उस सम्पूर्ण साहित्य की आत्मा को प्रकट

1. स०डा० रामेश्वर ताल छापडेतवाल, संभावना (शांति-संज्ञा विशेषांक)

करने में समर्थ नहीं है।¹ यद्यपि आचार्य द्विवेदी जी ने रौमाण्टिसिज्म तथा स्वच्छन्दतावाद की एक मानने में असहमति व्यक्त की है किन्तु अन्य विकल्प सुझाने में मौन रहकर उन्होंने भी स्वच्छन्दतावाद की ही स्वीकृति प्रदान की है। रौमाण्टिसिज्म से मिलती जुलती प्रवृत्तियों को व्यक्त करने के लिये निरन्तर व्यवहार में प्रयुक्त होने के कारण स्वच्छन्दतावाद में वही अर्थवत्ता आ गयी है जो कि अंग्रेजी के रौमाण्टिसिज्म में।² भाषा वैज्ञानिक तथ्य है कि किसी भी शब्द का अर्थ लोगों द्वारा व्यवहार करते रहने से स्थिर हो जाता है। हिन्दी आलोचना साहित्य में स्वच्छन्दतावाद की रौमाण्टिसिज्म के रूप में ही ग्रहण किया गया है। डा० रामधारी सिंह 'दिनकर'³ तथा डा० रामेश्वर तात ढाण्डेलवाल ने स्वच्छन्दवाद को रौमासवाद कहा है।⁴

स्वच्छन्दतावाद एक कलात्मक आन्दोलन है, श्रान्ति है, परम्परा तथा रुढ़ियों के प्रति विद्रोह है तथा जीवन के प्रति एक विशेष प्रकार की स्थान है। इस प्रकार स्वच्छन्दतावाद सर्वप्रथम एक विचार धारा है, जिसका प्रकाशन साहित्य और कला के विभिन्न क्षेत्रों में क्रमशः होता आया है। कवि इसमें सूक्ष्म सौन्दर्यानुभूतियों का चित्र कल्पना और अनुभूति के आधार पर करता है। उसमें कवि श्रान्तिकारी विचार धाराओं का समावेश करके स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय और

1. डा० देवराज उपाध्याय, रौमाण्टिक साहित्य शास्त्र की गूमिका
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ० 1.

2. डा० अमर सिंह, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 1.

3. डा० रामधारी सिंह दिनकर, शुद्ध कविता की छाँव (प्र. सं.) पृ० 29-30.

4. डा० रामेश्वर तात ढाण्डेलवाल, आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य (प्र० सं०) पृ० 318-319.

व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावनाओं का हृदय की मार्मिक एवं तीव्र अनुभूतियों के साथ गहराई से मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। इसमें रूपना गतिशील एवं सुक्ष्म होती है जो कवि में भावावेश की स्थिति ला देती है। इस तरह स्वच्छन्दतावाद आन्तरिक एवं बाह्य अनुभूतियों को अभिव्यक्ति है। इसमें जीवन और जगत के प्रति एक भावात्मक क्रान्तिकारी चेतना की सुन्दर प्रस्तुति मिलती है। यस्तुतः स्वच्छन्दतावाद केवल कविता की धारा ही नहीं है, प्रत्युत साहित्य संस्कृति और जीवन को देखाने की एक दृष्टि भी है।¹

सौन्दर्य में अद्भुत का मिश्रण स्वच्छन्दतावादी का भाव-बोध है। सौन्दर्याकांक्षा की जिज्ञासा ही कलाजगत में स्वच्छन्दतावादी चेतना को जन्म देती है। अतः इसमें विस्मय की भावना का प्राधान्य होता है। स्वच्छन्दतावादी दृष्टि जहाँ एक ओर बाह्य नियम जातों की निष्प्राण पान्त्रिकता, निर्वीकता और निरर्थकता से तभीर वितृष्णा और विद्रोह भावना रहती है और दूसरी ओर आत्म प्रेरणा को सर्वाधिक महत्व प्रदान करती है, किन्तु यह आत्म प्रेरणा निरंकुश न होकर स्वानुशासित एवं संयत होती है।² स्वच्छन्दतावादी चेतना सामन्ती परम्परा की विरोधी होने के कारण सामन्त युगीन संस्कारवादी काव्य के विरोध में अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम तलाश करती है। और यह अभिव्यक्ति निश्चय ही उन्मुक्त जन भावनाओं से प्रेरित होकर लोकगीतात्मक होती है स्व में आकार पाती है। इस तरह स्वच्छन्दतावादी कविता में काव्य

1. डा० जयसिंह, नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 1.

2. डा० राममूर्ति त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 30.

एकस्मिता प्राप्त कर लोक-संस्कृति से गहन रूप से सम्बद्ध हो जाते हैं। स्वच्छन्दता मानव-मन की स्वाभाविक वृत्ति है, जिसे युग घेतना के उत्पादन की कसौटी भी कट सकते हैं। आविर्भाव की दृष्टि से जो जन्मजात होती है। विश्व के प्रत्येक भाषा के साहित्य में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ का प्रादुर्भाव कभी न कभी अवश्य होता है क्योंकि वह मानव जीवन के एक विशेष दृष्टिकोण का परिचायक है। मानव जीवन से गहनता के साथ सम्बद्ध होने के कारण कला एवं साहित्य के पलक धिक्कित होने स्वच्छन्दतावाद के लिये अवश्यम्भावी है।

रोमांटिसिज्म का मूल शब्द रोमाण्टिक पुरानी फ्रेंच भाषा के रोमान्स से निष्पन्न है जिसका प्रयोग उस समय लैटिन से उठर देशी भाषाओं के साहित्यापन को उभारने के लिये किया जाता था। यद्यपि शास्त्रीय औपचारिकता की जड़बन्दी से मुक्त स्वच्छन्दता का भाव उसमें निश्चय ही विद्यमान था बाद में अभिव्यक्ति, कल्पना-शीलता, भावुकता और वायवीयता आदि के लिये फ्रेंच में रोमाण्टिक शब्द का व्यवहार होने लगा। अठारवीं शती के मध्य तक यूरोप की प्रायः प्रत्येक भाषा में कुछ परिवर्तन के साथ यह शब्द व्यापक रूप से प्रचलित हो चुका था। साहित्यिक विवेचना के क्षेत्र में अंग्रेज-वाक्य की विरोधी प्रवृत्ति के रूप में इसका सर्व प्रथम प्रयोग जर्मन साहित्यकार फ्रीडरिक श्लेगल ने सन् 1798 ई० में किया। ' ' फ्रान्स में इसके प्रचार का श्रेय मुख्य रूप से मैडमदिस्तालिन को है। एक साहित्यिक आन्दोलन के रूप में स्वच्छन्दतावाद का प्रमुखा केन्द्र इंग्लैण्ड बना।

इंग्लैण्ड में स्वच्छन्दतावाद की काव्यात्मक अभिव्यक्ति मुख्यतः वर्ड्सवर्थ, शैले, कीट्स, बायरन कालरिज और ब्लैक आदि के द्वारा हुई । वर्ड्सवर्थ ने काव्य भाषा विषयक सिद्धान्त तथा कालरिज ने कल्पना सिद्धान्त के प्रतिपादन द्वारा साहित्यिक मीमांसा के क्षेत्र में स्वच्छन्दवादी मूल्यों की प्रतिष्ठा की । बाल्टर पेटर मैडले ने स्वच्छन्दतावाद की कला दृष्टि प्रस्तुत की । फ्रांस में स्वच्छन्दतावाद का प्रवर्तन रूसो ने तथा प्रचार 'मैडम दिस्तासिन ने किया । बिन्टरस्यूगो ने काव्य तथा नाटकों तथा बाल्टर स्कार से प्रभावित कुछ ऐतिहासिक उपन्यासों द्वारा भी फ्रांसीसी स्वच्छन्दतावाद का सम्बर्धान हुआ । जर्मनी में स्वच्छन्दतावाद 'सर्वनात्मक साहित्य की अपेक्षा मुख्यतः दर्शन के क्षेत्र में अधिक मुहूर्त हुआ ।

स्वच्छन्दतावाद की धारा अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेजी काव्य में व्यक्त मानवता की अवहेलना प्रकृति की उपेक्षा , आहम्बर प्रियता, जीवन में सादगी के स्थान पर कृत्रिमता तथा रुढ़िगत काव्य प्रक्रिया के विरोध में उठ ढाड़ी हुई । हिन्दी में ठीक उसी तरह मध्यकालीन रुग्ण मनोवृत्तियाँ तथा दिव्येदी युगीन आदर्शात्मक हतिवृत्तात्मकता की अतिव्याप्ति की प्रतिक्रिया स्वल्प उद्भूत हुई ।

स्वच्छन्दतावाद के मूल में विद्रोह तथा नवीनता की भावना प्रधान रहती है । स्वच्छन्दतावादी कवि अपने व्यक्तिगत प्रभाव को स्वात्मक तथा मनोवैज्ञानिक व्याख्या का आधार बनाकर प्रस्तुत

करता है। स्वच्छन्दतावादी कवि या लेखक प्रकृति का प्रेम करता है। प्रकृति उसकी प्रिया तथा उसकी निजी अनुभूतियाँ की हवाहक होती है। परम्परा तथा रूढ़ियों के प्रति विद्रोह स्वच्छन्दतावादी कवि का सक्तम है होते ही वह राजनीतिक सामाजिक धार्मिक या साहित्यिक ही क्यों न हो।

रौमासवाद शब्द रौमाण्टिसिज्म के लिये सही तो मासूम पड़ता है किन्तु प्रचलन में उसे लोक प्रियता प्राप्त न हो सकी। स्वर्गीय माछान लाल चतुर्वेदी ने रौमाण्टिसिज्म के लिये रमणीयतावाद शब्द प्रयुक्त करने पर सह दिया। उचित है कि आलोच्य काव्य धारा में हृदय की रमाने की अद्भुत क्षमता तो है किन्तु इससे स्वातन्त्र्य की मूल भावना उपेक्षित रह जाती है। ठाण्डा अबल सिंह का इसी संदर्भ में कहना है -

किसी भी साहित्यिक भावधारा की संज्ञा प्रदान करने से पूर्व यह विचार कर लेना आवश्यक हो जाता है कि नामकरण द्वारा अभिप्रेत साहित्य की मूल प्रेरणा का प्रतिनिधित्व हो पा रहा कि नहीं। इसके अतिरिक्त अतीत साहित्य की भूमिका में उसका कहीं प्रतिमिन्न जाता है तो उससे भिन्न जुता नामकरण और अधिक सुसंगत हो जाता है। विचार करने पर सात होता है कि सर्वप्रथम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि-रीति कालीन रूढ़ियों को तोड़कर स्वच्छन्दतावाद का आभास पहले पल्ल पं० श्री धार पाठक ने ही दिया सब बातों का विचार करने पर पं० श्री धार पाठक ही स्वच्छन्दतावाद 'रौमाण्टिसिज्म' के प्रवर्तक ठहरते हैं। इस प्रकार हम देखाते हैं कि रौमाण्टिसिज्म के लिये शुक्ल जी ने सच्चाई तथा नैसर्गिक रूप से

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: हिन्दी साहित्य का इतिहास -

पृ० 575-576.

स्वच्छन्दतावाद शब्द प्रयुक्त किया है। रोमाण्टिसिज्म अर्थात् स्वच्छन्दतावाद से सामान्यतः एक ही प्रवृत्ति विशेष का द्योतन होता है। यद्यपि रोमाण्टिक प्रवृत्तियाँ हैं युक्त उस काव्य को बहुत से आलोचकों ने हिन्दी में छायावाद नाम दे दिया। वह नामकरण काफी साम्य की रक्षा और अब तक आलोचना की भाषा में प्रयुक्त भी होता रहा। किन्तु छायावाद नाम तो रोमानी कविता में व्यव्य में दिया गया था। इस सम्दर्भ में डॉ० प्रेमशंकर का कथन दृष्टव्य है - 'किन्हीं ने बैठे आते मजाक के तौर पर फिरा कस दिया, और यह नाम चल निकला लोगों ने तब की बात तक की जरूरत नहीं समझी..... छायावाद शब्द जिस रचना के लिये हस्तैमात किया जाता है; मेरा विचार है कि वह उसके व्यक्तित्व के साथ न्याय नहीं करता।'²

आगे स्वच्छन्दतावाद नामकरण की सार्थकता स्वीकार करते हुए डॉ० प्रेमशंकर का निष्कर्ष है कि मनुष्य की निजी आजादी व्यक्तित्व की छूट तथा सौन्दर्य की एक अपनी दुनिया आदि की जो ध्वनि आती है, और उसमें जो रोमानी प्रवृत्तियाँ की जो शिरकत हैं उसके लिये स्वच्छन्दतावाद ही अधिक मौजू नाम मासूम होता है।³ सच तो यह है कि स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति के अन्दर आने वाली सभी कविताओं को हम छायावाद के नाम से जानने लगे हैं।..... स्वच्छन्दता ही एक ऐसा शब्द है जिससे नवीनता का आभास होता है जिसमें प्राचीनता के निष्कर्ष का त्याग और नूतनतम आकांक्षाओं के प्रति जागरूकता का उद्घाटन निहित है।⁴ रोमाण्टिसिज्म का हिन्दी पर्याय स्वच्छन्दतावाद है स्वच्छन्दतावाद

1. सम्पादक डॉ० पी० रेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य कौश (भाग 2) पृ० 676

2. डॉ० प्रेमशंकर हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य; पृ० 9.

3. हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य, पृ० 9

4. डॉ० त्रिभुवन सिंह आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा; पृ० 18.

रोमाण्टिसिज्म की बात पर गुदा हुआ शब्द है। रोमाण्टिसिज्म पश्चात्य साहित्य में एक विशाल विचार धारा के रूप में व्याप्त है जो वहाँ की सामाजिक परिस्थितियों की पुनार पर उठ छाड़ा हुआ था।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि स्वच्छन्दतावाद शब्द ही रोमाण्टिसिज्म के पर्याय के रूप में सर्वथा व्यवहृत होने योग्य है। प्रसुद्ध पाठक के मन में एक छायावादोत्तर आलोचना में स्वच्छन्दतावाद कहने से वैसी ही अर्थ रेखा बनती है वैसी की रोमाण्टिसिज्म कहने से।

(6A) स्वच्छन्दतावाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

(1) पश्चात्य रोमाण्टिक आन्दोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

18 वीं शताब्दी के पश्चात्य साहित्य में नव-शास्त्रवाद ने अतीत के साहित्य को आदर्श मानकर साहित्य की सर्वना की। आदर्श के मोटे एवं नियमादि पाठन की बलवती आकांक्षा ने साहित्यकारों को 5 वीं शती के लैटिन एवं ग्रीक साहित्य का मुढापेकी बना दिया।

यह एक ऐसा समय था जब यूरोप की परिस्थितियाँ बड़ी तेजी से बदल रही थीं। फ्रांस में बाल्टेयर एवं रूसों जैसे विचारकों की अवतारणा हुई, जिन्होंने अपने मौलिक चिन्तन और विचारों से अपने युग और परिवेश को प्रभावित किया। बाल्टेयर ने अंगाय, अत्याचार, शोषण एवं निसर्कुशता का ज़ुतकर विरोध किया वहीं सत्साहित्य का निर्माण कर

युग बोधा की चिन्तना में क्रान्ति की चिनगारी सुलगा दी। स्त्रो रोमाण्टिक धारा का प्रथम वाक्क बनकर उपस्थित हुआ। उसके क्रान्तिदर्शी मौलिक विचारों-स्वतन्त्रता, समानता तथा बन्धुत्व ने समाज की आँखें खोल दीं। स्त्रो ने क्रान्ति का पाठ ही नहीं पढ़ाया; शायद उसे इस प्रकार की क्रान्ति की आशा भी नहीं थी। किन्तु उसकी पुस्तकों और विचारों ने मनुष्यों के मस्तिष्कों में इस प्रकार के बीज बोध कर दिये जिनसे क्रान्ति अंकुरित हो उठी।

अठारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध अपनी अमर्यादित घटनाओं यथा-अमेरिकी स्वातन्त्र्य संग्राम, फ्रांस की राज्यक्रान्ति एवं औद्योगिक क्रान्ति आदि के लिये इतिहास प्रसिद्ध है। इन क्रान्तियों की सफलता से साम्राज्यवादिता के पैर तड़काड़ाने लगे साम्प्रदायी विचारधारा के प्रभाव स्वल्प सामन्त शाही, बागीरदारी तथा शासकीय परम्परा को मुह की जानी पड़ी। ये क्रान्तियाँ निश्चय ही रोमाण्टिक आन्दोलन के क्रान्तिकारी एवं विद्रोही रूप के लिये अवश्य ही उत्तरदायी रही।

अमेरिकी स्वातन्त्र्य संग्राम

अंग्रेजों की शोषण नीति एवं दमनचक्र अमेरिकी उपनिवेश में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी। सन् 1765 ई० में अंग्रेजी पार्लियामेंट ने हेनिक कयप ऐक्ट स्टाम्प ऐक्ट नामक कर 'अमेरिका पर लगाया'। इससे अमेरिकी जनता में असन्तोष व्याप्त हो गया। इस असन्तोष के प्रतिक्रिया स्वल्प अमेरिकी जनता ने भारत से बोस्टन पहुँचे हुए चाय के बोरों को समुद्र में फेंक दिया। यह घटना इतिहास में बोस्टन टी पार्टी (1770) के नाम से प्रसिद्ध है।

I. J. H. Hayes: A Political and Cultural History of Modern Europe, P. 482.

इस घटना के उपरान्त अंग्रेजों की दमन नीति क्रूरता में बढ़त गयी।

अंग्रेजों का दमन चरु जिसना अधिक प्रभावी होता गया जन जागृति की ज्वाला उतनी ही अधिक वेग से प्रज्वलित होती गयी। अमेरिकी जनता के प्रतिनिधि के रूप में वाशिंगटन ने (1774) में एंग्लो अमेरिकी के जनवर्ग के मध्य एन्थ की स्थापना के लिये औपनिवेशिक सरकार की मांग की, किन्तु सत्तान्वा अंग्रेजी साम्राज्यवादिता ने जनता की मांग को अनसुनी कर दिया। परन्तु अमेरिकी जनता के समक्ष संघर्ष करने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं रह गया। इस तरह आगामी कार्यक्रम के निर्धारण हेतु 4 जून 1776 को अमेरिकी जनता ने महाद्वीपीय समिति की बैठक में स्वतन्त्रता की घोषणा-पत्र प्रस्तुत कर दिया जिसमें कहा गया था कि- "अत्याचारी शासन को उलट देना और सर्वप्रिय शासन की यदि आवश्यकता हो तो अस्त्रों-शस्त्रों के बल से भी स्थापना करना व्यापक है। दूसरे शब्दों में क्रान्ति उपस्थापित करना जनता का अधिकार है।"

स्वतन्त्रता के इस घोषणा पत्र में अंग्रेजों द्वारा लगाये गये करों का विरोध भी किया ही; साथ ही सैनिक क्रान्ति के लिये वाशिंगटन की अध्यक्षता में एक भुक्तिवाहिनी (सेना) का भी गठन किया। इस कार्य में उन्हें फ्रान्स और स्पेन से भी सहायता मिली। मध्य युद्ध होकर रहा और युद्ध का परिणाम अमेरिकी जनता के पक्ष में रहा। शासित जनता अपना उद्देश्य प्राप्त करने में सफल रही। अमेरिका का स्वतन्त्र और संगठित रूप संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के रूप में उभार कर आया और जार्ज वाशिंगटन उसका प्रथम अध्यक्ष बना।

1. J.H. Hayes: A political and cultural History of Modern Europe, P.482.

फ्रांस की राज्य-क्रान्ति-

फ्रांस की क्रान्ति को पश्चात्प रोमाण्टिसिज्म का प्रस्थान बिन्दु माना जाता है। यद्यपि इससे पूर्व में 1776 की अमेरिकी क्रान्ति ही कार्यशील थी किन्तु व्यापकत्व की दृष्टि से फ्रांसीसी राज्य-क्रान्ति ने समस्त यूरोप को अपने आगोश में ले लिया।

फ्रांसीसी क्रान्ति का प्रस्ताव चरण सन् 1789 तक माना जा सकता है। जब मध्यम वर्ग ने स्थिति में सुधार लाने की चेष्टा की। राईस स्पेदरे की मृत्यु के साध सन् (1795) में शासन की बागडोर हायरेंटरी के हाथ में आ गयी थी। लुई सोलहवां नाम मात्र का राजा रह गया था। इसी समय नेपोलियन बोनापार्ट उभार कर आया जो आस्ट्रिया पर गौरव पूर्ण विजय के साध सेना में अपना उच्च स्थान बना सका। सन् 1799 में हायरेंटरी के अन्त के साध फ्रांस की जनता का विश्वास भाजन नेपोलियन तत्काल गठित राष्ट्रीय समिति का अध्यक्ष बना। कालान्तर में राष्ट्रीय समिति तथा राजा (लुई सोलहवां) के सम्बन्धि में कटुता आ गयी। जनता का विश्वास राजा से पतने ही उठ गया था क्योंकि वह आस्ट्रिया का पक्षधर होकर फ्रांस के प्रति पड़्यन्त करने लगा था। बेस्टील का बन्दीगृह क्रान्तिकारियों द्वारा पतने ही मुक्त कर दिया था। क्रोधित जनता ने राजा तथा राज परिवार के जनो को बन्दी बना लिया था 21 सितम्बर सन् 1792 में 'नेशनल कन्वेंशन' की बैठक हुई, जिसमें फ्रांस में जनतन्त्र की घोषणा हुई। लुई सोलहवां पर अभियोग चला, तथा राजतन्त्र से सम्बन्धित नेताओं तथा राजपरिवार के लोगों की मौत के पाट उतार दिया गया। क्रमशः अपनी शक्ति को बढाता हुआ नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस का सम्राट बन गया। 18 जून 1815 में वाटरलू के मैदान में ह्यूक और वेलिंगटन द्वारा नेपोलियन की परास्त कर बन्दी बनाया गया।

इस क्रान्ति से सम्पूर्ण यूरोप में जनतन्त्रवादी भावनाओं का व्यापक प्रचार हुआ। स्मॉथ की प्रसिद्ध पुस्तक 'दी सीशत काउन्ट्रीज का शुभारम्भ ही इस वाक्य से हुआ कि, "मनुष्य स्वतन्त्र जन्मा है किन्तु हर जगह व जंजीरों में बन्धा है" वाक्य ने फ्रांस में क्रान्ति का बीज बो दिया। उसकी, स्वतन्त्रता, समानता तथा अन्धत्व का नारा फ्रांस की राज्यक्रान्ति का आप्त वाक्य बना। निस्सन्देह इस क्रान्ति ने यूरोप में सामन्तशाही एवं कुलीनता को हल्लावर दिया। देश की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई नागरिकों को वोट देने का अधिकार मिला। शिक्षा का प्रचार वर्ष के छात्रों में न रहकर राज्य के छात्रों में आ गया। समस्त यूरोप के जन मानस में राष्ट्रीयता की भावनाये उद्बलित हो उठी।

"रोमाण्टिसिज्म का प्रारम्भ 'स्वतन्त्रता', 'समानता' तथा 'आतृत्व' की भावना के प्रति एक प्रजातान्त्रिक झुकाव या लगाव के साथ हुआ"; जो वस्तुतः इन क्रान्तियों का ही परिणाम था। मानव विकास की कहानी का दूसरा नाम क्रान्ति है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के विकास में क्रान्ति का प्रमुख स्थान है और मनुष्य के सर्वांगीण विकास की आधार शिखा है।

आधुनिक क्रान्ति

अमेरिकी स्वातन्त्र्य संग्राम तथा फ्रांस की राज्य क्रान्ति की जनतन्त्रवादी भावनाओं ने युग एवं परिवेश पर अपना अक्षुण्ण प्रभाव छोड़ा। किन्तु मानव के चिन्तन को इन राजनीतिक क्रान्तियों

हे जी अधिक प्रभावित करने का श्रेय तात्कालिक औद्योगिक क्रान्ति को है, जिसने समस्त विश्व के आर्थिक ढाँचे में ही आमूल वृत्त रददोषदत्त कर डाली ।

वैज्ञानिक आविष्कारों तथा मशीनीकरण के कारण कार्य एवं उत्पन्न में शीघ्रता आयी । कुटीर उद्योग फैन्ट्रीयों में बदल गई । गाँव की शक्ति कोयले की जुदाई तथा रेलगाड़ी लाँचने का कार्य करने लगी । चान्दों का काम मिनटों में होने लगा । आवागमन की सुविधा एवं संचार व्यवस्था ने समस्त विश्व को सीमित कर दिया , किन्तु इसके साथ ही मनुष्यों का काम मशीनों द्वारा सँभाल लेने के कारण बेकारी की समस्या पैदा हो गयी । गृह-उद्योगों को नष्ट हो जाने के कारण शिल्पियों को उदर पोषण हेतु पूँजीपतियों की फैन्ट्रीयों पर आश्रित रहना पड़ा । जीवन में स्वावलम्बन एवं ईमानदारी नहीं रही । मशीनीकरण के प्रयोगाधिन्य से पूँजीपतियों की नीति भी विकृत हो गयी और अधिक पैसा कमाने की ताक में वे मजदूरों और शिल्पियों के पारिश्रमिक में से कटौती करने लगे । चूँकि फैन्ट्रीयों नगरों में ही स्थापित हुई थी और जीविका की तलाश में भटकते ग्रामीण फैन्ट्रीयों में ही आश्रय प्राप्त करने लगे, पतनस्वल्प नगर सन्तान से सन्तानता तथा गाँव और अधिक विरत होते गये ।

यद्यपि समस्त यूरोप औद्योगिक क्रान्ति से प्रभावित था, किन्तु उसका मुख्य केन्द्र बिन्दु इंग्लैण्ड ही रहा । फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम, डेनमार्क, इंग्लैण्ड स्वीडन भी उत्तरात्तर, औद्योगिक क्रान्ति की ओर बढ़े । साबुन, तेल, कपड़ा, शराब, चाड़ी, आदि का निर्माण अत्यधिक बढ़े पैमाने पर होने लगे । पश्चात्य रोमाण्टिक आन्दोलन-

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पश्चात्य साहित्य जगत में एक ऐसा आन्दोलन उभरा जो गाँव और कला की दृष्टि से नवीनता लिये हुए था । पुनर्स्थापनवादी धारा से अभिसिक्त यह काव्यान्दोलन

सांस्कृतिक क्रान्तियों देश-काल-गत वैशिष्ट्य एवं असाधारण व्यक्तित्वों से प्रभावित होकर रोमांटिक साहित्यान्दोलन के रूप में समस्त यूरोपीय साहित्य में विशाल बटवारा की भाँति फैलने लगा ।

जर्मनी में स्वच्छन्दतावादी विद्रोह लगभग 1790 ई० से 1830 ई० तक हुआ । वीत्नाउ के चाफ्लय भाव और गाट शोड द्वारा दिये गये नियम तथा अनुकरण विषयक उपदेशों की प्रतिक्रिया स्वयं वही सभ्यता के स्थान पर प्रकृति अनुकरण के स्थान पर मौलिकता, धर्म के बड़े व्यंग्य प्रकाश के स्थान पर भावना तथा उपदेशों के स्थान पर प्रगीतात्मकता आ गयी । नास्तिकता की सीमा प्रवेश करते ही फ्रांसीसी संदेहवाद पुष्ट होने लगा । विद्रोह और आवेग की भाव धारा ने समस्त की संभावनाओं को भी विनष्ट कर दिया । जर्मनी के साथ इंग्लैण्ड स्विटजरलैण्ड इटली एवं स्पेन के क्रांतिारतों फ्रांस की राज्य क्रान्ति से प्रेरित होकर आभिजात्यवाद के विस्थापनार्थ ढेर दिया । परिणामतः इंग्लैण्ड में एक पूर्व स्वच्छन्दतावादी छिमा उभार कर आया । फुटन के प्रतिहार स्वयं जर्मनी गेटे, शिल्लर तथा काण्ट फ्रांस के लयरटाइन तथा विक्टर ह्यूगो एवं ह मस्से रूस के पुश्किन अलेक्जेंडर प्रधम तथा गोगल स्वच्छन्दता के वाहक बनकर अवतीर्ण हुए । ये सभी कवि फ्रांस की राज्य क्रान्ति तथा रूसी एवं बाल्टेयर की विचार धाराओं से प्रभावित थे । उनका मन मानस, स्वतन्त्रता, समानता भावुत्व एवं विद्रोह भावना से खींच प्रीत था । प्रकृति का उन्नत प्रागण जिनकी कला का प्रतिपाद्य बना ।

अंग्रेजी साहित्य में रोमानी भाव धारा सर्वप्रथम चासर के काव्य में परलक्षित हुई । उनकी 'नाइट्सटेल्' में वीरोंक्ति उत्साह की प्रधानता एवं कल्पना बहुलता है । 'शेक्सपियर' तथा 'मिलन'

(1608-1674) की ऐसे गौरव पूर्ण व्यक्तित्व है जो रोमाण्टिक उद्भावनाओं के आदि प्राग्गता तथा प्रेरणा स्रोत साबित हुए ।

इसके पश्चात् अंग्रेजी साहित्य कोश अन्धाकार में घिरी हुई गया । नव-शास्त्रवाद ने 1750 ई० तक आते आते पाप, हाइडेन जैसे साहित्यकारों ने काव्य की पुष्टि व्यवस्था के समान यांत्रिक एवं लौकिक कला का स्वरूप प्रतिष्ठित कर दिया । कवि मौलिक उद्भावनाओं की तिलाबलि देकर ग्रीक एवं लैटिन साहित्य की नकल करने लगे । भाव प्रवणता, प्रेमानुभूति तथा रूपना वैभाव की अभिव्यक्ति को हेय समझ जाने लगा । दोहा अभिव्यक्ति का विशिष्ट माध्यम तथा उचितवैचित्य कवि प्रतिभा का मानदण्ड स्वीकार किया गया । 17वीं शती का उत्तरार्ध अंग्रेजी रोमाण्टिक आन्दोलन का अवसर का स साबित हुआ । रोमाण्टिक आन्दोलन के पूर्व पुरुष जेम्स टामसन ने प्रकृति को अपना काव्य क्षेत्र बनाया ।

‘दी कैंसिडल आर्ब इन्हालैन्स’ उनकी प्रमुख रोमाण्टिक काव्य कृति है । विलियम कात्सिस, (1721-1759) टामस (1736-1772) पूर्व रोमाण्टिक आन्दोलन के प्रमुख हस्ताक्षर हैं । ओलिवर गोल्डस्मिथ (1728-1774) की ‘दी ट्रेक्सर’ ‘दी डेबर्टेड ब्लेब’ और ‘दी हरमिट’ अमर कृतियाँ हैं रोमाण्टिक आन्दोलन के असाधारण उद्भाव की पूर्ति की । विलियम काउचर (1731-1800) राबर्ट बर्न्स (1759-1766) विलियम ब्लैक (1757-1827) आदि कलाकार रोमाण्टिक उत्थान के प्रथम चरण अन्य प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिनकी कला में, प्रेमानुभूति, संवेदनशीलता भावुकता रूपना प्रवणता राष्ट्रीय चेतना एवं रहस्य बोधा आदि प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन होता है ।²

1. An Introduction to the Poetry of Romantic Revival, P.8

2. James Reaves; A Short History of English Poetry, PP.124-137

रोमाण्टिक आन्दोलन के उत्थान का द्वितीय चरण 'अंग्रेजी साहित्यालोश' का स्वर्णकाल था। विलियम बड्स वर्ध (1770-1850) कार्लरिज (1772-1834) बायरन (1788-1824) शेली (1792-1822) कीट्स आदि कवि प्रतिमाएँ उद्भूत हुईं। बड्स वर्ध ने प्रकृति को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान देकर मानव और प्रकृति के अभिन्न सम्बन्ध को स्वीकार किया। वह एक ऐसा महान रोमाण्टिक कलाकार है जिसने शैक्सपियर से स्वतन्त्रता, मिल्टन से कलात्मक सौन्दर्य, स्पेन्सर से कल्पना वैभाव एवं वासर तथा प्राचीन लोक गीतों से लोक तत्व ग्रहण कर उन्हें ऐसे अनुठे ढंग से प्रस्तुत किया, जो पाठक की मनीभूमि को संवेद्य बनाकर उसे कल्पना लोक यादगुप्त प्रत्यक्षा कराती है¹।

कार्लरिज ने कविता को जीवन की यथार्थ विगीषिकाओं से संतुष्ट मानव के समझा आनन्दविधायिनी शक्ति के रूप में स्वीकार किया²। कल्पना के साथ विचारतत्त्व की भी कविता का आवश्यक अंग मानने वाले कवि कार्लरिज की अनर कृतियाँ 'ऐन्सीयेन्ट मेरीनर', कुक्लां तथा क्रिस्टाबेल काफी प्रशंसनीय रही। प्रेम को सर्वस्व का द्योतक मानने वाले कार्लरिज ने अपने मित्र बड्स वर्ध के साथ लिрикल क्लैड्स का प्रकाशन (1798) किया जो रोमाण्टिक आन्दोलन के पाँचपा-पत्र के रूप में जाना गया।

लार्ड बायरन वह भावना से आप्लावित था। व्यक्तित्वविदिता उसमें कूट कूट कर भारी थी। प्रकृति-प्रेम एवं भाव-प्रवणता सशक्त रूप बायरन की कविताओं की विशेषता है।

सौन्दर्य के अप्रतिम यितरे के रूप में कीट्स तथा शेली स्वच्छन्दता के प्रति आग्रह शीत थे। इन कवियों में विद्विह भाव, कल्पना शक्ति, का प्राधान्य है।

1. Graham Hough : The Romantic Poets (1957) P.52.

2. Dr. H.B. Sharma: An Introduction to English Romantic Poetry, P.28.

(11) हिन्दी स्वच्छन्दतावाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-

प्रत्येक साहित्यिक रूप अपने युग एवं परिवेश से अनु-
प्राणित तथा पूर्व परम्परा की विकसित कड़ी होता है। उसके जन्म
के मूल तत्कालीन युग-बोध की पूर्ण धीठिका अवश्य होती है। हिन्दी
का स्वच्छन्दतावादी साहित्य भी इसका अपवाद नहीं।

हिन्दी 'स्वच्छन्दतावाद' का जन्म कुछ विशेष राज-
नीतिक (उत्थात पुष्पत) सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ
में हुआ था जिनका अध्ययन देशकाल के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत है।

राजनीतिक पृष्ठभूमि

भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ ही एक
नवीन युग का सूत्रपात हुआ, जिससे अंग्रेजी सभ्यता, संस्कृति विचारधारा
एवं अंग्रेजी शिक्षा को भी प्रोत्साहन मिला। परिणाम यह हुआ कि
विजयी शक्ति विजित देश भारत की सभ्यता, संस्कृति एवं विधान
उपेक्षित होते चले गये। अधिकांश से वंचित अशक्त तथा साधन
हीन भारतीय अपमानित होकर रहे गये। इसके साथ ही भारतीय
एवं अंग्रेजी सभ्यता एवं सांस्कृति के सम्मेलन से भारत की संयुक्त चेतना
पश्चात्य सूक्ष्म-बुद्ध एवं बुद्धि विवेक दंकृत हो उठी। जाने अनजाने अंग्रेजी
ने भारतीयों को विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तियों की जानकारी दी
जिसने भारतीय जन मेधा को क्रान्तिदर्शी बना दिया। कहना न
होगा कि पश्चात्य ज्ञान विज्ञान औद्योगीकरण, प्रजातान्त्रिक भाव
एवं विभिन्न क्रान्तियों के अभिज्ञान हमारी चेतना को क्रान्ति की
तहर से जोड़ दिया।

1857 का गदर इस नव चेतना एवं जागृति का प्रथम प्रयास
था। अंतक और दमन वक्र के बावजूद भी निश्चय के दृढ़ भारतीयों

ने अन्यायी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया। यद्यपि अंग्रेजों ने अपनी दानवीय क्रूरता के बल पर इस संघर्ष का दमन तो कर दिया किन्तु स्वातन्त्रता की जो धिनगारी सुलभाचुकी थी वह बाह्य रूप से लुप्त हो जाने पर भी भीतर ही भीतर संशक्त शक्ति की चैष्टा में तल्लीन थी।

अंग्रेजों के हितैषी एम०ओ० ह्यूम ने वस्तु स्थिति के गाम्भीर्य की समझा। जनता को अपने अनुकूल रहाने के उद्देश्य से प्रमुखा भारतीय जन नेताओं उपस्थिति बम्बई में सन् 1885 ई० में कांग्रेस की स्थापना की, किन्तु अंग्रेजों की यह बात प्रकट हो गयी, और अधिकार प्राप्ति के पावन पथ पर नवोदित कांग्रेस के चरण उत्तरात्तर बढ़ते गये।

भारत वासियों पर निरन्तर बढ़ते जा रहे अत्याचारों एवं भग भाग की माँबणा ने राष्ट्रीय संघर्ष में धृताहुति का कार्य किया और क्रूरता की प्रतिक्रिया स्वयं कांग्रेस के कुछ गरम तेवर के सदस्यों में हिंसा वृत्ति पनपने लगी। 1907 ई० में कांग्रेस के विभाजन में इस तरह के सदस्यों को गरम दल के नाम से जाना गया। 1906 के कांग्रेस अधिवेशन में स्वराज्य की मांग प्रस्तुत कर दी थी। महात्मा गांधी ने इसका नेतृत्व किया।

अंग्रेज सरकार स्वातन्त्र्य आन्दोलन को जितना दबाने का प्रयत्न करती स्वाधीनता की ज्योता उतनी ही अधिक वेग से प्रज्वलित होने लगती। आजादी के दीवाने नित्य प्रति प्लासी के तहत पर झुलते जाते थे। अशाफाउल्ला, राम प्रसाद बिस्मिल, सरदार भागत सिंह राजगुरु सुभाषचandra तथै ताता ताजपुराय के पूत बलिदानों में भारतीय चिन्तन के तारों को सज्जोर दिया। पूर्व के आन्दोलनों से अंग्रेजों का मनोबल पहले ही टूट चुका था। 26 जनवरी 1930 में बवाहरलास जी के नेतृत्व में पूर्ण स्वराज्य की मांग पुनः प्रस्तुत कर दी। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' (1942) के आन्दोलन ने साम्राज्यवादिता की रही सही आशाओं पर भी

(1942) के आन्दोलन ने साम्राज्यवादिता की रही सही आशाओं पर भी पानी फेर दिया । 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ ।

भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति की यह संघर्षपूर्ण पृष्ठभूमि निश्चय ही स्वच्छन्द कवियों की वाणी को सुधारित करने में समर्पण रही । कुछ कवि तो इस स्वाधीनता आन्दोलन से इतने अधिक प्रभावित रहे कि साहित्य सृजना करते हुए वे स्वयं प्रत्यक्षात् स्व स्वाधीनता संग्राम के घुस घुस में कुछ पड़े ।

आर्थिक परिदृश्य-

व्यापार के उद्देश्य से आर्चर्ड हर्बर्ट इंडिया कम्पनी ने भारत में घेर जमाते ही ऐसी कुवैष्टाएँ प्रारम्भ कर दी जिससे भारतीय व्यापार एवं कृषि चौपट होकर रह गयी । साम्राज्यशाही की दुहरी घुमी नीति के प्रभाव स्वल्प भारत में तैयार मात अपने ही देश में न बिक पाते थे । स्थिति में आ गया । पूँजी का अस्मान वितरण जहाँ जमींदारों तथा राय बहादुरों एवं कारिन्दों को और अधिक पूँजीपति बनाता जा रहा था वहीं सामान्य जनता की स्थिति बद से बदतर हो गयी । कुटीर उद्योग धान्धी चौपट हो गये । भारत सस्ते मूल्य पर कच्चेमात का मात्र निर्यातक बनकर रह गया । भारतीय शिल्पी जुताई आदि मशीनों की प्रतियोगिता में उतर नहीं पाये । इसके अतिरिक्त प्राकृतिक प्रकोपों यथा दुर्भिक्ष आदि ने भी आर्थिक ढाँचे बरमरा कर रखा दिया । लगातार दुर्भिक्षों की मार से ब्राह्म-ब्राह्मि सब गई । भरण पोषण की स्थिति गम्भीर हो गयी । सरकार वस्तुस्थिति की संभालने के बजाय भारतीय सम्पत्तियों को ध्वस्त के कामों में लगे करने तथा विदेश भेजने में लगी थी । गुला मरी है लाचार देशवासी और अधिक टूटते चले गये ।

सामाजिक परिवेश:

भारतीय समाज व्यवस्था का अर्थात् संयुक्त परिवार प्रथा, जाति प्रथा, तथा धार्मिक पाठालता पर आधारित था। पूँजी की अहमानता, तथा शोषण की निरन्तर मार से त्रस्त जनता तबत ही नहीं पा रही थी। अंग्रेजी के अलावा अंग्रेजी के मुँह तगे भारतीय जमींदार अपने ही गाँवों को रक्त चूसने में लगे थे। जाति प्रथा का दोष भारतीय जीवन पद्धति की अलग से विच्छिन्न बनाये हुए था। यही कारण था कि हमें विदेशियों के समक्ष पद दलित होना पड़ा। जाति प्रथा के कारण ही देश की एकता तथा अखण्डता एवं राजनीति संगठनात्मकता को काफी क्षति लगी। पारिवारिक जीवन की व्यवस्थापिक नारी नियन्त्रण की दृष्टि दीवारों चूट रही थी। इसके साथ ही देहाव्य पीड़ा, बहु-विवाह एवं अनमेल-विवाह तथा वात-विवाह की कुप्रथाओं ने उसके जीवन की और अधिक नारकीय बना दिया।

बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर पहुँचे ही थी। बेरोजगार युवक पग पग पर उपेक्षित होते थे। अछूतों को समाज में कोई स्थान नहीं था। वे निरन्तर धर्म परिवर्तन करते जा रहे थे। ग्राम्य जीवन जमींदारों परधारियों और कारिन्दों की लीला की रंग स्थापती था। किसानों की कृषि की पैदावार लगान तक घुसने में समर्थ नहीं थी।

लगान कसूती के नाम पर उन्हें पशुओं की तरह अमानवीय यातनायें दी जाती और अक्षरण ही बेगार जोत दिया जाता था। कहना न होगा दमन चक्र एवं शोषण नीति के कारण भारतीय सामाजिक जीवन पद दलित होकर आँसू मार रहा था। सामाजिक जीवन की इन विषमताओं ने रसखुन्द कवियों गम्भीरता से प्रभावित किया। स्वतन्त्रता, समानता, नारी स्वातन्त्र्य आदि से सम्पुष्ट मानववादी स्वरों की गूँज स्वच्छन्दता-वादी साहित्यकार को यहीं प्राप्त हुई।

धार्मिक परिवर्तनः

अतीत काल से धर्म का गुरु माने जाने वाला भारत अपनी संकीर्ण विचार धाराओं के कारण धर्म के गतिशील रूप को छोड़ चुका था । स्वार्थ पूर्ण विद्वान्नाओं उसके विषय क्षेत्र की शुद्ध एवं संकुचित कर दिया । विभिन्न समुदायों तथा मत मतान्तरों ने धर्म को इतना छोटा एवं विस्तृत कर दिया कि अछूत आदि निम्न वर्ग के लोगों के लिये उसका प्रवेश द्वार बन्द हो गया । पाछाण्ड की प्रवृत्ति बढ़ती चली गयी । आतिथ्य सहिष्णुता के लुप्त हो जाने के कारण पतित कही जाने वाली बातियाँ की संख्या उत्तरांतर बढ़ती गयी जो अन्य धर्मों में दीक्षित होकर धर्म विरोधी स्वल्प आढा कराने लगी । 'धार्मिक नेतृत्व में उदारता, सत्तात्मकता एवं दूरदर्शिता आदि तत्वों का निरन्तर अभाव होता गया ।

सांस्कृतिक नव-जागरणः

उन्नीसवीं शताब्दी का अन्त तथा बीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ वस्तुतः भारतीय मध्यम वर्गीय चेतना का जागरण का समय है । पश्चिमी सभ्यता एवं धर्म के आगम से देश में जागृति की लहर फैली । अभाव ग्रस्त कुठित, संन्यस्त भारतीय मध्यमवर्ग कि कर्तव्य-विमूढ़ था । हिन्दुओं को अपने धर्म की ओर आकृष्ट करने में ईसाइयों ने हिन्दू धर्म की-कुर और गायक कुम्हारों पर आक्षेप किया । नव-शिक्षित हिन्दुओं ने भी स्वयं इन कुम्हारों का विरोध किया । राजा राममोहन राय ने 1850 में ब्रह्म समाज की स्थापना की । तत्पश्चात्

1. डा० जगदीश गुप्तः स्वच्छन्दतावादी धारा का दार्शनिक विश्लेषण

1875 में आर्य समाज एवं धियायौसाफिकल सोसाइटी तथा सन् 1879 में रामकृष्ण मिशन आदि धार्मिक संस्थाओं की स्थापना की गयी जिनका उद्देश्य समाज की भलाई के लिये कुप्रथाओं का परिमार्जन और परिष्कार कर एक स्वस्था समाज पुनर्गठन करने का था ।

धार्मिक कुप्रथाओं एवं कुरीतियों ने कल्पित देवी देवताओं के अतिरिक्त कर्म परस्ती तथा गाजी मिया की पूजा भी की जाने लगी थी । ईसाई मिशनरियों का आन्दोलन जोरों पर था ही । ऐसे समय दिग्भ्रमित हिन्दू जाति के लिये सुधारवादी आन्दोलन रामबाण साबित हुए । म्हम समाज ने हिन्दुत्व का नव संस्कार किया । एकेश्वरवाद की स्थापना की । धर्म ग्रन्थों में जातिगत भेद, अस्पृश्यता बहू-विवाह, सती प्रथा मूर्ति पूजा आदि मिथ्या चारों को दूर करने का प्रशसनीय कार्य किया । राजा राम मोहन राय के धार्मिक उत्तराधिकारी देवेन्द्र नाथ अहिर तथा बंगाल के एक विचारक केशवचन्द्र सेन ने राजा साहब के कार्य को आगे बढ़ाया ।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती वैदिक धर्म का सन्देश लेकर अवतीर्ण हुए उन्होंने भी बहू-विवाह बहूदेववाद, अन्धा विश्वास, बाल विवाह, आदि का जमकर विरोध किया तथा ही विधावा विवाह को सामाजिक स्वीकृति प्रदान कराई । वेद विहित मार्ग की प्रतिस्थापना के साथ ईसाईइस्लाम धर्म की दुर्वृत्तताओं को भी हिन्दू धर्म के परिप्रेक्ष्य में उजागर किया ।

रामकृष्ण परम हंस तथा उनके शिष्य विवेकानन्द ने भारतीय ध्वन्तन से नवीन दिशा प्रदान की । परमहंस के सिद्धान्त भारतीय संस्कृति के पोषक थे । विवेकानन्द ने अमेरिका के शिकागो नगर में भारतीय अध्याय की धारक जमा दी ।

समाज की विकृत परम्परा को शिक्षा के सम्पर्क प्रचार प्रसार की आवश्यकता थी। गोविन्द रानाडे, विष्णु चिपलूणकर गौडाते इस दशा में सराहनीय कार्य किया। भारत सेवाक समाज संशत कान्फ्रेंस, सेवासदन, शारदा सदन, महिला विश्वविद्यालय एवं विधावा समाज आदि संस्थाओं ने भी इस उद्देश्य की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके अतिरिक्त कधीन्द्र रवीन्द्र, योगिराज अरविन्द नाथ एवं महात्मा गांधी आदि विचारकों ने युगीन चिन्तन को काफी प्रभावित किया।

विज्ञान एवं उसका प्रभाव:

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल से ही भारत वैज्ञानिक प्रगति से प्रभावित होने लगा था। जीवन में यान्त्रिकता बढ़ती गयी। कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग होने लगा था। आवागमन के साधनों के विकास तथा दूर संचार के माध्यमों ने देश की सम्पर्क परिधि को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक बढ़ा दिया था। कल कारखानों की स्थापना से मजदूर और मध्यम वर्ग की संगति होने का अवसर प्राप्त होने लगा। और वे अपने सामूहिक हित के लिये वे संघर्ष करने में सक्षम हुए। इस तरह स्वतन्त्रता, समानता तथा भातृत्व की भावना पनपने लगी मुद्रण और प्रेस के आतिशायि अभाव्यक्ति को व्यक्त करने का कार्य सम्भाव हुआ।

भारतीय मानस की चेतना को सुशुद्ध बनाये रखने के उद्देश्य से प्रसारित की गयी अंग्रेजी शिक्षा सांस्कृतिक पुनरुत्थान तथा राष्ट्रीय चेतना के जागरण का कारण बनी। अंग्रेजी शिक्षा ने ही भारतीय तन्त्रा को मिल, बर्क, स्पेन्सर, वाल्टेकर रूसी आदि के प्रगतिशील विचारों से भारतीय चिन्तन में नई जागृति आई।

अंग्रेजी शिक्षा ऐसे विचारों का सहायक बनी जिसमें भारतीय चिन्तन अन्य देशों की राष्ट्रीयता, व्यक्ति स्वातन्त्र्य और उदारवाद

की भावना पार्श्वगत्य प्रजातान्त्रिक विचार धाराओं और संघर्षों के सम्पर्क में आया। इस तरह देश में नव-जागरण और नव विचारों की क्षतवर्ती आकाशवाणी का हुआ और भारतीय नवयुवक विदेशी पराधीनता को समाप्त कर देने के लिये राष्ट्र-प्रेम और आत्म प्रतिदान के भावों से भारकर राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े।

साहित्यिक पृष्ठभूमि:

ज़िंदगी की साहित्य धारा पोषण और परिवर्द्धन सामग्री अपने पूर्ववर्ती साहित्य से ही ग्रहण करती है किन्तु उसका रंग रस एवं व्यक्तित्व अपने पूर्व साहित्य से अलग-अलग रहता हुआ सर्वथा नवीनता का धारण करता है। अतः किसी साहित्यिक रूप के सम्पर्क मूल्योक्तन के लिये उसके पूर्ववर्ती साहित्य जिसकी जड़ से विवेक्य साहित्य धारा का जन्म हुआ है का उचित विवेचन विश्लेषण अनिवार्य है। इसी आशय से यहाँ हिन्दी स्वच्छन्दतावाद की साहित्यिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत है।

देश के नव जागरण एवं नवोत्थान में सन् 1857 का विद्रोह एक महत्वपूर्ण घटना है। हिन्दी साहित्य का यह काल भारतेन्दु काल के नाम से जाना जाता है। यहाँ तक आते-आते युगों युगों से बुझा भारतीय चेतना उद्बुद्धा हो उठी थी। यद्यपि कविता के परिदृश्य में अभी तक पुराना घन धारा किन्तु अंतरंग में काव्य की भाव सम्पदा में क्रान्ति के बीज अमन लगे थे। कविता में प्रथम बार समाज की पाइपनों का स्पन्दन सुनाई पड़ा। 1000 शताब्दियों रुग्ण हिन्दी कविता का मिनी को यह सबीवनी मिली। शताब्दियों हिन्दी कविता अविश्व झगड़ के रंग में रंगी पती आ रही थी। केवल घुम्बन और आतिशय, रति और विस्तार, रीमाच और स्वेद स्वकीया और परकीया

की कड़ियों में बरझी हुई हिन्दी कविता को भारतेन्दु ने सर्वप्रथम विज्ञापन भावन और लता कुजों से बाहर लाकर लोक जीवन के राजपट्टा पर उड़ा कर दिया।

भारतेन्दु के प्रयत्नकारि से सिंचित काव्य में वैष्णव भाक्ति एवं श्रृंगार आदि पुरानी प्रवृत्तियों के समावेश तो था साधा ही राष्ट्र-यता, स्वदेश प्रेम, तथा स्वतन्त्रता की भावनाओं की नवीनता के प्रति आग्रह था। भारतेन्दु का काव्य प्रसाद मध्ययुगीन विचारधाराओं की शिलाओं पर निर्मित था, जिस पर आड़ी-तिरछी रैलाओं में नवीन विचारों तथा विधानों के धिक् अंकित थे। प्राचीन और नवीन का यह समावेश काव्य की स्वच्छन्द प्रवृत्ति का संकेत करता है।

भारतेन्दु के अतिरिक्त उनकी काव्य मंहली के प्रताप नारायण मिश्र बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमदान' अम्बिका दत्त व्यास आदि ने काव्य में नवीनता का प्रवेश कराकर स्वच्छन्द कविता की पूर्व पीठिका का निर्माण किया। अब साधा के साधा साधा आड़ी बोली को भी काव्य में स्थान मिलने लगा। कवित्त सदैव चानाकारी आदि के साधा-साधा लोक जीवन में प्रचलित छन्द लावनी, कजरी, ठुनरी आदि छन्दों को काव्य स्थान मिला। रीति काल में विकृति का प्राप्त प्रेम भारतेन्दु के समय तक मानव की भावात्मक सच्चाई से जुड़ गया। कृत मिलाकर 'भारतेन्दु' युग ऐसी परिस्थितियों की नींव डाल चुका था जिस पर स्वच्छन्दतावाद के काव्य प्रसाद का निर्माण हो सका।

भारतेन्दु काल के परवर्ती समय में श्रीधर पाठक एवं ठाकुर जगदीश्वर सिंह ने, भारतेन्दु द्वारा नवीन विषयों के साधा साधा

भाषा के स्वल्प विनयक परिवर्तन करने का जो सुप्रपात किया गया उसकी विकसित रूप प्रदान किया। श्रीधर पाठक की तो स्वच्छन्दतावाद के जनक होने का गौरव प्राप्त है। जाड़ी बीली का प्रौढ़ रूप यद्यपि दिव्यवेदी युग की उपलब्धि है, किन्तु उसके विकास में भारतेन्दु युग के योगदान की नकार नहीं सकते।

स्वच्छन्दतावादी गाव्य धारा को हिन्दी काव्य में अवतरित करने का श्रेय श्रीधर पाठक को है। डॉ० अजय सिंह ने शब्दों में 'कविता की इस धारा का उद्भाव यद्यपि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से ही माना जा सकता है, परन्तु, श्री धर पाठक ही स्वच्छन्द काव्य धारा के अग्रदूत थीं। गाव्य, भाषा, छन्द, एवं व्याकरण, हर तरह से श्री धर पाठक ही सच्चे स्वच्छन्दतावादी थे और इन्हीं के कारण इस आन्दोलन को बल मिला था। पं० राम नरेश त्रिपाठी, स्व नारायण पाण्डेय, मुकुटधर पाण्डेय ने इस काव्य धारा के विकास में योग दिया। इन कवियों की कविताओं में सीधी, सरल, भाषा का प्रयोग, वनवैशाख, एकीकृत प्रणय, सौन्दर्य प्रियता, अतीत-प्रेम और देश-भक्ति आदि स्वच्छन्दतावाद के तत्त्व उन्मुख गाव्य से प्रकट हुए। वैयक्तिक विद्रोह भाव इन कवियों में नहीं मिलता जो आगे चलकर छायावाद में विकसित होता है। 'कामायनी' को अन्तिम रूप देकर जब प्रसाद जी इस दुनिया से घट बसे, उसी के आस-पास स्वयं छायावादी काव्य-संसार बदलने लगा था। पत, प्रगल्भ, युगवादी एवं ग्राम्यता की दोर में जो तथ्या श्रेष्ठ निराशा अपनी एकाकीटी बेटी सरोज के 1935 ई० में जी देने के बाद आक्रोश भारी मुद्रा में आ गये थे। 1938 में प्रकाशित दिव्यतीय 'अनामिका' में सरोज-स्मृति जैसा शोक गीत है जिसमें कस्या

1. डॉ० अजय सिंह, आधुनिक हिन्दी कविता में नव स्वच्छन्दतावाद,

के साथ निराशा ने सामाजिक विद्रोह की अभिव्यक्ति की है। इसके साथ ही 1937 ई० में 'बह लौड़ती पत्थार' जैसी सामाजिक यथार्थ की कविता की रचना हुई। इस प्रकार 1935-36 के आस-पास हिन्दी स्वच्छन्दतावाद का व्यक्त भी स्वच्छन्दतावादी परिवेश से हटकर यथार्थ की नई भूमिका में प्रवेश करने लगा था।

कहना ना होगा कि छायावाद के श्रेष्ठ कवियों की दृष्टि स्थूल के विस्तार पर फिसलने के स्थान पर सूक्ष्म की गहराई में उतरना चाहती थी। वह भाव और सौन्दर्य के सूक्ष्म स्तरों को यह मानना और व्यक्त करना चाहती थी। इसलिए छायावाद की कविताएँ जहाँ अनुभूति के स्थान और शैशिल्य तथा भाव-प्रेरित सूक्ष्म लक्षणात्मक, अभिव्यक्ति के कारण उच्चतम स्तर पर प्रतिष्ठित हो जाती हैं वहाँ अप्रकट होने पर कामवी, मिथ्या और अमूर्त प्रभाव से ग्रस्त होकर रह जाती है। छायावाद में व्यक्ति की अनुभूति की तीव्रता क्रमशः कुछ प्रभाव पैदा करने वाली सुहा-दुःखा, सदन-हास, आशा-निराशा के धर्मों में बदलती गई और अनुभाव की प्रामाणिकता तथा शैशिल्य के स्थान पर एक प्रकार का कोहरा फैलता गया जिसमें कोई शक्ति उभारती लक्षित नहीं होती। छायावादोत्तर व्यक्तित्वादी गीति कवियों ने अनुभाव और अभिव्यक्ति की इस अमूर्तता, वायवीयता, रहस्यमयता तथा संकोच के विरुद्ध स्वर उठा दिया। इन कवियों में तथा छायावादी कवियों में दृष्टि और विषय की बड़ी समानता है। इन कवियों की दृष्टि स्थानी है, वस्तुगत के प्रति इनकी भी प्रतिक्रिया अत्यन्त भावात्मक है।²

1. डॉ० प्रेमशंकर, कामायनी का रचना संसार, पृ० 12

2. डॉ० रामदरश मिश्र, हिन्दी कविता: आधुनिक आयाम, पृ० 37.

(म) स्वच्छन्दतावाद (रोमांटिसिज्म), शास्त्रीयतावाद (क्लासिसिज्म) तथा
आधुनिकता (मार्टेननिटी)-

अंग्रेजी के रोमांटिसिज्म की व्युत्पत्ति रोमांसशब्द से हुई है। और रोमांस शब्द 'रोम साम्राज्य की राजकीय भाषा लिम्बा लेटिना से हटकर जनपदी बोली लिम्बा रोमानिका के क्रिया विशेषण से निःसृत हुआ जो प्राचीन इटालवी भाषा में रोमाज तथा स्पैनी भाषा में रोमांस रूप में प्रयुक्त हुआ। एक लम्बे समय तक रोमांस शब्द भाषा सूत्र बना रहा किन्तु बाद में फ्रांसीसी भाषा में यह रोमांस शब्द ऐसे साहित्य का बोधाक हो गया जो मध्यकालीन शूरवीरों के विशाल साहसिक कृत्यों की कथा को पद्य में या गद्य में स्थापित किया करता था। धीरे-धीरे रोमांस कथाओं में अलंकारों का योग भी होता चला गया परन्तु बहुत समय तक योरोपीय साहित्य रोमांस से तात्पर्य ऐसे साहित्य से माना जाता रहा जिसमें जीवन के सख्त, दुर्लभ अस्मय तथा अद्भुत की पीठिका पर मानव कार्यों एवं कृतियों में निहित उदात्त अनुदात्त भावों में सर्वथा आदर्श की स्थापना का भाव है।

आधुनिक उर्ध्व में रोमांस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम जर्मन साहित्य में हुआ, जहाँ बट शैली का प्रतीक माना जाने लगा था। 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रोमांस के विशेषण के रूप में रोमांटिक तथा 'वाद' के रूप में रोमांटिसिज्म को उदारता पूर्वक प्रयुक्त किया जाने लगा।

रोमांटिक शब्द रोमांस से निःसृत होकर रोमांटिक का रूप धारण करता है जिसका अंग्रेजी साहित्य सर्वप्रथम प्रयोग 1654 के आस पास माना जाता है। वहाँ जिसका अभिप्राय रोमांस के समान () उर्ध्व में लिया गया है।

रोमाण्टिक शब्द को एक काव्य प्रवृत्ति के रूप को प्रयुक्त करने वाले जर्मन आलोचक फ्रीडरिक श्लेगेल माने जाते हैं जिन्होंने सन् 1798-1800 के मध्य रोमाण्टिक शब्द का प्रयोग क्लासिक के विरोधी अर्थ में परिभाषित किया¹। यही रोमाण्टिक शब्द बाद के रूप में सजा आदि यथार्थ रोमाण्टिसिज्म हो गया²। इस तरह क्लासिक साहित्य की सृष्टियों परम्पराओं, वृत्तान्तों को तोड़कर नितान्त वैयक्तिक उन्मुक्त विचार प्रवाह रोमाण्टिसिज्म के नाम से जाना गया।

यूरोप में रोमाण्टिक आन्दोलन को उस आन्दोलन के विरोधियों ने रोमाण्टिक कवियों को चिढ़ाने के लिये रोमाण्टिक नाम दिया था। जिस प्रकार हिन्दी में छायावाद 'नाम' छायावादी कवियों द्वारा स्वतः गृहीत न होकर विरोधियों द्वारा प्रतिक्रिया स्वस्य व्यंग्य में छायावादी काव्य धारा को दिया गया।

शास्त्रीयतावाद तथा स्वच्छन्दतावाद

स्वच्छन्दतावाद ने शास्त्रीयतावाद की प्रतिक्रिया स्वस्य विद्रोह के आधार पर अपना स्वस्य निर्मित किया है। अतः स्वच्छन्दतावाद के स्वस्य के विश्लेषण से पूर्व शास्त्रीयतावाद पर विचार करना अनिवार्य हो जाता है।

शास्त्रीयतावाद और स्वच्छन्दतावाद दो विशिष्ट एवं परस्पर विरोधी काव्य प्रवृत्तियाँ हैं। पश्चात्त्य जगत् की समालोचना में सर्वप्रथम

1. The encyclopaedia Americana, Vol. XXIII P. 655.

2. Abercrombie Lascelles: Romanticism, P. 12.

वैदिककालमें नै शास्त्रीयतावाद और स्वच्छन्दतावाद में पार्थक्य स्पष्ट करते हुए कहा है कि-प्राचीनों का वह काव्य जो वस्तु प्रधान हो तथा जिसमें बाह्य नियमों का पालन किया गया हो शास्त्रीयतावादी है जिस काव्य में बौद्धिकता, स्पष्टता, पूर्णता, सानुस्मिता क्रमबद्धता, आदि का प्राधान्य होता है। वही शास्त्रीय काव्य है।

शास्त्रीय काव्य में साधन पक्ष की श्रेष्ठता पर अधिक ध्यान रखा जाता है²।

प्रीस्टले स्वच्छन्दतावादी साहित्य को अवेतन मानस का स्फूर्त तथा शास्त्रीयतावादी साहित्य की चेतन की सृष्टि स्वीकारता है। क्लासिक साहित्यकारों का ध्यान काव्य के बाह्य संगठन और रूप सौष्ठव पर अधिक रहता है तो स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार अन्तः सौन्दर्य पर मग्न है। 'टी०ई०एच०स्पेन्स' ने 'स्पेकुलेशनस' में रोमाण्टिक तथा क्लासिक का भेद स्पष्ट करते हुए कहा है कि जहाँ मानव की परिसीमायें स्वीकार कर उसे प्रकृति के अधीन माना गया है वहाँ हमें क्लासिक विचारधारा मिलेगी तथा जहाँ मानव जीवन को अनन्त संभावनाओं के केन्द्र माना गया है वहाँ हम रोमाण्टिक विचारधारा पायेंगे³। आचार्य नन्द दुसारे पाश्चैयी रोमाण्टिसिज्म और क्लासिसिज्म का भेद स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि-यह काव्य धारा जो काव्य और कला के व्यक्त सौन्दर्य-प्रसाधनों, सुन्दर शब्दों और आकृतियों आदि का आग्रह करके चलती है। क्लासिसिज्म की प्रतिनिधि कहीं जाती है। दूसरी अतिवादी स्थिति तब आती है जब

1. J.M. Mishra, Lecturer on four poet's p.103.

2. Thomson, A Classical background of English Literature (London 1962) p.20

3. एल०आर०फ्रैस्ट, रोमाण्टिसिज्म इन पर्सपेक्टिव, पृ० 23

बहु निर्माण सम्बन्धी नियमों में बंधा जाती है और स्वतन्त्रता पूर्वक हाथ धेर भी नहीं हिला सकती। इसी प्रकार जो काव्य धारा अत्यन्त अनियन्त्रित पद्धति, संयम सहित प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देती है। यह रोमाण्टिक गति की सूचक है। काव्य में भावना के अतिरेक से जो असंयम आता है नियमों की अवहेलना होती है। रोमाण्टिसिज्म की अति का परिचायक है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वाक्य रूप सौष्ठव की प्रधानता उदात्तता, महानता, स्वयं शीतता नियमों का निर्धारण शास्त्रीयतावाद के अन्तर्गत आता है जबकि इसके विपरीत कल्पना का प्राधान्य आवेग बहुलता, नियमों का उच्छेदन, तथा स्वप्नों की सी रंगीनी स्वच्छन्दतावादी साहित्य की विशेषता है।

साहित्य को क्लासिक और रोमाण्टिक विभेदों में विभाजित करने की एक परम्परा ही बन गयी है। जबकि किसी कवि या साहित्यकार को नितान्त क्लासिक या रोमाण्टिक नहीं कहा जा सकता। शैली में संतुलन, नियन्त्रण, तथा मनोदशा की स्थिरता होने पर उसे अनवर क्लासिक कह दिया जाता है जबकि आवेग-प्रधान भाव दशा तथा विस्फोट शैली अपनाने पर उसे ही रोमाण्टिक वास्तविकता यह है कि कोई काल, वाद या व्यक्ति निरपेक्ष रूप में क्लासिक या रोमाण्टिक नहीं होता बल्कि मनुष्य की वृत्तियों ही क्लासिक या रोमाण्टिक होती है। साहित्य का इतिहास इस बात का साक्ष्य है कि क्लासिक युग में रोमाण्टिक तथा रोमाण्टिक युग में क्लासिक रचनाएँ होती हैं। एक ही कवि क्लासिक एवं रोमाण्टिक दोनों ही हो सकता है। श्रेष्ठ कवि कभी किसी एक वाद या सारणी का आधार नहीं लेते। क्लासिक, स्वच्छन्दता-

बादी तथा यथार्थवादी एक दूसरे के साधनों तथा उपादानों को बराबर अपनाती आयी हैं। और वहीं काव्य के स्वाभाविक विकास के लिये अपेक्षित भी हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि क्लासिक एवं रोमाण्टिक परस्पर विरोधी नहीं हैं, किन्तु जब कभी एक बाद की प्रमुखाता से अनुसरण होने लगता है, तब उसके विरोध में दूसरी काव्य धाराएँ आविर्भूत होती हैं और एक सन्तुलन बनाती हैं।

‘स्वदेश-विदेश में काव्य का इतिहास एक सन्देश देता रहा है, और वह यह है कि कविता बाद युक्त होकर अपने चरम उत्कर्ष की प्राप्ति करती है। छायावाद की चरम उपलब्धियाँ- समायनी, राम की शक्ति पूजा परिवर्तन आदि छायावाद की परिभाषा में नहीं आ सकती। जब तक कवि की चेतना बादग्रस्त रहती है तब तक पूर्ण समाधि की स्थिति उसके लिये संभाव्य नहीं होती और पूर्ण समाहित के बिना पूर्ण आत्माभिव्यक्ति या आत्मलब्धि संभाव्य नहीं है। बाद ग्रस्त चेतना विवाद में उलझ जाती है और विवाद निश्चय ही चेतना में बाधाक होता है।²

‘रपट्ट है कि अच्छी काव्य सृजना को प्रस्तुत करते समय कवि किसी बाद के धारे में नहीं रह सकता बल्कि उसके सामने साहित्य का विशाल क्षेत्त्र पड़ा रहता है। उसके इस विशाल प्रांगण में श्रमण और विचरण को भाते ही कोई क्लासिक कहे या रोमाण्टिक।³ ‘क्रोध का कथन है कि ‘क्लासिक’ तथा ‘रोमाण्टिक’ काव्य में नितान्त भिन्न गुण नहीं हैं, सभी महान कलाकार क्लासिक तथा रोमाण्टिक दोनों होते हैं।⁴

1. आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, धर्मयुग (रविवार 6, अगस्त, 1967) पृ०-19

2. डा० नगेन्द्र, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, (10 मार्च 1968) पृ० 50

3. डा० अजय सिंह, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ - पृ० 6

4. एल० आर० प्रकट, रोमैण्टिसिज्म इन पर्सपेक्टिव, पृ० 106.

रोमाण्टिक कविता केवल कविता एक प्रकार ही नहीं है बल्कि कविता का एक तत्त्व भी है। इस विस्तृत परिमेष्य में रोमाण्टिक वह है जो संवेदनात्मक वस्तु को कल्पनात्मक रूप में चित्रित करता है।

आधुनिकता:

'आधुनिकता' में मध्य युग की प्रतिक्रिया है। भगवान को छोड़ दिया गया है और इसके स्थान पर मानव आ गया है। मानववाद आधुनिकता की एक प्रवृत्ति है। आधुनिकता में साहित्य का अक्सर पदार्थापरक धारातल पर स्तिता है। पदार्था अक्सर में मानवीय एवं इस्लोक की अनुभूतिपूर्ण प्रधान बन गई। पदार्थापर मानव काव्य का नायक बन गया है।² डा० रमेश कुमात मेधा का कथन है कि आधुनिकता कोई दर्शन तथा रूपना लोक () नहीं है बल्कि बहुविधा विचार धाराएँ हैं, जो संस्कृति में समाज एवं सम्यता को प्रक्षोभित करती है। इसलिए आधुनिकता को विचार-विधि कह सकते हैं।³ डा० अजय सिंह ने अपने सभा प्रकाशित पुस्तक में आधुनिकता की माँगिमा मनुष्य की चेतना से जुड़ी है और मनुष्य के आत्मिक ढाँच को प्रश्न देती है। इसमें मानव-मूल्यों के दृष्टव की प्रक्रिया में पियरे हुए मानव-बिम्ब उभारते हैं।⁴ डा० देवराज के अनुसार 'जीवन और जगत् के पदार्था का स्वीकार-भाव आधुनिक दृष्टि की ढाँस पहचान है। आधुनिक दृष्टि मनुष्य को नितात स्वतन्त्र अस्तित्व एवं गौरव प्रदान करती है और यह मानती है कि मनुष्य स्वयं अपनी नियति

1. डा० अजय सिंह, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 5

2. डा० अजय सिंह, नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 125.

3. डा० रमेश कुमात मेधा, आधुनिकता-बोध और आधुनिकीकरण पृ० 313

4. डा० अजय सिंह, नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 127.

का निर्णायक और निर्माता है। आधुनिक दृष्टि में, जीवन में जो गहरी संतुष्टता का भाव होता है। इसलिए आधुनिक होने के लिए अतीत को अस्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है।¹ 'मध्यकालीनता' से अलग होने वाली मानसिकता के रूप में 'आधुनिकता' मनुष्य के सर्वनात्मक मानस की एक अवश्यमायी नियति है।

आधुनिक शब्द का प्रयोग वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अर्थ में किया जाता है। यह शब्द समय सापेक्ष न होकर चिन्तन पद्धति सापेक्ष है। 'ऐतिहासिक क्रम में तदैव अपने से नये घन के पर्याय के रूप में 'आधुनिक' एक संज्ञा है। दूसरे शब्दों में पूर्ववर्ती से अलग होने वाली क्रिया की संज्ञा आधुनिकता है किन्तु पूर्ववर्ती से अलग होने की श्रुतिमानवीय अनुभाव तथा मानवीय संवेदना से सम्पुक्त होने की आवश्यक है। उसके अभाव में किसी रूपान्तर में उत्पन्न किसी भी पिछले से नये की आधुनिकता नहीं कह सकते। जो आधुनिक है उसकी संवेदना का सवास्तव आधुनिकता है। इस दृष्टि से आधुनिक जैसी संज्ञा का विशेषीकृत संवेद्य रूप आधुनिकता है।² 'आधुनिकता' एक अतिरिक्त सञ्गतता है। आधुनिकता, एक प्रक्रिया होने के कारण अनेक दौरों से गुजरती है, और आज भी वह जारी है; इसलिये किसी एक दौर पर उगली रूढ़िवाद यह कहना कठिन है कि आधुनिकता यह है। इसकी पहिचान अनेक पहेलियों से की जाती है।

आधुनिकता की परम्परा के निषेधा के रूप में भी पारिभाषित किया गया है। किन्तु परम्परा का सम्पूर्ण निषेध सामान्य रूप से करना वर्तमान दृष्टि में ना मुमकिन है क्योंकि आधुनिक से आधुनिक विचारधारा परम्परा की भित्ति पर ही छाड़ी होती है। जिस तरह परम्परा का सम्पूर्ण बहिष्कार संभव नहीं उसी प्रकार

1. रूपनगर, 122, कुतार्ड-अगस्त 1962, पृ० 26-28

2. डा० गंगा प्रसाद 'विमलः' आधुनिकता साहित्य के सन्दर्भ में पृ० 20

परम्परा का सम्पूर्ण स्वीकार आधुनिकता के लिए संगत नहीं।

आधुनिकता की प्रक्रिया का सतत मानने वाले लोगों के अनुसार आधुनिकता सामयिक, समकालीन तात्कालिकता से सदैव परिपूर्ण रहती है किन्तु सम सामयिकता, तात्कालिकता समकालीनता तथा आधुनिकता शिम्पन-2 चीजें हैं इनमें कोई एक सुप्रता नहीं।

आधुनिकता की वैज्ञानिक दृष्टि है। औद्योगीकरण में सामाजिक सम्बन्धों में एक प्रकार की जटिलता पैदा की है। पुराने पारिवारिक संयुक्त परिवार के टूटने लगे हैं। एक अनात्मीय बेकार आदमी की सर्जना की है। यह बेकार होने की चेतना आधुनिकता है। ग्राम्य परिवेश में नागरिक भाव की अस्पष्ट सुछाद स्थिति भी आधुनिकता है। आधुनिकता ने यहाँ एक और अतीत से असम्पृक्ति बाहर की है ताँ दूसरी ओर अतीत के मिथकों को पुनर्व्याख्यायित करने की तत्क दिशा है।

वर्ग चेतना का अहसास आधुनिकता है। यथार्थ बोधा भी आधुनिकता है। आधुनिकता वादों के माध्यम से संवर्ण करती है- मानववाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, राष्ट्रवाद, मार्क्सवाद, प्रगतिवाद विकासवाद आदि नये ज्ञान विज्ञान और तकनीकीकरण के फलस्वरूप उत्पन्न मानवीय स्थितियों का नया गैर सामाजिक और अभिधारीय साक्षात्कार आधुनिकता है।

कृत मित्राकर आधुनिकता मध्ययुगीन भावबोधा के विस्था एक दृष्टिकोण है, प्रक्रिया है अद्यतनता है, मानवजीवन-मूल्यों की नवीन भाव बोधा के साथ उपस्थित है साथ ही वैयक्तिक बोद्धिकता उसके लिए सर्वापरी है। आधुनिकता एक सांस्कृतिक संघर्ष है, वह मनुष्य और जीवन यथा समग्र मानवीय सच विचार से जुड़ी हुई है।

भारत में अंग्रेजी शासन की प्रतिष्ठा के साथ-साथ नवीन वैज्ञानिक चिन्तन एवं दृष्टिकोण का आगमन हुआ। इसके साथ ही हिन्दी साहित्य ने एक नवीन करवट बदली। वह सामन्ती प्रभाव से मुक्त होकर स्वच्छन्दता की ओर अग्रसर हुआ हिन्दी में आधुनिक काल 1857 की जनक्रान्ति से प्रारम्भ होता है। जन आन्दोलन के पश्चात् ही अंग्रेजी शासन की पूर्ण प्रतिष्ठा हुई। अंग्रेजी साहित्य और संस्कृति से भी हमारा साहित्य प्रभावित हुआ और इस नवीन सम्पर्क ने साहित्य की शोती हुई आत्मा को स्पन्दित कर दिया। बोद्धिधक नवोन्मेष है जन-चेतना के सार उनासना उठे। सीमित और रुढ़िवादी विचारधारा से निस्तेज हुई साहित्य की आत्मायें आधुनिक युग की औद्योगिक क्रान्ति और सांस्कृतिक नव-जागरण का सम्पर्क पाकर नव-जीवन का संचार हो गया। पश्चिम के नवोदित विज्ञान ने आध्यात्मिक विचारों को हल्ला दे दिया। संक्रान्ति के इस दौर में उद्देसित हुई जन चेतना से साहित्य भला कैसे अछूता रहता।

जागरूक साहित्यकार नवीन युगबोध की स्थापित करने लगे। विश्व की नयी नयी विचारधाराएँ साहित्य में स्थान पाने लगी। कलाकारों का यथार्थवादी स्तान भारती के मनुष्य की केन्द्र मानकर सर्वना में सत्पर रहने लगा। यथार्थवादी-मानववादी चेतना काव्य-कला में आधुनिकता का ही विस्तार है।

स्वच्छन्दतावाद के संदर्भ में विद्वानों के अभिमतः

यद्यपि स्वच्छन्दतावाद की कोई सर्वमान्य परिभाषा देना सम्भव नहीं, फिर भी विभिन्न पार्श्वात्प एवं भारतीय विद्वानों ने यथाशक्ति स्वच्छन्दतावाद को परिभाषित करने का प्रयास किया है। यहाँ पर हमारा अभिप्रेत पार्श्वात्प समीक्षाओं तथा कवियों द्वारा दी गयी स्वच्छन्दतावाद की परिभाषाओं पर विचार करना है -

पार्श्वाल्पः

स्वच्छन्दतावाद ने विभिन्न शक्तिों से अपने विचार तन्त्र प्रकट किये हैं। अतः उसकी परिभाषाओं में पार्श्वाल्प आना स्वाभाविक है। प्रो० क्रैमरिया के अनुसार- रोमानी चेतना शाश्वतता प्रधान जीवन का अतिरेक है, जो कल्पना के द्वारा प्रेरित या संघातित होता है। और जिसमें स्वयं व्यक्त की आत्मा, उस कल्पना दृष्टि की सशक्त बनाती है एवं निर्देश करती है।¹ 'क्रैमरिया की दृष्टि में प्रबल भावावेग तथा समृद्ध कल्पना शक्ति का संयोग स्वच्छन्दतावाद के मूल में व्यक्त है। रीडर्स इन साइक्लोपीडिया में "स्वच्छन्दतावाद की प्रमुखा विशेषताओं को इस प्रकार बताया गया है "व्यक्तिवाद, प्रकृति-पूजा, अतीतवाद, स्वतन्त्र विचार एवं धार्मिक रहस्यवाद की और प्रतिक्रियात्मक मनोवृत्ति, राजनीतिक सत्ता और सामाजिक रुढ़ियों के प्रति विद्रोह, शारीरिक आवेश का उत्पन्न, स्वात्तसुधाय संवेग तथा मनोवेग का प्रोत्साहन तथा अलौकिक, दूषित, एकात्मिक और निर्वय के प्रति अबाधा आकर्षण²। निश्चित ही इस परिभाषा में स्वच्छन्दतावाद की अधिकांश प्रवृत्तियों उभार कर आई हैं किन्तु समग्रता से स्वच्छन्दतावाद की स्पष्टीकरण नहीं मिल सका-डब्ल्यू टी० जॉन्स का स्थान है कि स्वच्छन्दतावाद गतिशील है, इसमें व्यवस्था की अपेक्षा अव्यवस्था अधिक है, बाधिता की अपेक्षा निस्तरतरता पर बल है, जिसके अन्दर तीव्र प्रकाश बिन्दु की अपेक्षा धुंधले प्रकाश बिन्दु की अधिकता है। जिसमें बाह्य दुकाव की अपेक्षा आन्तरिकता पर बल है और जिसमें इस संसार की अपेक्षा दूसरे संसार की स्थान

1. ए हिस्ट्री ऑफ इंगलिस लिटरेचर, पृ० 997.

2. Readers' Encyclopaedia: Third Printing Dec, 1951, New York P. 343.

पर बल है।¹ 'पार्श्वाल्प आलोचना शास्त्री एवरमरबी के अनुसार-
स्वच्छन्दतावाद, बाह्य अनुभाव से आन्तरिक अनुभूति की ओर अन्त
प्रयास है।² स्वच्छन्दतावाद का अतिशय आन्तरिकता एवं निषिद्ध
अन्तर्मुक्तिता का एकीकरण वस्तुतः स्वच्छन्दतावाद को संकुचित कर
देता है। वाल्टर पेंटर का कथन है कि सौन्दर्य में वित्काणता का योग
क्लाये रोमाण्टिक स्वप्न का निर्माण करता है।³

स्वच्छन्द कवि ही नहीं बरन प्रत्येक कवि सौन्दर्य का
अन्वेक्षण करता है, अतः इस परिभाषा में अतिव्याप्ति दोष है।
वाल्सहपटन, स्वच्छन्दतावाद को अद्भुत का पुनर्जागरण⁴ कहता है, तथा
जिज्ञासा एवं विस्मय की प्रधानता स्वीकार करता है।⁴ जर्नेस्ट स्वच्छ-
न्दतावाद की प्रकृति की प्रवर्णन करते हैं।⁵ हरबर्ट रीड स्वच्छन्दता-
वादी चेतना की युक्ति प्रधान मानते हैं। तथा स्वातन्त्र्य लालसा की
स्वच्छन्दतावाद की मुख्य प्रवृत्ति स्वीकार करते हैं।⁶ स्टीपन स्पेंडर के
अनुसार रोमाण्टिक कलाकार प्रकृति में सर्वत्र ही अपना प्रतिबिम्ब देखते हैं।⁷
क्राम्पटन रिकेट की शब्दावली में स्वच्छन्दतावाद तीव्र संवेदनाओं तथा
उच्च रूपना प्रवण अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है।⁸ स्वच्छन्दतावादी
कवि तथा लेखक प्रकृति को प्रेम करता है, राजनीति, सामाजिक तथा
कलात्मक सत्ता से विद्रोह करता है, तथा व्यक्तिवाद की उनकी जमह
पसन्द करता है।⁹

1. Rene Welleke : Concepts of Criticism, P.295.

2. Abercrombie: Romanticism, P.22.

3. Walters Peter: Appreciations, P.258.

4. Ibid P.89

5. In Romanticism point of view P89

6. Herbert Read, in Romanticism, point of view, P.106.

7. Stephen Spenders, in Romanticism of point of view, P.183.

8. Crompton Rickett, A History of English Literature's P.292.

9. The World Book Encyclopaedia 1960, U.S.A. P.403.

स्वच्छन्द कलाकार ईश्वर में नहीं मानव में स्वर्ग में नहीं छाती में विश्वास करता है। तपन आवेग, शक्ति, आकुलता, उत्सुकता, प्रगति, स्वातन्त्र्य, प्रायोगिकता एवं उत्सर्जन की भावनाओं के साथ सम्बद्ध होता है।² कलात्मक अभिव्यक्तियों का कल्पना की उड़ान प्रतीक तपन मिथक का प्रयोग करता है।³

मानवैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर मूल मानसिक वृत्तियों इह, ईगा, एवं सुपर ईगा, में से इह की अभिव्यक्ति को रोमाण्टिसिज्म की मूल उत्स भूमि माना जाता है स्वच्छन्दतावादी साहित्य निःसन्देह अवचेतन मन की सृष्टि है। कल्पना बहुलता, विलक्षणता रागों का निवास एवं आनन्दोपविष्ट की भावना निश्चय ही इह से परिचालित एवं प्रेरित होती है। इह पर सुपर ईगा का नियन्त्रण शास्त्रीय साहित्य सज्जन को जन्म देता है।⁴ वैज्ञानिक होते हुए भी इस विवेचन की असंगति यह है कि स्वच्छन्दतावादी साहित्य में गी आदर्श एवं प्रवृत्तियों तथा नैतिक मान्यताओं का प्रतिपादन होता है। इसका समाहार करने में यह व्याख्या अधूरी है।

स्वच्छन्दतावाद के संदर्भ में भारतीय विद्वानों के अभिमतः

भारतीय विद्वानों ने भी स्वच्छन्दतावाद के स्वरूप एवं प्रकृति को विश्लेषित करते हुए स्वच्छन्दतावाद की मूल प्रेरणा एवं विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास किया है। स्वच्छन्दतावादी कविता को रुढ़िद्धा एवं कृत्रिम काव्य प्रवास के विरोध में उद्भूत स्वाभाविक भाव

1. T.E. Hulme, Speculations (Edited by Herbert Read, Page 118.

2. H.A. Scot James; The making of Literature, P.152.

3. Casselle's encyclopaedia of Literature (Edited by S.H. Steinberg) Vol I, P.480.

4. F.L. Lucas: Literature and Psychology, P.136.

धारा की कविता मानने वाले आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार¹ प्रकृति प्राणों के घर अथवा प्राणियों का रागपूर्ण परिघ, उनकी गति-विधियों पर आत्मीयतापरक दृष्टिपात, सुजा-दुःख में उनके साहचर्य की भावना ये सब बातें स्वच्छन्दतावाद के पद बिह्न हैं।² आचार्य शुक्ल जी की यह परिभाषा स्वच्छन्दतावादी भावधारा की आत्मनिष्ठ उद्भावनाओं प्राकृत रूपना शक्तियों के चित्रण एवं स्वातन्त्र्य भावनाओं का समाहार नहीं कर पाई है, 'प्राचीन शिष्ट तथा क्लासिक परिपाटी के विरोध में उठ खड़ी होने वाली विचार धारा को रोमाण्टिसिज्म कहा जाता है'³ आचार्य हजारी प्रसाद दिव्येदी के अनुसार 'उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंग्रेजी कवियों में एक अद्भुत उन्मुक्त भावधारा प्रवृत्त होकर प्रकट हुई। उसमें परिपाटी विहित और परम्परायुक्त इस दृष्टि के स्थान पर कवि की आत्मानुभूति आवेगधारा और कल्पना का प्राधान्य था। उस विशिष्ट दृष्टिमायी प्रधानता की ध्यान में रखाकर कुछ विद्वानों ने हिन्दी में इसे स्वच्छन्दतावाद कहा'⁴ 'रोमाण्टिक साहित्य की वास्तविक उत्सङ्गुमि वह मानसिक गठन है जिसमें कल्पना के अविरल प्रवाह से मन सशिष्ट निविड़ आवेग की प्रधानता होती है मानसिक वृत्तियाँ ही इस व्यक्तित्व प्रधान साहित्यिक रूप की प्रधान जननी हैं'⁵

आचार्य प्रवर दिव्येदी जी के मत में 'स्वच्छन्दतावाद' की अधिकांश विशेषताएँ सिमट आयी हैं। निःसन्देह आचार्य दिव्येदी

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० 628

2. सम्पा० डा० पी० रेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्यकी श, पृ० 676

3. डा० देवराज उपाध्याय कृत रोमाण्टिक साहित्यशास्त्र, (गुप्तिका डा० हजारी प्रसाद दिव्येदी, पृ० 1)

4. वही, पृ० 3

जी स्वच्छन्दतावाद की मूल प्रेरणा और अभिव्यक्ति के माध्यम की पकड़ पाने में समर्पित रहे हैं। 'रामाण्टिक साहित्य जीवन के इस आवेग नय पहलु पर और देने के कारण अपना यह स्व धारण कर सका है जो अन्तर्दृष्टि द्वारा चालित जिवा प्रेरित होता है।¹ 'स्वातन्त्र्य की लालसा और बन्धानों का स्वातन्त्र्य त्याग रामाण्टिक धारा के मूल में व्याप्त है।² 'आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र' 'सामाजिक बन्धानों को तोड़कर जीवन के स्वच्छन्द विवरण करने की लालसा को स्वच्छन्दतावाद मानते हैं।³ डा० रामेश्वर लाल ढाण्डेलवाल ने रामायवाद के मूलतत्त्व 'रूढ़ियों' से युक्ति, व्यक्तित्वगत जीवनानुभूति, स्वच्छन्द एवं रमणीय रूपना, प्रकृति के प्रति मग्नीर प्रेम तथा उसमें चेतन सत्ता का आरोप, अतीत और भविष्य के प्रति लालसा ललक, बौद्धिकता के स्थान पर कौमल भावना का प्राधान्य युक्त छन्द विधान आदि को स्वीकारा है।⁴ 'राष्ट्रीय अतीत तथा मध्य युग से सम्बन्धित दृश्यों नाटनाओं एवं पात्रों का चित्रण, अमूर्त की अपेक्षा मूर्त को स्वीकृति, प्राकृतिक दृश्यावली तथा तज्जनित प्रबल रागात्मक उद्भूत तथा विस्मय उत्पादक व्यापार आत्मा व परमात्मा, स्वप्न तथा अचेतन-ये सभी स्वच्छन्दतावादी साधक के प्रिय विषय रहे हैं।⁵ 'डा० नगेन्द्र की इस परिभाषा में मिश्रित कृत्रिम तथा नवीनता अकृती रह गयी है।

1. डा० देवराज उपाध्याय: रामाण्टिक साहित्यशास्त्र (भूमिका) पृ० 1.

2. आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी: आधुनिक साहित्य (द्वि० संस्करण) पृ० 439.

3. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र: हिन्दी का समसामयिक साहित्य (प्र० सं०) पृ० 54.

4. डा० रामेश्वर लाल ढाण्डेलवाल: आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य (प्र० सं०) पृ० 325.

5. डा० नगेन्द्र: मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य ढाण्ड) पृ० 226-227.

डा० नामवर सिंह स्वच्छन्दतावाद की प्राचीन रुढ़ियों से युक्ति की आसक्ति मानते हैं।¹ डा० रामचन्द्र मिश्र के अनुसार स्वच्छन्दतावादी काव्य, नाट्य की विशेष सज्जना है, जो रूपना और आवेग से युक्त परम्परागत विधान और बाह्यगत नियन्त्रण से विमुक्त और मानसिक सरलता तथा अकृत्रियता से सम्पन्न मानसिक तथा तर्क भूमि की भावनाओं से युक्त है²। डा० अबल सिंह का रुढ़ान है कि 'स्वच्छन्दतावाद' नवीन अनुभूति की भूमि पर पुरानी परम्पराओं से विच्छिन्न कर चेतन प्रकृति एवं तर्क जीवन की अनुभूति की बाणी देता है नये काव्य स्मॉ नयी शक्तियों को पल्लवित एवं पुष्पित करता है। चेतन और अचेतन, विषय और विषयी, जन्तु और वायु, मानव और प्रकृति दो विरोधी तत्वों का समन्वय भी करता है तथा उसकी दुनिया पूरी तरह नहीं होती है।³ स्वच्छन्द का व्यापार अन्वेषण में उभड़ने वाले अनेक भाव शक्तों का उद्दाय प्रवाह है जो अव्यक्त प्रेरणा से अव्यक्त की मितनोत्प्रेक्षा में निष्प्राण कवि कंठ से फूट पड़ता है। जिसके तीव्र प्रवाह में पड़कर लट्टियाँ तथा परम्पराओं की गतिम शिलाएँ पिस पिस कर बालुका कणों में परिवर्तित हो जाती हैं, निषमों के शीत सधार बह जाते हैं तथा ठन्डों के मूल टूटने लगते हैं। जो उन्मुक्त प्रकृति के बीच विस्तृत झुंडों पर ऐसे बनी उपबना की सौन्दर्यलुपमा प्रतिविम्बित एवं जन-जन-रजन करता हुआ अनियमित एक गति से प्रवहमान जाने किछ और चल जाता है।⁴

1. डा० नामवर सिंह, काव्यवाद, पृ० 15

2. डा० रामचन्द्र मिश्र, ग्रीष्म पठक और हिन्दी का पूर्व स्वच्छन्दतावादी काव्य (प्र० सं०) पृ० 46.

3. डा० अबल सिंह, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ-पृ० 44

4. डा० बगदीश मुंडा, स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का दार्शनिक विवेचन, पृ०-9.

उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचार करने से पता चलता है कि विभिन्न परिभाषाओं में स्वच्छन्दतावाद की भिन्न भिन्न विशेषताओं का निस्मरण है । किन्तु कुछ ऐसे सामान्य तत्व भी समाहित हो गये हैं जो स्वच्छन्दतावाद के स्वल्प भी स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त हैं । सामान्यतः कह सकते हैं कि भावावेग जन्म कल्पना प्रकृता स्वातन्त्र्य लालसा आत्म परकता, परम्परा विहित कानूनों एवं रीतियों का त्याग, व्यक्ति मन की निजी अनुभूतियों का अशिथिलीकरण, प्रकृति पर मानवीय चेतना का आरोप, मानववाद की प्रतिष्ठा लोक जीवन का चित्रण आदि तत्वों से युक्त समन्वयात्मक दृष्टि से युक्त सरलतम शैली में व्यक्त भावोन्तर्जना ही स्वच्छन्दतावाद है, जिसमें परस्पर दो विरोधी तत्वों को समन्वित करने की चेष्टा रहती है ।



द्वितीय-अध्याय

स्वच्छन्दतावाद का सैद्धान्तिक विश्लेषण।

(क) स्वच्छन्दतावाद का भाव बौद्ध

(ख) स्वच्छन्दतावाद की शिल्पगत विशेषताएँ

(1) स्वच्छन्दतावाद का भाव-बोध -

स्वच्छन्दतावादी कलाकार बाह्य आत्मबल की अपेक्षा अन्तर्गत की स्थितियों पर कहीं अधिक आश्रित होता है। वस्तुतः स्वच्छन्दतावादी सर्वना में आत्यिक पक्ष का ही प्राधान्य होता है। स्वच्छन्दतावादी कलाकार अपनी आन्तरिक वृत्तियों की कल्पनिक अभिव्यक्ति नितान्त वैयक्तिक भूमिका में करने का पक्षपाती होता है, इस प्रकार उसकी निजी आजादी, आन्तरिक संवेदना एवं अनुभूति की गहनता प्रगीतों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। व्यक्ति के निजी मनोवेगों का उद्दान प्रवाह समस्त परम्परावादी नियमों को तोड़कर कहीं प्रकृति में अपना प्रतिबिम्ब निहारने लगता है तो कहीं सहभागी मानव को देखाकर सान्त्वना प्राप्त करता है। अनुभूति ही यह स्थिति कवि मन को विक्षुब्ध भी कर देती है। स्वातन्त्र्य प्रेमी साहित्यकार समसामयिक असंगतियों से असन्तुष्ट होकर कभी अतीत गौरव की याद में डूब जाता है तो कभी कल्पना के मनोरंजन में विचरता कर स्वर्णिम भाविष्य के सपने सजाने लगता है। स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार को कभी प्रकृति अपने निजी सुहा, दुहा, दर्श, शोक विधाद से रूढ़ि सज्जत जान पड़ती है तो कभी समान धाम मानव उसकी सम्वेदना का विषय बन जाता है। स्वभावतः विद्रोही होने के कारण अनुभूति की ऐसी स्थिति कवि को सर्वनात्मक, विद्रोह एवं नवीनता, स्वातन्त्र्य सौन्दर्य, प्रेम, विस्मय, रहस्यानुभूति, असन्तोष विधाद, अतीत प्रेम, प्रकृति प्रेम, लोक जीवन के निकट लाकर लाड़ा कर देती है, और स्वच्छन्दतावाद का भाव-बोध बनती है।

सर्वनात्मक कल्पना

कल्पना अंग्रेजी के इमेजिनेशन शब्द का हिन्दी पर्याय है जो कि इमेज से बना है। इमेज का अर्थ है चित्र अथवा छवि तथा इमेजिनेशन या कल्पना का अर्थ हुआ बिम्ब दृष्टि या छवि निर्माण। हिन्दी में भी कल्पना शब्द उत्पन्न धातु से निःसृत (स्तप् + कृन् + आ) है, जिसका अर्थ है (करने की) सामर्थ्य रखना, सृष्टि करना, सुजन करना। निःसन्देह कल्पना सुजन कर्त्री शक्ति एवं कवि-प्रतिभा का अनिवार्य अंश है।¹ कल्पना मस्तिष्क की सबसे प्राणवान क्रिया है, और स्वच्छन्दतावादी साहित्य के लिये कल्पना को आत्मा कहें तो अप्युक्ति नहीं।

कल्पना सुजनकर्त्री शक्ति है, जीवन के अपूर्ण स्थानों को भरने का साधन है। कल्पना की आध्यात्मिकता में विश्वास रखने वालों के लिये तो कल्पना इतनी महत्वपूर्ण है कि उसके अभाव में कविता ही असम्भव है।² भाव के स्तर पर दृष्ट वस्तुओं में अदृष्ट सम्बन्ध सूत्रों को छान निकालने वाली मानस क्रिया का नाम कल्पना है।³ कवि कल्पना के द्वारा अज्ञात वस्तुओं को स्पष्ट देने में समर्थ होता है। वायवीय शून्यता को पर्याय की अभिव्यक्ति कल्पना के द्वारा ही सम्भव है। भावानुभूतियाँ कल्पना का सस्पर्श पाकर ही काव्य या कला के रूप में उभरती हैं। कल्पना कौरे तथ्य कथान से 'कुछ अधिक' ही काव्य और कला का प्रेम और श्रेय है। धूमिल अतीत एवं अज्ञात भविष्य तथा विस्मृत कथानक को व्यवस्थित रूप देना भी कल्पना का ही कार्य व्यापक है।

1. C.M. Bowra: The Romantic Imagination; P.1

2. Ibid: P.3

3. डा० कैदारनाथ सिंह: कल्पना और (आवावाद) पृ० 3.

डा० रामेश्वर लाल ङण्डेलवाल के अनुसार 'आंधी में दहकते अंगारे के समान जाग्रत कल्पना नई नई विचार भाव-भावों को जोड़ती है, अभिव्यक्ति की ली-सी नई भावनाओं का आविष्कार करती है और अद्यावधिक अज्ञात मनोतों को की जाय निरूपण का होस्ता दिखाती है। कल्पना का यह उद्देश कवि के जीवन तथा अन्तर्मन की स्फूर्ति व नई दृष्टि का ही परिणाम है। अंग्रेजी कवि समीक्षक कार्लिज ने व्याख्या की संश्लेषणात्मक और अलौकिक शक्ति को कल्पना कहा है उसके अनुसार 'कल्पना अनेकता की पृष्ठ भूमि में विद्यमान एकता का बोध कराती है'¹।

भारतीय मनीषी आलोचकों ने भी कल्पना को स्पष्ट करने में विभिन्न मत व्यक्त किये हैं-डा० श्याम सुन्दरदास के अनुसार - 'मन की एक विशेष क्रिया की 'स्मरण' शक्ति द्वारा सपित अनुभावों को विभाजित कर और फिर उनके पृथक्-पृथक् भागों को वृत्तानुसार जोड़कर हमने मन में एक नवीन व्यक्त की रचना कर ली, जिसका अस्तित्व वास्तव जगत् में नहीं है। परन्तु जिसका स्वतन्त्र चित्र हमारे मन में रहता है। मन की इसी क्रिया को कल्पना कहते हैं।'²

आचार्य शुक्ल के अनुसार- 'जो वस्तु हमसे अलग है हमसे दूर प्रतीत होती है, उसकी मूर्ति मन में लाकर उसके सामोप्य का अनुभाव करना ही उपासना है। साहित्य वास्तव इसी को भावना कहते हैं, और आजकल के लोग कल्पना।'³ डा० नगेन्द्र ने कल्पना की मनोवैज्ञानिक व्याख्या कुछ इस तरह की है- 'एक प्रकार से अचेतन सत्ता में स्वप्नावस्था है वही चेतन दशा में कल्पनावस्था समझनी चाहिये।'⁴

1- डा० रामेश्वर लाल ङण्डेलवाल: समीक्षा के वातापन; पृ०-51.

2- डा० राम अन्धा दिव्येदी, अंग्रेजी भाषा और साहित्य, पृ० 119.

3- डा० श्याम सुन्दर दास साहित्यालोचन (तेरवा संस्करण) पृ०-21.

4- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: रस मीमांसा (तृतीय संस्करण) पृ०-21.

5- डा० नगेन्द्र: आस्था के चरण (प्र० संस्करण) पृ०-3.

“ विज्ञासा की तीव्रता विज्ञासु के मन में एक दूसरी शक्ति को जन्म देती है, जिसके द्वारा मन उस वस्तु के अन्तस्था एवं अन्तस्थात में प्रवेश करता है । इस शक्ति का नाम है कल्पना । ”

उपर्युक्त विवेचनों से स्पष्ट है कि कल्पना कवि या कलाकार के लिये वह शक्ति है जिसकी सहायता से वह अन्य मनुष्यों की चिन्ता-वस्थाओं तथा मनोदों की सदानुभूति पूर्वक व्यक्त कर सकता है । स्वच्छन्दता साधित रूप के लिये तो कल्पना का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है । रोमाण्टिक कवि या कलाकार के लिये कल्पना अन्तर्दृष्टि दापिनी शक्ति है । नवीन अनुभूति की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में कल्पना कवि या कलाकार का मौलिक गुण तथा कला की आत्मा है । स्वच्छन्द कवि या कलाकार कल्पना की तूतिका से नक्त की नक्त करते समय भी असत से असत की सृष्टि कर देता है कवि का यह पुनः पुनः भी कल्पना शक्ति का अर्थ है । कल्पना जहाँ रोमाण्टिक कवि की भावानुभूतियाँ उसके सौन्दर्यबोध से उसके आन्तरिक स्वप्नों को बिम्बों में स्थापित करने के साध-साध जीवन की यथार्थ असमृतियों से समस्त कवि मानस की परिश्रुति के लिए कल्पना के मनोरंजन का निर्माण करती है । आचार्य सजारी प्रसाद द्विवेदी ने कल्पना के अविरत प्रवाह से युक्त मानसिकता को रोमाण्टिक साहित्य की उत्पत्ति कहा है । निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कल्पना कला और साहित्य के लिये विशेषकर स्वच्छन्दतावादी कला और साहित्य के लिए नींव या पत्थार है । कल्पना की नींव जितनी सुष्ठु परिष्कृत होगी कला, या साहित्य का प्रसाद भी उतना ही भाव्य एवं सुभावना होगा ।

1. डा० नामवर सिंह: छायावाद (द्वि० सं०) पृ० ८२

2. डा० देवराज उपाध्याय: कृत रोमाण्टिक साहित्य शास्त्र (भूमिका) पृ०-२

अनुभूति:

स्वच्छन्दतावादी काव्य के प्राणभूत तत्त्वों में अनुभूति की प्रमुख स्थान है। अंग्रेजी साहित्य में अनुभूति का अर्थ बड़े व्यापक रूप में प्रयुक्त होता है। कभी इसका अर्थ चेतना के रूप में किया जाता है तो कभी मानव अनुभव के रूप में स्वीकार किया जाता है। मनीषिज्ञान में अनुभूति को बाह्य परिणाम न उत्पन्न करने वाली आन्तरिक क्रिया माना गया है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार-
 'वह वस्तु जो कल्पना के विविध अंगों और मानस छवियों का नियमन करती है, अनुभूति कहलाती है।' अनुभूति काव्य के सम्पूर्ण वैधिय में एकत्व स्थापित करने वाली शक्ति है। अनुभूति एक रचनात्मक प्रक्रिया है। जीवन में परिस्थितियों के बदलते से साधा-साधा अनुभूति भी बदलती रहती है। 'अनुभूति वास्तविकता नहीं बल्कि वास्तविकता सम्बन्धी भावना है। इसलिये वह वास्तविकता का एक अंश या पल्लू है। अनुभूति वास्तविकता की जगह नहीं ले सकती, उसकी सार्थकता इसी बात में है कि वह वास्तविकता को रचनात्मक रूप दे सके।'²
 मानव मन के निजी अनुभव प्रसन्नता, दुःख-सुख, प्रेम, रस, विषाद, शृणा, शोध आदि भाव अनुभूति में निहित हैं। अनुभूति ही काव्य प्रेरणा का स्रोत है। अनुभूति का सम्बन्ध कवि के रागात्मक हृदय से होने के कारण उसकी सम्बन्धता हृदय की छू लेने वाली होती है। अनुभूति वह साधन है जिससे मानव हृदय को सम्प्रेषित किया जाता है। भाषा की कृत्रिमता तथा बनावटी पन से अनुभूति की सच्चाई में बाधा उत्पन्न हो जाती है।

1. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी: नया साहित्य नये प्रश्न (द्वि० अ०) पृ० 146

2. डा० नामवर सिंह: इतिहास और आलोचना (संस्का० 1962) पृ० 65-66.

अतः कविता की भाषा जितनी सरल, सुबोध, आसान और सादगी लिये होगी अनुभूति की व्यपञ्चित में उतनी ही सच्चाई होगी। डा० अजब सिंह ने अनुभूति को स्पष्ट करते हुए उसमें निम्न तत्वों का होना अपेक्षित माना है—(1) वह वस्तु जो अनुभाव का विषय है। (11) विषयी या आत्मा जो अनुभाव करती है। (111) विषय और विषयी के संघात से उत्पन्न संवेदन¹। 'इन तत्वों के समावेश से अनुभूति में विकिर्षता आना स्वाभाविक है। स्थान परिवेश और समय की गतिशीलता से अनुभूति भी बदलती रहती है। किन्तु काव्यात्मक अनुभूति की यह विशिष्टता है कि वह अत्यन्त उच्चस्तरीय होने के कारण समस्ता एवं एकस्मता से सिन्त होती है।

स्वच्छन्दतावादी काव्य के लिये अनुभूति का महत्व असीम है। रामाष्टिक काव्य बुद्धिप्रधान न होकर अनुभूति प्रधान होता है। अंग्रेजी विद्वान हाउसमैन² ता अनुभूति को कविता स्वीकार करता है। बर्डसवर्थ³ की बात भी कुछ इसी से मिलती जुलती है उसका कहना है कि, 'कविता शान्ति के क्षणों में स्मरण किये गये मनीषणों का स्वच्छन्द प्रवाह है। स्वच्छन्दतावादी काव्य के लिये अनुभूति की प्रामाणिकता सर्वविदित है। चूँकि अनुभूति व्यक्ति मन की एकदम निजी चीज है। इस कारण स्वच्छन्दतावादी काव्य व्यक्तिवादी होता है। अनुभूति सच्चाई के अविष्यक्त किरण का सबसे शशक्त माध्यम बनता है। है प्रगीत अतः स्वच्छन्दतावादी काव्य का प्रगीतात्मक होना भी परम आवश्यक है।

1. डा० अजब सिंह आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 17

2. Edwards Houseman : The name and nature of Poetry, P. 101.

3. William Wordsworth, Preface to lyrical Ballads.

व्यक्तिवाद

व्यक्तिवाद शब्द अंग्रेजी में इण्डिविजुलिज्म का हिन्दी पर्याय है। व्यक्तिवाद 'स्वच्छन्दतावाद' की जीवन्त चेतना है, जो औद्योगिक व्यक्ति के पलस्वस्म निर्मित होने वाली पूँजीवादी व्यवस्था के विरोध में उद्भूत हुआ। बीसवीं सदी की काव्य सीमा में प्रवेश करने पर हिन्दी कविता के पाठक का ध्यान आकर्षित करने वाली एक प्रमुखा विशेषता है वैयक्तिक अभिव्यक्ति। मध्ययुग के सन्त भाक्त एवं रीति कवि प्रायः निर्व्यक्तिक ढंग से अपनी बात कहते थे। काव्य में अपने निजी प्रणय सम्बन्धों की चर्चा करने की बात तो उस समय सोयी भी नहीं जा सकती थी। इस व्यक्ति रीति सामाजिकता का बहिष्कार कर आत्मनिष्ठ और आत्मसीन स्वच्छन्दतावादी कवि ने वैयक्तिक विद्रोह का उद्घाटन किया। आत्मन्या उसका विषय हो गया और में उसकी शैली।

हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवाद मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया का स्वस्म है। हिन्दी का बहुत कुछ साहित्य पूँजीवादी युग में ही लिखा गया है। पलस्वस्म व्यक्ति को विकसित होने के लिये उचित साधन नहीं प्राप्त हुए। इस कारण व्यक्ति की कर्म जिज्ञासा बृद्ध गयी, और वह अन्तर्मुखी हो बैठा, बाह्य संसार से दृष्टि छीनकर उसने अन्तर्मुखी मन पर दृष्टि डाली। उसका अहं हो गया और परिस्थित का सत्य हो गया। उसी के विविध रूपों में ही उसने कल्पना के रंग भरे।

1. डा० रामवर सिंह आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ पृ० 17-18

2. प्रधान सम्पाद डा० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य कौश भाग-1 (पारिभाषिक शब्दावली) दि० 80 सं० 8090-809

कवि के इस व्यक्तित्ववादी रूप में ही स्वानुभूतिवन्ध आत्मनिष्ठ, वैयक्तिक स्वात्मपरक एवं स्वानुभूति परक आदि नामों से जाना गया ।

यों तो साहित्य मात्र रचयिता की आत्माभिर्व्यक्ति होती ही है किन्तु स्वच्छन्दतावादी काव्य में उसकी आत्माभिर्व्यक्ति मूल्य और सीधे ढंग की होती है । उसमें कवि अत्यन्त आत्मीयता के माध्यम बिना किसी संकोच के, पूर्ण स्वच्छन्दता पूर्वक अपनी स्वानुभूति व्यक्त करता है । व्यक्तित्ववादी काव्य की इसकी प्रमुखा विशेषता है सदैवात्मकता गहन भावनुभूति आत्मनिष्ठ काव्य के रूप में व्यक्त होती है । और यही सदैवात्मक तीव्रता एवं गहन भावनुभूति गीति काव्य के रूप में अभिव्यक्ति पाती है ।

स्वच्छन्दतावादी वैयक्तिकता का प्रचार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हुआ । चाहे पार्थिव प्रेम की कविता हो या आध्यात्मिक प्रेम की चाहे राष्ट्रीय या मानवतावादी, सर्वत्र कलाकार अकेला योद्धा के रूप में समाज के बन्धनों से मुक्ति पाने के लिये जुझता हुआ दिखार्ह पड़ता है । कवि-मानस की उदासी, वेदना, चिराशा, कृंता, सुखा, दुःखा, उत्साह उलटकर व्यक्त होने लगे । चेतन और अचेतन प्रकृति कवि की निजी भावनाओं के रंग से सिक्त हो गयी । प्रेम आदि की निजी अनुभूतियाँ को व्यक्त करने का अशुभ पूर्व साक्ष्य स्वच्छन्दतावादी कलात्म्य की निजी एवं मौलिक विशेषता रही 'पन्न' की 'उच्छवास' और आसू की धार्मिक निराशा का 'विजती बादल' और इसी वैयक्तिक विद्रोह के अग्रदूत हैं । वैयक्तिकता अर्थात् स्वत्व निर्वाह की यही भावना रोमांचित कवि में आत्म का गौरव, आत्मसम्मान, तथा आत्म विश्वास पैदा करती है ।

मानववादः

पश्चिमी जगत में 'मध्यकालीन असंगतियों' को समाप्त करने वाली विचार धाराओं में 'मानववाद' एक प्रमुखा विचार धारा है । मध्यकाल

के धार्मिक पाटाटापी समस्त जीवन मूल्यों और प्रतिमानों का स्रोत किसी देवीय शक्ति को स्वीकार किया जाता था। मनुष्य का स्थान निश्चय ही उस देवीय शक्ति के अधीन था। मानवतावादी ने उस दिव्य शक्ति का निषेध कर धरती के वासी मनुष्य की प्रतिष्ठा की और अमानवीय यान्त्रिकता से उसे मुक्ति दिलाई। नैतिकता का सौन्दर्यबोध तथा अन्य आचार विचारों का प्रतिमान मनुष्य को स्वीकार किया गया। पृथ्वी पर मानव है बड़ा कर कोई नहीं। मानव के प्रति उत्तरदायी होना मानववादी कलाकार के लिये अजीब है।

वस्तुतः मानववाद परलौकवाद, अध्यात्मवाद और देवतावाद के विरोध में मानव केन्द्रित बुद्धिवाद, भौतिक वादी एवं विज्ञान वादी जीवन दर्शन है।

बुद्धिवाद तथा वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप प्रकृति के गूढ़ रहस्य जैसे जैसे अनावृत होने लगे, त्यों त्यों मानव के मन में प्रकृति तथा ईश्वर के प्रति अनास्था का भाव जागृत होता गया। मानव की कार्य क्षमता से आत्म-विश्वास की बड़े मजबूत होती गयी। राजनीतिक अधिकारों की मांग से स्वतन्त्रता, समानता एवं विश्वबन्धुत्व की भाषना चलवती होती गयी। यातायात और संचार साधनों के विकास ने संसार के विशाल क्षेत्र को एक कुटुम्ब में ला समेटा। बीसवीं सदी के मनुष्य में जिस नूतन बोधा और जागृति ने जन्म लिया उसके कारण उसने धार्मिक सँदियों का उच्छेदन कर दिया। और परम्परा से आते हुए अन्ध विश्वासों को तोड़ डाला।

मानववादी कला दृष्टि जीवन की गहराइयों और मनुष्य की प्रकृतिगत विशेषताओं से उद्घाटन को बहुमान प्रदान करती है।

1. डॉ० रामेश्वर लाल ठाण्डेलवाल, अग्रशेखर प्रसाद: वस्तु और कला

(1980) पृ०-105 •

मानववाद पाशविकता के चित्रण को मानवीय अस्तित्व के लिये एक भाषावस्था के रूप में स्वीकार करता है ।

मानववाद हर चीज का औचित्य विधायक मनुष्य को मानता है । मानववादी साहित्यकार का गुण है : स्वतन्त्र और उत्तरदायी होना, मुक्त और प्रहणशील बनना, अनुभाववादी और ऐच्छिकता परक होना । वह साहित्य में निरपेक्षप्रतिमानों को अस्वीकार करता है तथा प्रचलित विषयों और स्थानों में बंधा हुआ नहीं होता । वर्तमान विश्व जीवन की सकरापन्न दशास्था स्थिति से मुक्ति पाने का उपाय आज मानवीय विश्वास और आस्था द्वारा ही सम्भव है । कल्पित ब्रह्म अज्ञात सत्ता के द्वारा नहीं । विश्वयुद्धों के आतंक के निवारण के बावजूद मनुष्य-मनुष्य में विश्वास भाव घटने पर ही मानववादी विचार धारा के अपेक्षित महत्व को और भी अधिक गहराई से समझा जा सकता है । नये साहित्य के सृजन में इस विचार धारा के योगदान से-मानव के चिन्तन क्रम में, व्यवहार प्रणाली में, चेतनायें से गतिमान स्तरों में, राष्ट्र की संघातन शक्ति में और संसार की समस्त गतिविधियों में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया परिणाम यह हुआ कि साहित्य और कला में जहाँ देवताओं का वर्णन होता था वह स्थान मनुष्य ने ले लिया । इस परिवर्तन की वैधिली शरण गुप्त के नाम और सीता तथा हरिऔध जी के प्रिय प्रवास में राधा और कृष्ण में देखा जा सकता है, जहाँ वे देवीय या दिव्य शक्ति के प्रतिस्म न होकर मात्र साधारण मानव के रूप में चित्रित हुए हैं ।

विद्रोह एवं नवीनता

स्वच्छन्दतावादी साहित्य के विद्रोह एवं क्रान्ति की नींव पर ही अपने रूप का निर्माण किया । अंग्रेजी के रोमाण्टिसिज्म की पूर्ण पीठिका में प्रोस की राज्यक्रान्ति, अमेरिका का स्वाधीनता संग्राम एवं

औद्योगिक क्रान्तियों की प्रभुता हाथ रहा। साहित्यकार भी इन क्रान्तियों से अछूते न रह सके, फलतः स्वच्छन्दतावादी विचारधारा ने जीवन के हर पल्लु में एक साहित्यिक क्रान्ति का बरण किया। ईश्वर तथा धर्म के प्रति अनास्था का भाव प्रकट हो गया। उसका स्थान मानव तथा बुद्धिवाद ने ले लिया। राजनीति धर्म, समाज और साहित्य में सृष्टियों से युक्त होने की लालसा जाग उठी। पूँजीवादी तथा सामन्तवादी व्यवस्था के स्थान पर समाजवादी विचारधारा का प्रश्न मिलने लगा। इसी वृक्ष साहित्यिक क्रान्ति का प्रथम संचाहक बना।

पद्यार्ण्य जगत् की असंगतियों ने आदर्श में प्रतिष्ठित जीवन मूल्यों को एकदोर दिया। रोमाण्टिक कलाकार का यह विद्रोह जहाँ एक ओर सामाजिक सृष्टियों, विषमताओं वन्धनों उत्पीड़न, दमन शोषण एवं जीवन की कटु असंगतियों एवं विद्वपताओं के प्रति था, वहीं दूसरी ओर साहित्य की जड़ता एवं कृत्रिमता के प्रति। इसके अतिरिक्त रोमाण्टिक कलाकार स्वयं के अन्त और बाह्य के द्वन्द्व में सुलग रहा था। हिन्दुस्तान के 1857 के विद्रोह, साम्राज्यशाही, पूँजीवादी व्यवस्था तथा पश्चिम के नवीन ज्ञान विज्ञान की जानकारी ने भारतीय मनीषा को उद्वेलित कर दिया। साहित्यिक सृष्टियों से मुक्ति पाने के लिये कवि मानस छटपटा ही रहा था। परिणाम यह हुआ कि कवि धेतना के तार विद्रोह के इस नवीन संस्पर्श से हनकना उठे। यही कवि मेधा का वैयक्तिक विद्रोह स्वच्छन्दतावादी साहित्य के मूल में व्याप्त है।

यही बात स्मरणीय है कि स्वच्छन्दतावादी कलाकार या कवि का विद्रोह ध्वसात्मक न होकर रचनात्मक होता है। क्योंकि यह विद्रोह पूर्णतः परिवर्तन पर आधारित होता है। विद्रोह निष्पत्तात्मक होता है तो परिवर्तन प्रगति और नवीनता का संचाहक।

अनुपयुक्त का विरोध और निषेध तथा उपयुक्त तथा नवीन का सूजन स्वच्छतावादी कलाकार का अभीष्ट है। स्वभावतः स्वातन्त्र्यप्रिय होने के कारण रोमाण्टिक कवि या कलाकार पिष्ट वैश्वीय रीति रिवाजों, मान्यताओं, परम्पराओं नैतिक बन्धानों सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों एवं अन्धा विश्वासों के प्रति विद्रोह का अभियान छेड़कर नूतनता का वरण करता है। नवीन सूजन के सन्दर्भ में योग उसका कार्य है। उसके उपादान नये ही चाहे पुराने परागति नये में होने की चाहिये।

नीति धर्म, साहित्यिक परम्पराओं और शास्त्रीय नियमों के विरुद्ध विद्रोह भाव को डॉ॰ अब्ब सिंह ने शैली के काव्य (प्रायेणोपस अनबाउन्ड) का सुन्दर उदाहरण देकर इस प्रकार स्पष्ट किया है- इस काव्य ने न केवल भाषा-शैली के क्षेत्र में ही विद्रोह किया अपितु विषय के क्षेत्र में भी नये मार्ग का अनुसरण किया। उसने नये नये साहित्यिक प्रयोग के जो सफल भी हुए। उन्होंने अभिजात के आधार पर सामान्य को भी अपना वर्ण विषय बनाया। उनसे लिये वस्तु का उदात्त सेना आवश्यक नहीं था, साधारण से साधारण वस्तु छण्डहर, छुड़ी पत्ती, स्मॉल चार्ज, बैस्टविण्ड (पश्चिमी हवा) शयन शान आदि वस्तुएँ काव्यात्मक चित्रण के लिये उपयुक्त थी। साधारण मानव के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति थी, अतः उनकी कविता के पात्र अभिजात्य या कुलीन स्थान पर सामान्य स्तर के हुए हैं। 'एक दीर्घाज्ञात से कवि के लिये, सम्प्रदाय, अक्षयवट और दरबार कल्पवृक्ष बनता जा रहा था, इस स्थिति का

1. डॉ॰ अब्ब सिंह: आधुनिक काव्य की स्वच्छतावादी प्रवृत्तियाँ

बदलना एक व्यापक उलट फेर के बिना सम्भव न था¹। यह व्यापक व्यापक उलट फेर ही रोमाण्टिक काव्य के मूल में व्याप्त है।

स्वच्छन्दतावादी कवि स्वतन्त्र रहना चाहता है।

किसी प्रकार का अंकुश उसकी नियति के विरुद्ध है। कवित्वम व्यक्त का कथन है कि-मे एक नियम का सुजन करूँगा, दूसरे के बनाये हुए नियम पर चर्चूँगा तो गुलाम ही बानूँगा; मेरा उद्देश्य सुजन करना है।²

वस्तुतः स्वच्छन्दतावादी कवियों ने स्थूल बन्धानों से विद्रोह कर सूक्ष्म कल्पना, सौंदर्यप्रियता तथा स्वतन्त्र भावना से शिक्त होकर नवीन मनोलोक का निर्माण किया। यौद्धिधास्ता का स्थान भावुकता ने ले लिया। अतीतिक्रम प्रेम के स्थान पर स्वाभाविक, स्वच्छन्द प्रेम का निस्पण होने लगा। विद्रोह के इस सन्दर्भ डा० नगेन्द्र का कथन द्रष्टव्य है- "जब जब स्थूल की प्रभुता असह्य होती गयी, तभी सूक्ष्म ने उसके प्रति आन्ति की है। इस आन्ति और इस विद्रोह के प्रोद्भावक रूप से जी मान संसार की आत्मा ने उन्मुक्त होकर गाये, वे ही छायावाद की कविता के प्राण हैं।"³

सौन्दर्य

सौन्दर्य शब्द का प्रयोग जितना सामान्य एवं व्यापक है उसका अर्थ उतना ही गूढ़ एवं विवादास्पद। सृष्टि के उत्पत्ति एवं विकास परम्परा में सहयोग देने वाले आदि तत्वों-सत्य, शिवम्,

1. महादेवी वर्मा: विवेचनात्मक गद्य, पृ० 52

2. C.M. Bowra : The Romantic imagination, P.22

3. डा० नगेन्द्र: सुमित्रसन्दन पत्र, (नवम् संस्करण) पृ०-2 .

सुन्दरम् में से सौन्दर्य तृतीय तत्त्व सुन्दरम् से सम्बन्धित है। सृष्टि का प्रथम तत्त्व सत्य है। शिवम उस सत्य का ही विवक्षित स्वरूपकारी रूप है, और यही स्वरूपकारी शिवम् अपने तृतीय विवक्षित रूप में समस्त जगत् की नैसर्गिक-सुषमा का आधार बनकर सौन्दर्य का रूप धारण कर लेता है। प्लेटों के अनुसार 'सौन्दर्य सृष्टि का मूल तत्त्व है, इसका स्थापन करना तत्त्व द्रष्टा का घरेलू लक्ष्य है। वह सत् का पर्याय है तथा प्रेयस से अभिन्न है। सौन्दर्य और प्रेम एक ही तत्त्व के दो वास्तविक पक्ष हैं। प्लेटिनस अनुराग के विषय की ही सौन्दर्य स्वीकारते हैं उनके अनुसार जो हमारे अनुराग का विषय है अतः वही सुन्दर है परम सुन्दर के साधन तादात्म्य की अभिलाषा सौन्दर्य धेतना का रहस्य है। सन्त आगस्तीन तथा एन्थिमस ने सौन्दर्य को ईश्वरीय तत्त्व माना है। उनके अनुसार ईश्वर शुद्धा और परम सौन्दर्य का प्रतीक है। विश्व का सौन्दर्य उसी का आभास है अतः सौन्दर्य मुख्यतः अपारिधाय ही होती है।

यहाँ यह बात स्मरणीय है कि वस्तु तथा द्रष्टा का पारस्परिक सम्बन्ध ही सौन्दर्य तत्त्व का विधायक है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धा आदि उपादानों के रूप में सौन्दर्य वस्तुगत धर्म है किन्तु दर्शक के अभाव में ये शब्द स्पर्श रूप रस गन्धा की अनुभूति ही नहीं हो सकती इस तरह सौन्दर्य व्यक्तिगत और सांस्कृतिक है। सौन्दर्य अपने आप में स्थिर नहीं, बल्कि निरन्तर नवीनता एवं बदलाव सौन्दर्य का अपेक्षित धर्म है। हाणो हाणो पन्नवतायुमेति तदैव समय रमणीयताया²।

1. गिल्बर्ट एण्ड क्रून्: ए हिस्ट्री ऑफ ऐस्थेटिक्स, (द्वितीय-संस्करण)

पृ० 44-45 (संभावना, वर्ण, अंक 2, पृ० 10 से उद्धृत)

2. माधकत शिशुपाल वधम् 4/11.

सामान्य रूप से किसी वस्तु का इन्द्रियागिराम, गुण सौन्दर्य है, जिसका सम्बन्ध लौकिकता से है। यही लोकेन्द्र सौन्दर्य मानव चेतना का विषय है जिसे प्रेम की सेवा दी जाती है। निरपेक्षा सौन्दर्य अनिर्वर्णनीय है। इसी अनिर्वर्णनिय सौन्दर्य को ही ग्रेस दिव्य चेतना या परम सत्ता का प्रतिरूप तथा दृष्टि की प्रेरक शक्ति मानता है।

यूँकि सौन्दर्य तत्त्वों का सम्बन्ध अनुभूति से अवश्य है, और अनुभूति की कलापूर्ण अभिव्यक्ति रूपना द्वारा ही संभव है। अतः सौन्दर्य रूपना से भी जुड़ जाता है। इस तरह यहाँ यह भी कह सकते हैं कि जहाँ-जहाँ रूपना का कार्य व्यापार है वहाँ वही सौन्दर्य है। डा० रामेश्वर तात जाण्डेलवाल सौन्दर्य का अवच्छेदक लक्षण आकर्षण की मानते हैं। उनके अनुसार जहाँ-जहाँ आकर्षण है, वहाँ वहाँ सौन्दर्य अवश्य है। अतः सौन्दर्य का स्वलक्षण आकर्षण है। सौन्दर्य की प्रतीति के लिये दृष्टा और संदर्भित वस्तु का गुण तथा उसके द्वारा उत्पन्न मनोभावों की सहज अपेक्षा होती है। व्यक्ति की रुचि ही आकर्षण की स्थिरता प्रदान करती है, तब यही आकर्षण प्रेम में परिणत हो जाता है। वस्तुतः जो सुन्दर होता है वह प्रेम्भ भी होता है। इस रूप में सौन्दर्य निरास्त पार्थिव व लौकिक है। अतः निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि सौन्दर्य जहाँ अपार्थिव, तथा अलौकिक है वही इसकी और लौकिक और पार्थिव भी।

डा० राम किलास शर्मा ने प्रकृति, मानव जीवन तथा तत्तित कलाओं को आनन्द दायक गुण का नाम सौन्दर्य कहा है।² स्वच्छय शंकर प्रसाद 'सौन्दर्य को चेतना का उज्ज्वल परदान तथा अनन्त

1- डा० रामेश्वर तात जाण्डेलवाल: अवशंकर प्रसाद - वस्तु और कला (प्र० सं०) पृ० 286

2- डा० राम किलास शर्मा: आस्था और सौन्दर्य (प्र० सं०) पृ०-20

अभिलाषाओं का प्रेरणा स्रोत मानते हैं। 'उज्ज्वल वरदान चेतना का, सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं जिसमें अनन्त अभिलाषा के सपने सब जगते रहते हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि पन्त सौन्दर्य का सम्बन्ध प्रजा से जोड़ते हैं-

“वही प्रजा का सत्य स्वप्न हृदय में बनता प्रणय अपार लीचनों में लावण्य अनूप लोक सेवा में शिखर अधिकार”²। “आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार- हमारी अन्तःसत्ता की वही तदाकार परिणित सौन्दर्य की अनुभूति है ... जिस वस्तु के प्रत्यक्ष ज्ञान या भावना से तदाकार परिणति जितनी ही अधिक होगी उतनी ही वह वस्तु हमारे लिये सुन्दर कही जायेगी। ४० हजार प्रसाद दिक्वेदी सौन्दर्य का जीवन का समग्र विकास कहते हैं। सौन्दर्य वस्तुतः एक सृजन व्यापार है। इस सृजन की क्षमता मनुष्य में अन्तर्निहित है। वह इस सौन्दर्य सृजन क्षमता के कारण ही मनुष्य है। इस सृजन व्यापार का अर्थ है बन्धानों से विद्रोह। इस प्रकार सौन्दर्य विद्रोह है-मानव पुत्रि का प्रयास है।

सौन्दर्य बोधा के सम्बन्ध में दो प्रकार की दार्शनिक दृष्टिणी उपलब्ध है। प्रथम वस्तु के बाह्याकार में सौन्दर्य देखाती⁵ हैं तो दूसरी आत्मा की अभिव्यक्ति की ही सौन्दर्य मानती है। इन दार्शनिकों का विचार है कि सौन्दर्य वस्तुओं में नहीं होता, अपितु ये वस्तुएँ दृष्टा के मानस में तरंगित सौन्दर्य सिन्धु में अवगाहन कर

1. जयशंकर प्रसाद: कामायनी (एकदश संस्करण) पृ०-112.

2. सुमित्रानन्दन पन्त: पल्लव, पृ० 87.

3. रामचन्द्र शुक्ल: चिन्तामणि भाग-1, (सन् 1938) पृ० 224.

4. डा० नामवर सिंह: दूसरी परम्परा की छाँव (प्र० सं०) पृ०-96.

5. डा० हरदश सिंह, 'सौन्दर्यानुभूति नामक लेख' समासौचक (आगरा फरवरी, 58) सौन्दर्य शास्त्र विशेषांक।

है तथा दूसरी आत्म परम् । विद्वानों ने सौन्दर्य को अनेक स्तरों में विभाजित किया है । विष्णु निस्पण की दृष्टि डा० रामेश्वर लाल डाण्डेय बाल ने इसे चार भागों में प्रस्तुत किया है- (1) शारीरिक (2) मानसिक (3) प्राकृतिक (4) तथा स्तागत । साहित्य की सीमा में जितना भी सौन्दर्य कल्पित किया जा सकता है, वह सब इन भागों में समाविष्ट किया जा सकता है¹ ।

स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार के लिये सौन्दर्य व्यक्ति मन की अनुभूति है । स्वच्छन्दतावादी सौन्दर्यानुभूति ऐन्द्रियता पर आधारित है । उसका उद्देश्य भी स्वतन्त्रता तथा सुख योग से सम्बन्धित है । स्वच्छन्दतावादी कवि पुनर्जागरण के समय सौन्दर्य की धार्मिक चेतना से विद्रोह करता है, साधु ही मानवीय चेतना को सौन्दर्य निस्पण का आधार बनाता है । मनुष्य होने के नाते वे मनुष्य के अतिरिक्त किसी और की गणना करना नहीं चाहते, मानवीय अनुभूतियाँ उनके लिये सर्वोपरि हैं² ।

सौन्दर्य के प्रति अटूट श्रद्धावान् होने के कारण स्वच्छन्दतावादी साहित्यकारों ने सौन्दर्य के प्रति प्रगाढ़ आस्था प्रदर्शित की । व्यक्तिपरक दृष्टिकोण रहाने के कारण रोमाण्टिक कवि वाह्य एवं वस्तुगत सौन्दर्य को अपने आन्तरिक एवं भावात्मिक सौन्दर्य के रंग में रंग कर प्रस्तुत करने लगा । सौन्दर्य विधायिनी कल्पना

1. डा० रामेश्वर लाल डाण्डेय बाल, वन शंकर प्रसाद, वस्तु और स्ता

पृ० 210

2. डा० अबध सिंह आधुनिक हिन्दी कविता में नव-स्वच्छन्दतावाद (पटना वि० वि० की डी० ए० डि० उपाधि के लिये स्वीकृत शोध प्रबन्ध) पृ० 185 .

के द्वारा रोमाण्टिक कवि प्रकृति, मानव एवं मानवोत्तर दिव्य सौन्दर्य में भी सौन्दर्य के आह्लादकारी रूप दिग्दर्शन करता है। कवि अपनी कल्पना से जिन बिम्बों प्रतीकों का विचार सौन्दर्योत्थान में करता है वे सभी ऐन्द्रिय, लौकिक तथा मानवीय संवेदना से सम्पन्न होते हैं। अतः स्वच्छन्दतावादी कवि का सौन्दर्य बोधा आदर्शवादी होने के साथ-साथ मानववादी भी है जिसमें उदात्तता एवं पवित्रता का समावेश होता है। उसकी सौन्दर्य भावना वैयक्तिक धारातल पर प्रस्फुटित होती है।

स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार का मन प्रकृति के साध-साधनारी सौन्दर्य में लिङ्गा रहता है। डॉ० अजय सिंह के अनुसार-प्रकृति अपाधा नारी का सौन्दर्य स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार की कल्पना को उद्देक्षित करता है। और वह अपनी सौन्दर्यानुभूति को बरबस कविता का रूप दे देता है। क्लासिक कवि भी सौन्दर्य प्रेमी होता है, लेकिन सौन्दर्य की क्लासिक एवं रोमाण्टिक भावना में अन्तर है। सौन्दर्य की क्लासिक भावनाओं में एक क्रम है जबकि रोमाण्टिक भावना में सौन्दर्य के साधन कूतुहल का मिश्रण है। अतः क्लासिक सौन्दर्यानुभूति में बाह्य सुशोभिता की प्रधानता रहती है तो सौन्दर्यानुभूति का रहस्य कवि की आन्तरिक भावना में निहित रहता है।

1. डॉ० अजय सिंह: आधुनिक हिन्दी काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ-पृ० 27.

प्रेम:

प्रेम किसी सुन्दर वस्तु दृश्य व्यक्ति के गुण प्रवण तथा स्व सौन्दर्य और सामीप्य के कारण उद्भूत उस व्यक्ति वस्तु और दृश्य के प्रति प्राप्ति का सख्त रागात्मक भाव है जो मूर्ते के मुह की तरह शाब्दातीत है। प्रेम सृष्टि की विरचन आदि शक्ति है। मानव ही नहीं वरन् पशु जगत भी जिसकी सीमा से अछूता नहीं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार- विशिष्ट व्यक्ति या वस्तु के प्रति होने पर लोभ वह सात्त्विक स्व ग्रहण करता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं¹। प्रेम की सत्वा सौन्दर्य द्वारा ही सम्भाव है। डा० रामेश्वर सात ढाण्डेलवाल प्रेम को इस रूप में व्यक्त किया है :- इच्छा (फीसिंग) ज्ञान (नोइंग) व क्रिया या संकल्पवृत्ति इन तीनों में प्रेम का सम्बन्ध इच्छा वृत्ति केन्द्र से है। पर इच्छा करना मात्र ही प्रेम नहीं है। वह काम भी हो सकता है और प्रेम भी। जब विशिष्ट इच्छा करते हैं तभी प्रेम कहलाता है। यह विशिष्ट इच्छा क्या है? किसी को चाहना और शुद्ध आनन्द के लिये चाहना। प्रत्यक्ष या परार्क्ष रूप से हमको आनन्द मिले और दूसरे को भी सुख मिले, वही प्रेम की मूलभूत भावना है²। वह भाव जिसके उत्पन्न होने से हृदयों के विचार संसर्ग और प्रतिस्तर सनाप्त होकर आनन्द में परिवर्तित हो जाते हैं प्रेम कहलाता है। प्रेमी को अपने प्रिय से मिलने की आकांक्षा प्रेम है। मिलन से उत्पन्न अनुभूत्यात्मक आनन्द प्रेम है।

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। चिन्तामणि भाग-1, पृ० 69.

2. डा० रामेश्वर सात ढाण्डेलवाल, आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य, पृ० 102.

प्रेम में विलस की तीनो वृत्तियाँ-इच्छा, ज्ञान, एवं क्रिया तीनो का सुखद संयोग होता है। प्रेम वस्तुतः इच्छा है जो ज्ञान का निर्देशन या नियन्त्रण पाकर विशिष्ट या संयत स्म ग्रहण करता है। प्रेम किसी भी स्म (भावित, दाम्पत्य, वात्सल्य, श्रद्धा) का हो, उसका मुख्य लक्षणा है आत्मा की तृप्त करना²। प्रेम केवल भाँगु या काम ही नहीं है यह काम का उज्ज्वल और परिष्कृत स्म है³। जब भाँगु व्यक्ति इच्छित सुन्दर वस्तु व्यक्ति या दृश्य का अवतीर्ण करता है, तो उसके प्रति अनायास ही उसका रागात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। अतः सुन्दर वस्तु, व्यक्ति, तथा दृश्य के प्रति दृष्टा के रागात्मक सम्बन्ध को प्रेम कहते हैं⁴। प्रेमी का सुन्दर वस्तु के प्रति दो प्रकार का दृष्टिकोण हो सकता है-(1) वस्तुपरक (2) और व्यक्तिपरक वस्तुपरक दृष्टिकोण में दर्शनीय वस्तु या व्यक्ति के गुणों की प्रधानता होती है और प्रेमी रमने वाले के स्म में रहता है। ऐसी स्थिति में दर्शनीय वस्तु या व्यक्ति के प्रति दृष्टा की रागात्मक प्रवृत्ति की चरमावस्था यही हो सकती है कि वह अपनी सीमाओं से युक्त होकर दर्शनीय वस्तु या व्यक्ति के साथ तादात्म्य स्थापित करते। व्यक्तिपरक दृष्टिकोण ग्राहक ही नहीं, विधायक भी होता है। वह वस्तु के या व्यक्ति के गुणों तक ही सीमित न रहकर उसे अपने ही रंग में रंगकर प्रस्तुत करता है।

1. डा० रामेश्वरदास जण्डेलवाल आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और शीन्दर्य (प्र० सं०) पृ०-102.

2. वही पृ०-106

3. वही पृ० 115.

4. वही पृ० 106

5. डा० जयसिंह आधुनिक काव्य की स्वतन्त्रतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 27.

प्रेमी की अपने प्रिय से मिलने की आकांक्षा प्रेम है । 'प्रेम वास्तव में राग का ही पूर्ण विकसित रूप है । राग और द्वेष दोनों ही वासना के रूप में प्रत्येक प्राणी में होते हैं, यही राग जब अंकुरित या व्यक्त होकर किसी व्यक्ति विशेष की ओर उन्मुक्त होता है तब 'लुभाना' कहलाता है और जब उस विशेष में जाकर स्थित हो जाता है तो प्रेम कहलाता है । सीधी बात यह है कि वासनात्मक अवस्था में हुआ राग ही 'अनुराग' या प्रेम है¹ । सात्त्विक प्रेम इन्द्रियातीत है । प्रेमी का अन्तःस्थल सूक्ष्म अतीन्द्रिय असीम सौन्दर्य के ध्यान से पवित्र अध्यात्म से जुड़ जाता है । ईश्वरी-मुक्त प्रेम इसकी धरम सीमा है । वासनामूलक प्रेम का आधार शारीरिक या स्थूल सौन्दर्य होता है । इसमें प्रेमी का इन्द्रिय तृप्ति मिलती है । आत्मबल को घुमना, स्पर्शकरना, रङ्ग सूँघना, आसिंजन करना वासना मूलक प्रेम की अभिव्यक्ति है । डा० छान्देलवाल ने प्रेम के निम्नलिखित रूप माने हैं- भक्ति, प्रणय या दाम्पत्य, वात्सल्य, प्रकृति प्रेम, विश्व मैत्री या मानव प्रेम, कुटुम्ब प्रेम, सेवक सेव्य प्रेम, सूक्ष्म के प्रति प्रेम, स्थूल के प्रति प्रेम, आत्म प्रेम या स्वप्रेम । संसार के सभी प्रेम इन रूपों में समाहित हो जाते हैं² । साधारणतः प्रेम से जो अर्थ हम ग्रहण करते हैं स्त्री पुरुष का पारस्परिक प्रेम, जो स्माकर्षण के माध्यम से प्रकट होता है । यह भी दो प्रकार का होता है :- पूर्वानुराग तथा वैवाहिक या दाम्पत्य प्रेम ।

स्वच्छन्दतावादी साहित्य में प्रेम के उपर्युक्त सभी रूप मिलते हैं किन्तु प्रमुखाता स्वच्छन्द प्रेम की ही मिलती है । रोमाण्टिक

1. सम्पादक-डा० नामवर सिंह: चिन्तामणि भाग-3, पृ० 232

2. डा० रामेश्वर लाल छान्देलवाल: आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य पृ० 113.

साहित्यकार के लिये प्रेम ऐहिक सान्निध्य पार्थिव आस्था है। अन्य प्रवृत्तियों की भाँति वह भी नितास्त भाँति है। रोमाण्टिक प्रेम संवेगात्मक आवश्यकताओं के साथ प्रेम की वैयक्तिक आवश्यकता की दृष्टि करता है। इस प्रकार रोमाण्टिक प्रेम, प्रेम के संवेग की दृष्टि अभिव्यक्त है। स्वच्छन्द प्रेम के लिये प्रेम की निर्विरोध अभिव्यक्ति आवश्यक है। प्रेम के अनुभूतियों को बिना किसी संकोच के उसे व्यक्त करने की किसी व्यक्ति में जितनी गहराई और गहनता आती है, उतनी किसी और अनुभाव में नहीं आ सकती। ऐसा स्वच्छन्द प्रेम उन्मुक्त परिदृश में ही सम्भाव है। स्वच्छन्दतावादी कवि अपने प्रेम प्रदर्शन में अत्यधिक साहस एवं निष्पत्ति दिखाने हैं। रोमाण्टिक कवि का प्रेम, जिसकी चरम परिणति रति है अत्यन्त मानवीय दंग है अनावृत रूप में व्यक्त हुआ है।

औद्योगीकरण के कारण प्रेम का आधार अधिस्त हो गया है। आज प्रेम का रूप क्रान्तिकारी अभिव्यक्ति का हो गया है। सर्वत्र क्रान्ति ही दृष्टि गोचर होती है, ऐसी स्थिति में प्रेम में भी क्रान्ति का आगमन हो गया है। प्रेम भाव एक मूल्य है। और बदलते हुए मूल्यों के रूप में उसका आस्तन आज के संदर्भ में होना आवश्यक है। आज का प्रेम तौकिक और वासनात्मक है। उसमें आध्यात्मिकता का आवरण नहीं है। उसमें सयोग-वियोग अन्य हर्ष-विषाद उदासी, दूटन, चूटन, अस्मिता, ईर्ष्या आदि का स्थान स्वर मुड़ार हुआ है।²

1. डॉ० अजय सिंह: आधुनिक हिन्दी कविता में नव-स्वच्छन्दतावाद

(पटना विश्वविद्यालय की डॉ०तिट्ट उपाधि के लिये स्वीकृत शोध-प्रबंध, अप्रकाशित) 1981, पृ० 178.

2. वही- पृ० 179.

प्रकृति प्रेम

मानव की घिर सहेरी होने के कारण प्रकृति उसके लिये अनन्त प्रेरणाओं का स्रोत रही है। अपनी गीद में जन्मे और पते मानव-शिशु का प्रकृति रागात्मक सम्बन्ध अत्यन्त सहज था। प्रकृति मानव की प्रेम भावना का आत्मबल बनकर प्रस्तुत हुई। अनन्त सौन्दर्य की विद्यापिका के स्म में भावुक मन के लिये प्रकृति अद्यतन आम्पाण का केन्द्र बनी हुई है।

यही कारण था कि काव्य भी प्रकृति की मोहक छवि से अलूता न रह सका। विशेष रूप में रोमाण्टिक काव्य में तो प्रकृति प्रेम का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वच्छन्दतावादी कलाकार के सौन्दर्यास्फुरण का अवलोकन स्रोत है। प्रकृति और मानव चेतना का एकीकरण स्वच्छन्दतावाद की प्रमुख विशेषता है। रोमाण्टिक कलाकार प्रकृति में अपने हृदय की अनुभूति का अवलोकन करता है। प्रकृति के उन्मुख स्वच्छन्द, विराट, एवं विविधातापूर्ण सौन्दर्य में रोमाण्टिक कवि ने अपने हृदय की प्रति-छाया का अवलोकन किया। प्रकृति पर चेतन सत्ता का आरोप कर अपने सुहा-दुहा, हर्ष, विषाद, उल्लास, आवेग आदि भावों की सहभाजिता के स्म में स्वच्छन्दतावादी कलाकार का कल्पना क्षेत्र का एक विस्तृत विवरण स्पष्ट प्राप्त हो गया। इस तरह अपनी विविधात्मकता के साथ प्रकृति रोमाण्टिक साहित्यकार के लिये, कभी गूढ़ सन्देशवाहिका, कभी अलौकिक सत्ता का आभास देने वाली, कभी उपदेशिका, कभी प्रिया, तो कभी सुहा-दुहा की सहयोगिका और कभी-कभी भाषावनी पिशाची के स्म में रोमाण्टिक कलाकार की जिज्ञासाशुक्ति का उद्बलित करती रही है।

इस तरह स्वच्छन्दतावादी प्रकृति सचेतन और मनुष्य की तरह गतिशील बन गयी। स्वच्छन्दतावाद से पूर्व उसका स्म प्रायः जड़ ही

वर्णन। आगस्तन या द्विषदेवी युग के इतिवृत्तात्मक वर्णन को पूर्ण रूप से तिरस्कृत कर दिया गया। इस सन्दर्भ में महादेवी वर्मा ने साध्य-गीत की भूमिका में अपनी बात इस प्रकार प्रस्तुत की है- 'छायावाद ने मनुष्य के हृदय में और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण हात दिये जो प्राचीन काल से विश्व-प्रतिबिम्ब के रूप में बला आ रहा था, और जिसके कारण मनुष्य की प्रकृति अपने दुःख से उदास तथा सुख में पुनर्जित जान पड़ती थी।' 'डा० नगेन्द्र का कथन है कि प्रकृति पर चेतना का आरोप छायावाद की प्रमुख विशेषता हो सकती है। छायावाद में प्रकृति-चित्रों की प्रचुरता है। कुछ विद्वानों की तो धारणा है कि 'छायावाद' का प्राण तत्त्व ही प्रकृति का मानवीकरण, अर्थात् प्रकृति पर मानव तत्त्व का आरोप है³।

निष्कर्षतः स्वच्छन्दतावादी कवियों के लिये प्रकृति परम आकर्षण और सजीवता की केन्द्र बिन्दु है। कहीं वह, प्रसाद के प्रेम रहस्यों का संकेत सूचक है, कहीं निराशा के दार्शनिक सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति करती है, कहीं पत के लिये नारी सौन्दर्य का प्रतिरूप, तो कहीं महादेवी के लिये वेदनासुभूति से युक्त सहचरी।

मानवीकरण

सामान्यतः प्रकृति पर चेतना का आरोपण मानवीकरण कहलाता है। साहित्य में अभिव्यक्त सार्थक एवं प्रभावी अभिव्यक्ति के लिये प्रकृति के जड़ पदार्थों पौराणिक ऐतिहासिक पाटनाओं, विचारों भावों

1. डा०अबन सिंह: आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ (प्र० सं०) पृ२३

2. महादेवी वर्मा: साध्यगीत (चतुर्थ संस्करण), पृ०-६

3. डा० नगेन्द्र : आधुनिक कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (तृतीय संस्करण) पृ०-१७

आदि पर मानवीय चेतन और क्रिया व्यापारों के आरोपण की प्रवृत्ति को मानवीकरण कहते हैं। मानवैतत्पर कथ्य विषय के वैशिष्ट्य को उभारने के लिये कवि तदनुसृत क्रिया कलापों एवं भावों का समान्तर निरूपण करता चलता है। जहाँ कथ्य विषय की सक्रियता प्रदान करने के लिये और चेतन स्तर में मूर्तित करने के लिए मानवीकरण अत्यन्त उपयोगी है।

साहित्य में मानवीकरण की प्रेरणा संवेदना के प्रत्यक्षीकरण के लिये होती है। मानव जगत् वस्तु के विविध स्तरों में जब अपनी चेतना का दर्शन करना चाहता है तब उसकी कल्पना उन वस्तुओं की ओर अभिसरित होती है दूसरे शब्दों में जहाँ वस्तुओं पर मानव चेतना का प्रतिबिम्ब ही मानवीकरण है।

स्वच्छन्दावादी साहित्य में प्रकृति का मानवीकरण प्रमुखा स्तर से नारी स्तर में ही हुआ है। प्रसाद की रात्रि नवमीयना कल्पना पुबली प्रतीत होती है, जिसका अंचल ध्वजा स्थापित से बार बार जासक पड़ता है और कवि स्वयं उसे अंचल संभातने के लिये आगाह करता है:-

पगली हा संभात ले कैसे कूट पड़ा तेरा अंचल

देहा बिछारती है मणिराजी अरी उठा वेसुधा घबल।²

तो 'पन्त' मण्डि में दुग्धा धावत गंगा को तन्वगी और गौर कर्णों नायका के स्तर में सैकल शीया पर शयन करते हुए देहाते है -

1. डॉ० रामकुमार वर्मा: साहित्यशास्त्र, पृ० 66

2. प्रसाद: कामायनी, पृ०-48.

उनके अनुसार :-

सैकल शैया पर दुग्धा धावत
तन्वगी गंगा ग्रीष्म विरल
लैटी है श्रान्त श्रान्त निश्चल,¹

निराला की सन्ध्या सुन्दरी मेघमय आसमान से उतर रही है-

दिवसावसत का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है,
वह सन्ध्या सुन्दरी परी सी,²

ताँ महादेवी कर्मा की रजनी तारों की जाती ओढ़कर बती आ रही
है :-

“रजनी ओढ़े आती थी
हिलमिल तारों की जाती,
उसके बिछारे बेभाव पर अब
राती थी उजियाती।”³

इस तरह स्वच्छन्दतावादी कवि ने प्रकृति को अपने भावों के अनुसार स्वयं के ढुंढा में ढुंढी एवं सुँढा में सुँढी देखा है। स्वच्छन्दतावादी कवि की प्रकृति सर्वत्र ही नारी भावना से ओत प्रोत है। और उसका इस प्रकार का चित्रण मानव की मुग्धा करके मन को लुगा लेता है।

वस्तुतः मानवीकरण की प्रक्रिया सदैव प्रकृति को चित्रित करती है। 'अमानव' में मानव-गुणों के आरोप करने की साधारण प्रवृत्ति या प्रक्रिया को मानवीकरण कहा जाता है।⁴ 'कला की शांति धर्म' भी धार्मिक भावना के आधार के लिए प्रतीकों की सृष्टि करता है। मानवीकरण इस प्रक्रिया का सार है। इसके अतिरिक्त कला

1. सुमित्रानन्दन 'पन्त' ग्रन्थ, पृ० 57

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पटिमल (सन्ध्यासुन्दरी) पृ० 135

3. महादेवी कर्मा आधुनिक कवि, भाग-1, पृ० 6

4. सैफुद्दीन रेन्द्र कर्मा हिन्दी साहित्य कोश, भाग 1, पृ० 640

में अभिव्यक्ति का मुख्य माध्यम स्वयं कलाकार है। उसके माध्यम से मूर्ति, चित्र, भाषन आदि में अभिव्यक्त होने वाली कला कलाकार की मानवता को भी अभिव्यक्त करती है। इसी से कलाकृति में मार्मिकता का आविर्भाव होता है। कला मानवीकरण द्वारा प्रकृति को स्थापनित करती है।¹

अतीत प्रेम (विशेष का मध्य युग)

स्वच्छन्दतावादी कवि अतृप्त इच्छाओं, काम-वासनाओं तथा कुंठाओं का दमन तो कर लेता है लेकिन विस्मृत नहीं कर पाता। अपनी दमित इच्छाओं की पूर्ति वर्तमान में सम्भव न समझ कर या तो वह 'सपना' के द्वारा स्वर्णिम भाविष्य के सपने संजोता है या फिर गौरव शाली अतीत विमल में अपने को विस्मृत कर लेता है। अतीत गौरव की गाथा गाकर वर्तमान को उन्मुख बनाने वाले कलाकार की अनुभूति राष्ट्रीयता की भावना से सराबोर होती है। अतीत गौरव (विशेष कर मध्य युगीन) के प्रति तत्कालीन भावना पश्चात्य रोमांटिक कवियों में देखी जा सकती है—कीट्स की 'लावेल्'... तथा ईव आफ सेंट एग्नस रचनाएँ, शैली की 'एमेनिस' कालरिब की एनशियन्ट मेरीनर, वायरन की चाइल्ड हेराल्ड कविताएँ मध्ययुगीन गौरव की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। इन ने स्वच्छन्दतावादी कविता को मध्ययुगीन कविता का पुनर्जागरण कहा है।

वास्तव वर्तमान से जब कला स्वच्छन्दतावादी कलाकार मधुरता से पूर्ण अतीत में भ्रमण करने लगता है। जीवन के अतीत की मधुरस्मृति उसे गुनगुनाने के लिये बाध्य कर देती है—दिनकर की हिमाचल कविता इसका प्रमाण है।²

1. संपादक डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य मंश, भाग 1, पृ० 640

2. डॉ० रामधारी सिंह दिनकर: रेणुका, हिमाचल कविता, पृ०-4.

राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्रीयता की भावना रोमांचितक काल के लिये एक प्रभावकारी तत्व रही। स्वच्छन्द कवि के अन्तर्गत में मुक्ति की तात्परा इसी राष्ट्रीयता की भावना का परिणाम है कवि ऐसी अभिव्यक्ति के लिये अतीत प्रेम की अनुभूतियों को अपनी अभिव्यक्ति का आधार बनाता है।

समय की दृष्टि से स्वच्छन्दतावाद एकलकी अग्रणी चेतना के उभरते स्वरों उद्भूत हुआ अपने जन्म के समय की तात्कालिक परिस्थितियों से प्रभावित होना संवेदनशील स्वच्छन्दतावाद के लिये अनिवार्य था। दमन चक्र के नीचे कराहती हुई आत्मा को जीतकरने स्वच्छन्द कवियों की मुक्ति तात्परा और विद्रोह भावना को उद्बुद्ध किया। राष्ट्रीय चेतना का यह प्रभाव, अतीत गौरव गान, वर्तमान के प्रति शोभा तथा राष्ट्र की स्वतन्त्रता छित पर मिटने की भावना के रूप में परिलक्षित हुआ। देशवासियों की दुरावस्था, विदेशी सत्ता के अत्याचार तथा समाज के उत्पीड़न से कवि-मानस राष्ट्रीयता की भावना से अभिभूत हो गया।

सामंती रुढ़ियों से नारी को मुक्त करके स्वच्छन्दतावादी कवि ने राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग दिया। स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार के लिये नारी रीतिशाल की शोभ्या नहीं है। "तिरस्कृत विधावा को हष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी पक्कि कहना, शोभ्या नारी के संग में पावन गंगा स्नान की कल्पना करना और उसे देवी माँ सहचरि प्राण कहकर पुकारना आदि बातें आधुनिक कवि के नारी आदर्श की सूचक हैं। छायावादी कवि ने नारी को अपमान के पक्ष और बहिष्कार के पक्ष से उठाकर देवी और सहचरी के उच्च आसन पर प्रतिष्ठित किया।

विस्मय तथा रहस्यानुभूति

विस्मय एवं रहस्या साहित्यकार की अन्तर्निहित प्रवृत्तिका परिचायक है, जिसमें वह अतीतिक सत्ता सम्बन्ध में कुछ जानने की इच्छा तथा सान्निध्य की अभिलाषा होता है ।¹ लौकिकता से विमुक्त होकर जब किसी अज्ञात, रहस्यमय, अतीतिक शक्ति के प्रति उत्सुकता विस्मय, जिज्ञासा, तालसा मिलनानुभाव व्यक्त किया जाने लगता है तब उस अनुभाव वैद्य अवस्था को रहस्यानुभूति कहते हैं ।² गांधर्व कवि को वास्तव संसार में व्याप्त अतीम सौन्दर्य में अद्भुत अज्ञात सत्ता का आभास मिलने लगता है । संसार के बन्धानों तथा अभावाँ से छिन्न कवि अन्तर्मुक्ति होकर 'रूपना लोक में व्याप्त एक अनन्तर, असीम, और अनन्त सत्ता के रहस्य को जानने के लिये जिज्ञासु हो जाता है । वस्तुतः यह विस्मय एवं रहस्यानुभूति स्वच्छन्दतावाद की नितान्त वैयक्तिक परिणति ही है । यहाँ यह बातस्मरणिय है कि स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार की रहस्य भावना सन्तकवियों के रहस्यवाद से नितान्त भिन्न है । सन्त कवि पहले रहस्यवादी साधक की वाद में कवि पर स्वच्छन्द कवि पहले कवि है बाद में रहस्यवादी । स्वच्छन्द कवि की रहस्य भावना में सन्त काव्य की ही रहस्य साधना के लिये व्यक्ति पवित्रता एवं समयशीलता नहीं है, उसका रहस्यवाद प्रकृति मूलक है, 'अतः स्वच्छन्द कवि की दर्शनदीर्घा में साधनात्मक रहस्यबोध के लिये कोई स्थान नहीं था । उन्होंने न तो काव्य की भाव भूमि पर ही रहस्यबोध को स्थापित करना चाहा ।² 'कहीं-कहीं 'निराला' आदि अद्भुत दर्शन के प्रभाव स्वल्प भास्तिमूलक रहस्यवाद के दर्शन भी हो जाते हैं ।

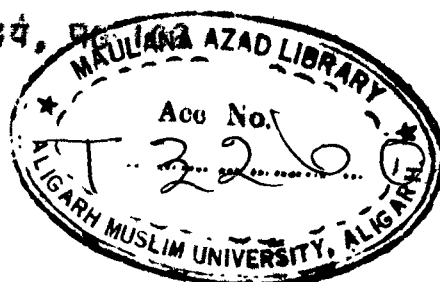
1. सम्पादक डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य काँश, पृ० 638

2. विश्वनाथ प्रसाद गाँडः आधुनिक हिन्दी काव्य में रहस्यवाद-पृ० 65

अवसाद विषाद एवं वेदना

स्वच्छन्दतावादी विचारधारा ने स्वच्छन्दतावादी कवि को नितान्त एकांतिक बना दिया। अपनी निजी अनुभूतियों यथा प्रेमादि में प्राप्त हुई असफलता ने स्वच्छन्दतावादी कलाकार को निराशा, विषाद, टीस, वेदना, पीड़ा, चोटन, कुंठा से सिक्त कर दिया। स्वप्न दृष्टा एवं कल्पना जीवी कवि को अपने स्थापित मूल्यों में निरन्तर मिली विफलता ने भाग्यवादी तथा पलायनवादी बना दिया। निराशा कवि ने वास्तविक असमंजसों तथा यथार्थ विद्रूपताओं से उधर अवैतनिक आत्मनिक एवं स्वप्नित दुनिया की शरण ली। यथार्थ से कतराकर स्वच्छन्दतावादी कलाकार 'कल्पना के मनोरंज्य में विचरण करने का आदी बन गया। जीवन संघर्ष में हारे हुए कवि ने स्वयं को अपने चारे में बन्द कर लिया। समाज में निरपेक्ष कवि की अभिरूपित में वैयक्तिक सुख दुःख, आशा-निराशा, शोक विषाद, तथा वेदना का अंकन होने लगा। अहं वादिता की अतिशयता के कारण कवियों की अन्तस्त वेदना, प्रेम की असफलता अन्य विषाद और निराशा का ज्वर प्रतिपाद्य बन गयी। और आशा हीन कवि मृत्यु के सपने देखने लगा। जीवन के प्रति अनुवर दायित्व का निश्चय हासो-मुहोती प्रवृत्ति थी। इस तरह जीवन और यथार्थ से पदव्युत एवं संस्कार हीन तत्वों से विस्थापित मनोवृत्ति को व्यक्त करने वाला साहित्य पलायनवादी साहित्य कहा जाता है।

1- डा० रामेश्वर लाल जण्डेलवाल आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य, पृ. 10



लोक संस्कृति तथा लोक साहित्य

लोक शब्द अंग्रेजी के लोक का पर्याय है, जिसका सामान्य अर्थ है सम्पत्ता की सीमाओं से परे का समाज। अतः लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है जो गले ही किसी व्यक्ति ने गढ़ी है, पर आज जिसे लोक समूह अपनी मानता है, तथा जिसमें वह लोक मानस प्रतिबिम्बित रहता है। जिसका प्रत्येक शब्द प्रत्येक स्वर, प्रत्येक लय और प्रत्येक लहजा सहस्र ही लोक का अपना है। इस तरह अविकसित, असभ्य आधुनिक शोत्रों के निवासी आदिम-जातियों के रूप में जीवन निर्वाह करने वाले ग्राम्यजनों के आचार विचार व्यवहार रीति-रिवाज संस्कार, मान्यताएँ परम्पराओं तथा ऐतिहासिक तथ्यों का समग्रता के साथ आकृतन लोक संस्कृति की सीमा रेखा में आता है। लोक संस्कृति का अभिव्यक्तिकरण विभिन्न लोक ध्वनियों में होता है जिसे लोक गीत कहते हैं। लोकगीत उत्तरका पूर्ण संगीत मय स्वर साधना तथा बनावटी सौन्दर्य से हीन सहजता तथा आन्तरिक मूल वृत्तियों तथा मनोवेगों से सम्बद्ध होता है। डा० सत्येन्द्र के अनुसार लोकगीत में संगीत की गति स्वर का कृत्रिम आरोह अवरोह-सरगम और स्वर ग्राम तथा लय ताल में नहीं बांधा जाता। लोक गीत का ताल और लय, आरोह-अवरोह, संवृत्ति-विवृत्ति समस्त ध्वनित्व स्वाभाविक मनोवेगों के अनुकूल रहता है²।

सामान्यतापूर्ण होने के कारण स्वच्छन्दतावादी कलाकार सामान्य जीवन सम्बन्धी विभिन्न आचार व्यवहार व्रत त्योहार अनुष्ठान तथा रीति-रिवाज, पूजा, परम्पराएँ, मान्यताएँ तथा निर्णय

1. डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश भाग-1, (दिव० १०) पृ० - 753.

2. डा० सत्येन्द्र : लोक साहित्य विज्ञान, पृ०-392-393.

स्वच्छन्दतावादी साहित्य की विषय वस्तु बनती है। लोक जीवन से तादात्म्य स्थापित कर लेने के कारण समस्त लोक के व्यक्तित्व में कवि अपने को समाहित कर देता है। उसकी रचना समस्त लोक की अपनी होती है। उसके लय, ताल, ध्वनि, अभिव्यक्ति शैली लोक जीवन का अपनत्व भाव होता है।

लोकगीत किसी भी विशिष्ट साहित्य के अमरत्व और शाश्वत स्वरूप का मूल स्त्रोत होते हैं। लोक गीतों की परम्परा से विच्छिन्न होकर किसी भी देश का साहित्य जाये नहीं बट सकता। और न ही लोक गीतों का विकास कभी अवस्था होता है। जिस समय कोई देश अपने कला विकास के शीर्ष बिन्दु पर स्थापित होता है उस समय भी ग्राम व गीतों के रूप में लोकगीत अनेक कठों में गुंजते हुए लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति करते रहते हैं।

टाँकी रामाष्टक कात में लोकगीतों की लय तथा परिवेश की अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। कविता लोक सम्बन्धित थी यथा- गड़ेरिया, मइली, मारने वाला, मिल मातिका, बरछा चलाती हुई अपरिणीत कन्या, अपने बच्चे के हिलोते के पास गुनगुनाती माँ, असफल प्रेमी तथा यात्री ऐसे विषयों का माध्यम कैलैडोस्कोप की बनाया गया जो लोक गीत की शैली तथा अभिव्यक्ति से पूर्ण थी। लोकगीतों का सम्बन्ध मुख्यतः पारिवारिक जीवन से है। जीवन के विविध प्रसंगों की सहजाभिव्यक्ति लोकगीतों द्वारा होती है- किसान को छोट जातते हुए, स्त्री को चार में चक्की पीसते हुए, लड़की को धान कूटते हुए, बिधावा को चढ़ाई कातते हुए गुनगुनाने के स्वर में लोक गीत गाते हुए देखा जा सकता है। त्यौहारों धार्मिक अनुष्ठानों, सामाजिक उत्सवों, तथा हज़रत अन्य अवसरों पर नारी कठों से निःसृत लोक गीतों का माध्यम आज के स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार की अमूल्य निधि है।

(७८)

स्वच्छन्दतावाद की शिल्पगत विशेषताएँ:

भाव और शिल्प कवि व्यक्तित्व के दो पहलु हैं ।

स्वच्छन्दतावादी काव्य विषय प्रधान होकर व्यक्ति प्रधान था । वैयक्तिक भावानुभूति और व्याकुलता का उद्दाम प्रवाह काव्य शास्त्र के नियमों के मानदण्डों को तोड़ देता है । आन्तरिक अनुभूतियाँ से उद्भूत रोमाण्टिक भाव सम्पदा ने भी अपनी अभिव्यक्ति के लिये किसी प्रकार के बाह्य लक्षण की अपेक्षा नहीं की। जिस प्रकार स्वच्छन्दतावादी प्रकृति किसी देश का व्यक्त या साहित्य तक ही सीमित नहीं रहती वही प्रकार वैयक्तिक भावावेग की अभिव्यक्ति किसी विशिष्ट शैली का अनुसरण नहीं करती। स्वच्छन्दतावादी कलाकार को पिष्ट पोषित काव्य पद्धतियों का अनुसरण अभिसिद्ध नहीं प्रशुत अपनी भावात्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिये रोमाण्टिक कलाकार स्वयं ही सर्वथा नवीन एवं स्वच्छन्द मार्ग का निर्माता है ।

वैयक्तिक होने के कारण स्वच्छन्दतावादी शैली में किसी प्रकार के अंतर रीति, कृति आदि का निर्जीव यन्त्रवत पासन न होकर सहजता को ही प्रमुखा स्थान प्राप्त है । कवि की तीव्रानुभूति अनायास ही अनुकूल शब्दावली में द्रव्य जाती है संवेदनशीलता के कारण निर्जीव पदार्थ भी संवेदनशील और सजीव हो जाते हैं। भावों का प्रवाह सहज और संवेदनशील अभिव्यक्ति में मानवीकरण को जन्म देता है । इन्द्रियातीत तथा अगाध भावना व्यापार संवेग एवं मूर्त रूप में प्रकट होते हैं । सर्वनात्मक का यह धर्म बिम्ब विधान कहलाता है । कभी कभी कवि की आकुलता सीधी

सीधी शब्दाँ में न दसकर सांकेतिक एवं साक्षात्कारिक पदावली में व्यक्त होती है, प्रतीक विधान कहलाती है। भावों का नैसर्गिक रूप सहज शब्दावली में दसकर संगीतमय हो जाता है।

डा० रामदरश मिश्र का कथन है कि प्रगीत मानव मन की सहाज विधा है। मनुष्य एक राग बोधा मय प्राणी है। उसका यह राग-बोधा समूचे भाव से उससे कभी नहीं छिन सकता। यह सत्य है कि आज के व्यक्ति के सुहा-दुःहा, राग-विराग की संवेदना आदिम काल के मानव की संवेदना की तरह प्रत्यक्षा, सीधी और भावैगात्मक नहीं है-उसमें बोद्धिधक युग की बहुत ही अटितताएं आ गयी हैं। इसलिए आज की संवेदना आदि कालीन, मध्ययुगीन और आधुनिक काल के स्मानी गीतों की संवेदना की तरह एक तप में वेग से फूट नहीं सकती बल्कि वह एक विशिष्ट मानसिक स्थिति में अपने अनुकूल बिहारे हुए संवेगों से जुड़ती है। यानी एक संवेग दूसरे में संक्रात होता है। ये संक्रात संवेग एक आन्तरिक एकता में अनुशासित होते हैं। देखाने में ये संवेग अलग-अलग मालूम पड़ते हैं, परन्तु आन्तरिक संगीत से जुड़े होते हैं। आज का यह भाव-सत्य नयी कविता और नये गीत दोनों में व्यक्त हो रहा है। इन संक्रात संवेगों को स्थापित करने के लिए कवि को अनिवार्य रूप से बिम्बों प्रतीकों और साक्षात्कारिता की योजना करनी पड़ती है। बिम्बों और प्रतीकों के बिना संवेगों की संश्लिष्टता और सूक्ष्मता व्यक्त नहीं हो पाती।''

सदाकदा भावों का विस्तृत एवं उद्दाम प्रवाह ज्वार की तरह उमड़कर इन्द्र बन्धा को तोड़ देता है। भावाकृतता जब निधारित

छन्द बन्धा में नहीं समायाती तौ रीमाण्टिक कवि के लिये अपनी अभिव्यक्ति हेतु युक्त छन्द का सहारा लेता है । कभी नवीन जीवन मूल्यों को स्पष्ट करते समय प्रागैतिहासिक कथाओं के सन्दर्भों से जोड़कर स्थापित करता है, जो कवि की मिथ्याक सृष्टि का परिचायक है । इस तरह विम्ब विधान, मानवीकरण, प्रतीक योजना प्रगीतात्मकता, मिथ्याक, सृष्टि स्वच्छन्दतावादी कलाकार की शिल्पगत विशिष्टताएँ हैं ।

भाषा की दृष्टि से भी स्वच्छन्दतावादी कलाकार ने परम्परानुमोदित भाषा को प्रतिकार कर भाषानुक्त भाषा को अंगीकार किया जिसमें भाषा व्यक्तता, प्रगीतात्मकता एवं चित्रात्मकता का समावेश था । शब्द विन्यास की झट-झट नाप जोड़ा एवं भाव प्रेक्षणीयता का परिधान स्वच्छन्दतावादी कवि की तुलना में शायद ही किसी युग के कवि को रहा है । स्वच्छन्दतावादी कलाकार के लिये अलंकार भी भाव समीक्षण के सहायक बनकर प्रयुक्त हुए हैं व्यवधान नहीं ।

अंग्रेजी का स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन उसके स्म और शैली में क्रान्ति चाहता था । रीमाण्टिक कलाकारों ने उस समय को प्रवर्तित काव्य परम्परा से विद्रोह किया । हीरोइक कप्लेट के स्थान पर काव्यानुभूति की अभिव्यक्ति के लिये ओड, सानेट (संवाधान गीत यदुष्ययी) आदि गीत काव्यों का सहारा लिया कभी-कभी कवि की अपार भाव सम्पदा ब्लैक वर्स (युक्त छन्द) के द्वारा भी व्यक्त होने लगी ।

भाषा

'स्वच्छन्दतावादी काव्य की भाषा शैली भी व्यक्तिप्रधान होती है । उसमें किसी प्रकार के अलंकार, रीति, वृत्ति आदि नियमों का

परंपरागत पातन नहीं किया जाता। कवि की भावना अनायास ही अनुक्त शब्दावली में व्यक्त होती है। इस तरह कवि की अनुभूति की तीव्रता ही उसकी शैली के स्वल्प के निर्धारित करती है। स्वच्छन्दतावादी कवि अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के होने के कारण संवेदनशीलता, भावुक एवं कल्पनाशील होता है। इस प्रकार वह भाव-देश के क्षणों में अपनी संवेदनशीलता से ही निर्जीव पदार्थों को भी सजीव और संवेदनशील बना देता है।¹

मन की सूक्ष्म अनुभूतियों भावनाओं, कल्पना और विचार प्रवाह की संवाहक भाषा ही होती है। यों भी कहा जा सकता है कि भाषा ही भाव सम्प्रेषण का माध्यम है किन्तु साधु की भाषा सामान्य व्यवहार (बोलचाल) की भाषा से भिन्न अधिक कलापूर्ण तथा सुदृढ़ होती है।² 'भाषा शब्दों की संख्या से धनी नहीं होती, धनी होती है अपनी भाव व्यक्तता से। द्वि-वेदी युग की तुलना में छायावाद की समृद्धिका 'रहस्य यही है'।² अभिव्यक्ति शैली की दृष्टि से स्वच्छन्दतावादी कवियों की भाषा निश्चित ही समृद्धिशीली थी। उन्होंने अपनी भाषा को नवीन 'अभिव्यक्ति' तथा नवीन शक्ति से सम्पन्न किया।

शब्द चयन भाषा की रूप संधारण का साधन अवश्य है किन्तु शब्दों का प्रस्तुतीकरण भी कम महत्व नहीं। जिन शब्दों का सहारा लेकर एक कवि सीधी सादी सपाट वेपानीय कविता करता है तो दूसरा उन्हीं शब्दों को नवीन क्रम में संजोकर वित्काण सौन्दर्य की सृष्टि कर देता है। द्वि-वेदी युगीन भाषा की अपेक्षा स्वच्छन्दतावादी भाषा की मौलिकता का यही कारण है।

1- डा० अजय सिंह: नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 166.

2- डा० नानवर सिंह, छायावाद (प्र० सं०) पृ० 101.

भाषा और पद-रचना की दृष्टि से स्वच्छन्दतावाद की भाषा जब भाषा के अधिक निकट थी। स्वच्छन्दतावाद के जन्म के समय कविता जैसी कौमल वृत्ति वाली वस्तु के लिये ढाढ़ी बाँली की सरसराहट, कर्पाकटुता एवं पसवता को अनुपयुक्त समझा जाता था। दूसरी ओर जब भाषा के माध्यम में निमग्न होता तो दिव्यदेवी युगीन ढाढ़ी बाँली की तटस्थ रचनाएँ लिखने में असमर्थ रही। स्वच्छन्दतावादी कविता ऐसे ही श्रोताओं की रुचि की आत्मीयता प्राप्त करने की तलाश में थी।

कौमलता की दृष्टि से स्वच्छन्दतावादी कवि निश्चय ही अग्रतत्पूर्व थे। उनकी कौमल भाषा और शब्दावली कौमल भावनाओं की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम थी। शब्द विन्यास की झट झट नाप-बोछा भाव प्रेषणीयता की पहिचान जितनी स्वच्छन्दतावादी कवियों की थी उतनी शायद ही किसी अन्य युग के कवि की रही हो। इस संदर्भ में डा० नामवर सिंह का कथन है कि-भाषा में कौमलता हायावाद का पहला दावा था और कहना न होगा कि उसने उसे पूराकर दिखाया। भाषा की ऐसी कौमल पदावली के निर्माण में 'पन्त' सर्वाग्रणी रहे।

स्वच्छन्दतावाद का जन्म सांस्कृतिक नव जागरण एवं स्वाधीनता आन्दोलन की पूर्व पीठिका में हुआ था, जिसमें लोक जीवन तथा मध्यम वर्गीय चेतना का भी समाहार था। इस प्रकार स्वच्छन्दतावाद के भाव और भाषा लोक जीवन के अधिक निकट आ गयी।

स्वच्छन्दतावादी कलाकारों ने अलंकार की साध्य न मानकर सिर्फ साधन स्वीकार किया। यद्यपि अलंकार बहुता स्वच्छन्दतावादी कवियों में भी हैं, लेकिन उनके अलंकार भाव सम्प्रेषण में सहायक है व्यवधान नहीं। स्पष्ट अलंकार प्रियता, जिसे पिटे उपमानों की रूप अवृत्ति के प्रति स्वच्छन्दतावादी कलाकारों का स्थायी विरोध पूर्ण ही रहा।

अपनी संवेदनशीलता, वैयक्तिकता तथा अन्तर्दृष्टि दाखिली कल्पना के बल पर नवीन उपमानों तथा अप्रस्तुतों का अन्वेषण किया तथा भाषों की अभिव्यक्ति करने में अक्षम मध्यकालीन अंतकारों के स्थान पर नवीन अंतकार यथा-मानवीकरण, ध्वन्यार्थ व्यञ्जना, विशेषण विपरीत आदि अंतकारों का प्रयोग किया। अमूर्त अप्रस्तुत योजना ने स्वच्छन्दतावादी कवियों की भाषा में चार बीड़ लगा दिये। इस तरह की अप्रस्तुत योजनायें हायावाद के पूर्ववर्ती सम्पूर्ण साहित्य में ढाँचे न मिलेंगी स्तिष्ठित उपमानों की जगह हायावाद ने एकदम नये उपमानों की योजना की, और उसी बात में उसकी नवीनता है।

बिम्ब

बिम्ब शब्द अंग्रेजी शब्द 'इमेज' का हिन्दी स्मन्तर है। इमेज का सामान्य अर्थ है प्रतिमा, जिसकी रचना कवि अपने मानस में स्मृति के विगत अनुभाव विशुद्ध कल्पना अथवा संयुक्त रूप से स्मृति और कल्पना के आधार पर करता है। काव्य में जब वह मानस प्रतिमा कवि की अनुभूति के सम्प्रेषण का शाब्दार्थमय माध्यम बनती है तब उसे काव्य बिम्ब कहा जाता है²। बिम्ब किसी वस्तु के बाह्य रूप की कृत्रिम अनुकृति है³। बिम्ब के चेतन स्मृतियाँ हैं जो मूल उद्दीपन के अभाव में किसी अतीत बीधा का सर्वांगीण अथवा आंशिक पुनरु-

1. वही, पृ० 89.

2. डा० नगेन्द्र : भारतीय साहित्य क्रि०-पृ० 819.

3. Short Oxford Dictionary, P. 604.

स्थापन करती है¹। "बिम्ब रूपना अथवा स्मृति में उपस्थित चित्र अथवा प्रतिकृति है जिसका वास्तुस होना आवश्यक नहीं²।" बिम्ब वह है जो बोद्धात्मक एवं सदैवात्मक जटिलता को आवश्यक समय पर उपस्थित करता है³। बिम्ब मस्तिष्क में अंकित अनुभाव अन्य चित्रों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है⁴। "काव्यात्मक बिम्ब नूनाधिक मात्रा में वह सदैवात्मक शब्द चित्र है जो कुछ अंशों में स्वात्मक होता है, किन्तु उसके साथ ही साथ पाठक में विशिष्ट काव्यात्मक भावना या आवेग समाविष्ट करता है।"

डा० अजय सिंह का कथान है "बिम्ब एक काल्पनिक प्रति इवि है। काल्पनिक नेत्रों से ही इसका अवलोकन किया जा सकता है। वह रूपना से उदित होता है, स्थूल एवं सूक्ष्म किसी प्रकार का हो सकता है एवं इन्द्रियों के द्वारा उसका परिज्ञान संभव को होता है। कविता में बाह्य स्पर्श की मानसिक प्रति दायी बिम्ब कहलाती है और उस मानसिक प्रतिच्छाया की कविता आदि में अभिव्यक्ति बिम्ब-विधान कहलाता है। बिम्ब-विधान स्वच्छन्दतावादी कविता की शैलीगत प्रवृत्ति है⁶।"

1. Encyclopedia Brittanica, Vol-21, P.103

2. Chamber's Twentieth Century Dictionary, P.527.

3. The Trends of Modern Poetry, P.81.

4. Miss Edith Reckert (New Method for the Study of Literature. P.24.

5. C.D. Lewish, The Poetic Image, P.22

6. डा० अजय सिंह: आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 37

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में काव्य का काम कल्पना में बिम्ब की मूर्त भावना उपस्थापित करना है¹। डा० नगेन्द्र का मत है कि-काव्य बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है²। 'जब कलाकार अपने मूर्त संवेगों की यथा तथ्य अभिव्यक्ति के लिये बाह्य जगत से आवेष्टन गत ऐसी वस्तु की कला के पत्र पर इस रूप में उपस्थापित करता है कि हम भी उसकी भावना से वैसे मर्म संवेग की प्राप्ति कर सकें जिससे कलाकार पहले ही गुजर चुका है, तब उन योजित वस्तुओं की वैसे प्रस्तुति के हम बिम्ब विधान कहते हैं³।

साहित्य रचना में बिम्ब विधान का स्वल्प बहुत कुछ साहित्यकार के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। कवि अपनी प्रतिमा के बल पर जटिल से जटिल दृश्य के सूक्ष्मतम व्योरे इस तरह वर्णन करता है जैसे वह उसके प्रत्यक्ष ही।

स्वच्छन्दतावादी काव्य की सफलता सौन्दर्य का रहस्य बिम्ब विधान ही है। अर्तदृष्टि पाचिकी कल्पना शक्ति के नवोन्मेष के द्वारा विभिन्न इन्द्रिय प्राप्त विम्बों का निर्माण होता चलता है। वही विम्बों के द्वारा स्वच्छन्दतावादी साहित्यकार अपने आत्मगत भावों तथा संवेगों को दूसरों तक सम्प्रेरित करने में सफलता प्राप्त करता है। स्वच्छन्दतावादी काव्य के स्थाई प्रभावजनन की सक्षमता काव्य बिम्बों का ही परिणाम है। इस तरह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि बिम्ब विधान स्वच्छन्दता-

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: चिन्तामणि, पृ० 226

2. डा० नगेन्द्र: काव्य बिम्ब, पृ० 62

3. डा० कुमार विमल: सौन्दर्य शास्त्र के तत्व, पृ०-204.

वादी साहित्य की प्रमुखा शैलीगत प्रवृत्ति है । स्वच्छन्दतावादी साहित्य में ये विम्ब अनेक स्मों में प्रयुक्त हुए हैं- जिनमें अलंकार प्रधान विम्ब काव्य शौभा के लिये उदात्त विम्ब विषय तथा असाधारण भावों के लिये, संवेदनात्मक विम्ब रहस्य भाव की अभिव्यक्ति के लिये, मानात्मक विम्ब जिज्ञासा की अभिव्यक्ति के लिये तथा नाट्य प्रधान विम्ब संगीत सृष्टि के लिये ।

वस्तुतः विम्ब-विधान सज्जनात्मक एवं सक्रिय रूपना का व्यापार है । उसमें बुद्धि का योगदान केवल यह है कि वह आकार रूपों को व्याख्यायित करने में सहयोग देती है । जहाँ तक स्वच्छन्दतावादी विम्बों का सम्बन्ध है, इनमें कवि एक नवीन अनुभूति प्रस्तुत करता है, जिसमें नवीनता, मौलिकता एवं ऐन्द्रियता का स्पर्श अपेक्षित होता है । परम्परागत विम्बों से विद्वोह और उनके स्थान पर मौलिक एवं नवीन आत्म चिन्तनात्मक विम्बों की रचना स्वच्छन्दतावादी विम्ब-सृष्टि की विशिष्टता है । स्वच्छन्दतावादी विम्ब जीवन की गतिशीलता से भी जुड़ा होता है । इसमें रचनाकार अपने अनुभावों को मानवीय क्रियाओं के साथ चित्रित करता है । स्वच्छन्दतावादी विम्ब-विधान में कवि सीधे विचार एवं अनुभूति के स्पर्श को व्यक्त नहीं करता, बल्कि विम्बों का निर्माण करता वधा रूप में करता है । विम्ब यही विचार प्रधान है, बोद्धि है तथा संश्लेषणात्मक है । ..

प्रतीक योजना

प्रतीक अंग्रेजी 'सिम्बल' का पर्याय है । इसका प्रयोग किसी मूर्त, अमूर्त और गोचर अथवा इन्द्रियातीत विषय का किसी अन्य मूर्त

एवं इन्द्रियगोचर वस्तु द्वारा प्रतिविधान किये जाने के अर्थ में होता है। अतः प्रतीक योजना में सामान्यतः चार तत्वों की स्थिति होती है-परीक्षा तथा अप्रस्तुत स्थान होती अतीन्द्रिय विषय, इन्द्रिय गोचर व्याख्या प्रस्तुत है भिन्न सूक्ष्मतर अर्थ की व्यञ्जना प्रस्तुत स्थान के स्थान पर केवल अप्रस्तुत का स्थान।¹..

भाव जगत् का जीव होने के कारण स्वच्छन्दतावादी कवि या कलाकार अपने अन्तर्धन के मूढ़ रहस्यों को अपने अनावृत रूप में सम्पूर्ण ही की प्रस्तुत करने को लाजपित रहता है जिसकी पूर्ण अभिव्यक्ति सीधी साधी भाषा में नहीं हो पाती, तब कवि या कलाकार अपने अभिप्रेष को विभिन्न संकेतों तथा प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करता है। काव्य के परिसर में प्रतीक किसी भाव संपदा के सहायक होते हैं। किसी सांकेतिक अर्थ के बोधार्थ होने के कारण काव्य अथवा कला में उसका महत्व असीदिग्ध है।

प्रतीक के स्वल्प विश्लेषण के सम्बन्ध में पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों की विचार धारा इस प्रकार है -

“इन साइक्लोपीडिया मिटाविका के अनुसार प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य वस्तु के लिये होता है जो मनुष्य मस्तिष्क के समक्ष किसी अप्रस्तुत वस्तु के सादृश्य को अपने सम्बन्ध सूत्रों के माध्यम से व्यक्त करती है।²..

हिन्दी साहित्य कोश आधार पर प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य (अथवा गोचर वस्तु के लिये किया जाता है, जो किसी अदृश्य

1. संडा 0 नगेन्द्र: भारतीय साहित्य कोश, पृ०-110

2. Encyclopedia, Britanica, Vol.21 P.700

(अगोचर या अप्रस्तुत) विषय का प्रतिविधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है¹। 'प्रसाद के अनुसार प्रतीकों का सम्बन्ध कवि की उस रहस्यानुभूति से है, जो पुनः के अनुकूल अपने लिये विभिन्न आधार चुना करती है। कला जगत में सौन्दर्य बोधा को मूर्त बनाने तथा संवेदना को आकार देने के लिये प्रतीकों की सृष्टि होती है। अर्थात् प्रतीकों द्वारा कवि निबद्ध भावों को मूर्तता तथा वस्तुमत्ता प्रदान करता है। 'सौन्दर्य बोधा बिना हम के ही नहीं सकता। सौन्दर्य की अनुभूति के साथ ही साथ हम अपने संवेदनों को आकार देने के लिये, उनकी प्रतीक बनाने के लिये बाध्य हैं²। 'भाषा के सम्प्रेषण का आरम्भ होता है, उसी से अनुभाव के आदान प्रदान का आरम्भ होता है, ज्ञान का आरम्भ होता है, परम्परा का आरम्भ होता है, विद्या का आरम्भ होता है, विज्ञान का आरम्भ होता है, और विकास की सारी श्रृंखलाओं की पहली कड़ी है प्रतीक³। 'प्रतीकों में भावाभिप्रेयजन की सक्षमता होती है, वे भाव या गुण से सम्बन्धित सत्य की प्रतीति कराते हैं। परिस्थिति और सन्दर्भ के अनुसार प्रतीकों के अर्थ परिवर्तित होते रहते हैं।

काव्य में प्रतीकों के प्रयोग से एक नवीन शक्ति और अर्थवत्ता आ जाती है। जो बात अपनी अभिधात्मक शैली में कहने पर अपनी सौन्दर्य नष्ट कर देती है, प्रतीकों का सहारा पाकर उसमें सौन्दर्य दिक्गुणित हो उठता है। जहाँ प्रतीक एक और भावों के सम्प्रेषण में सहायक है तथा दूसरी ओर उसके

1. सम्पादक ० धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी साहित्य कौश (द्वि सं०) पृ० 51-5.

2. जयशंकर प्रसाद: काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध, पृ०-35

3. सं० ही० व० अ०: आत्मवाल (प्र० सं०) पृ०-13

अंतर्करण ।

“स्वच्छन्दतावाद कविता में प्रतीक किसी सीमित अर्थ में धार्मिक नहीं होता, यह मानवीय अनुभाव में समागत सर्वातिशायी तत्त्व की अभिव्यक्ति तो कर सकता है, लेकिन वह साधा ही मानव-स्वयं की गहराई में विद्यमान पवित्र तत्त्व की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है । आध्यात्मिकता के साध-साध उसकी चेतना मानवीय अभिव्यक्ति को भी अपने में समेटती है । प्रतीक-मुहा कवि के लिए दोनों अनुभाव समानता पृष्ठा नहीं होते । मनुष्य सदैव अपने अस्तित्व को जहाँ नहीं वे भी अभिव्यक्त करने की कोशिश करेगा तो प्रतीक उसकी अभिव्यक्ति का वाहन होगा ।” डा० सत्य-प्रकाश सिंह का निष्कर्ष है कि आत्मिककरण के अभाव में प्रतीक-योजना नहीं हो सकती है² । इसी संदर्भ में डा० अजय सिंह का कहना है कि इसी बिन्दु पर प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का व्यक्तता में स्वच्छन्दतावादी चेतना से जुड़ती है³ ।

मिथाक

मिथाक शब्द अंग्रेजी के मिथा शब्द का हिन्दी स्मान्तर है । मिथा शब्द ग्रीक पद मिथास से अंग्रेजी में आया जिसका अभि-प्राय भाषा अपवाद कथा से माना जाता रहा । पुनः मैं मिथास

1. डा० अजय सिंह: नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 161 .

2. Dr. Stya Prakash Singh, Upanisadic Symbolism PP.399-422.

3. डा० अजय सिंह: नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 161 .

शब्द का प्रयोग ग्रीक संस्कृति की प्रागैतिहासिक कथाओं के लिये किया गया। अतः मिथास से मिलता जुला मिथाक एक ऐसी कथा के रूप में व्याख्यापित होनै लगता, जो अनिवार्यतः अपने समय के सांस्कृतिक मूल्यों का सम्प्रेषण करती है।¹ 'अंग्रेजी शब्द कौशा में मिथाक का अर्थ है- प्राचीन धार्मिक विचारों या ऐसे विश्वासों से युक्त कोई पारम्परिक कथा, जो कल्पित होते हुए भी लोक प्रचलित होती है।¹ 'मिथाक सांस्कृतिक मूल्यों का अभिन्न अंग है। उसका स्वयं कभी भी संस्कृति निरपेक्षा नहीं हो सकता। मिथाक को मात्र सांस्कृतिक कथा, कल्पनिक कथा, पौराणिक कथा प्रागैतिहासिक कथा कहना उसकी एक पक्षीय व्याख्या है। वस्तुतः काव्य मिथाक सम्बन्ध मानव संस्कृति एवं सभ्यता से है। मिथाक सांस्कृतिक मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का साधन तो है ही, साधन ही संस्कृतियों का संरक्षक भी है।²

मिथाक से तात्पर्य उसकी सांस्कृतिक चेतना में निहित है। जो कल्पित होते हुए भी सर्वथा नवीन उद्भावनाओं की सृष्टि करता है। मिथाक वस्तुतः आत्मनिष्ठ एवं मनोवैज्ञानिक होता है और वह सांसारिक पथार्थ को मानवीय अनुभूतियों की शब्दावली प्रस्तुत करता है।³ मिथाक की कुनाघट में यद्यपि कवि या लेखक रूपना शक्ति से काम लेता है। लेकिन ऐसा लगता है कि सत्य ही उसका आधार है। इस प्रकार रूपना और सत्य या भावगत सत्य

1. डा० शशिभूषण सिंह, आधुनिक साहित्यः विचार और दिशाएँ (प्र० १०) पृ० 30.

2. डा० अजय सिंह, नव स्वप्नन्दतावाद, पृ० 171.

3. वही, पृ० 172.

एवं वस्तुगत सत्य की अभेद प्रतीति मिथ्या की परिकल्पना का धारा-
तत्त विन्दु है¹। मिथ्या इतिहास नहीं है पर इतिहास का आभास
देता है, और हमारी संस्कृति का पारम्परिक चिन्तन और कल्पना
धारा का परिचायक है²।

भारतीय साहित्य में मिथ्याकीय चेतना पौराणिक गाथा-
औं एवं औपनिषदिक चेतना से विकसित हुई है। वैदिक दर्शन में
मिथ्या शास्त्र कर्मकाण्डीय अनुचेतना के साधन सम्पूक्त था एवं सम्पूर्ण
औपनिषदिक भारत एक मिथ्याकीय समय की अभिव्यक्ति है³।

डा० नगेन्द्र ने मिथ्या और साहित्य में मिथ्या परिभाषित करने
वाले विद्वानों के प्रमुखा मतों का उल्लेख किया है- मिथ्या सम्पूर्ण
मानव के समग्र अनुभावों की अभिव्यक्ति है। (फिलिप उद्योत रावटः
पौडटः मिथा एण्ड रिएलिटी ।) मिथ्या मानवीय कौश है आलेश
है । (ब्लेकरः विटनी मिथा एण्ड फिलासफी) मिथ्या असीम की
और उठती हुई सार्वभौम भावना और सत्य का विलक्षण रूप है।
(नीतेशः दी वर्ग आफ टैजडी)

उपयुक्त मतों के आधार पर डा० नगेन्द्र मिथ्या के मूल शूल
दो रूप मानते हैं - (1) मिथ्या सार्वभौम कल्पना है ।

(1.1) वह आदिम मानव की सामूहिक अनुभूतियों
का शब्द मूर्त रूप है जिसमें मानव और प्रकृति सत्ता की अभेद चेतना
निहित होती है⁴।

1. डा० अजय सिंह नव-स्वच्छन्दतावाद, पृ० 173.

2. डा० शशिभूषण सिंह, आधुनिक साहित्य विधाएँ और
दिशाएँ, पृ०-30.

3. उद्योत रावट, नया प्रतीक 7 मार्च, पृ० 62.

4. डा० नगेन्द्र : मिथ्या और साहित्य, पृ०-8.

‘मिथ्याक वस्तुतः आत्मनिष्ठ एवं मनोवैज्ञानिक होता है और वह सांसारिक यथार्थ को मानवीय अनुभूतियों की शब्दावली में प्रस्तुत करता है। मिथ्याक की रचना में यद्यपि कवि कल्पना शक्ति से काम लेता है। लेकिन, ऐसा लगता है कि सत्य ही उसका आधार है।’

मिथ्याक का कल्पना - जाल जिसकी आधार शिखा कल्पित ता अवश्य है परन्तु कविता के क्षेत्र में नयी उद्भावना का एक मात्र केन्द्र-बिन्दु है।²

प्रगीतात्मकता

प्रगीतात्मकता, एवं स्वच्छन्दतावाद की प्रमुखा शिल्पगत विशेषता है। स्वच्छन्दतावादी काव्य में भावा वैग का बहुत बड़ा हाथ था। आत्मपरकता तथा व्यक्ति निष्ठता की भावना के कारण कवि की अभिव्यक्ति शैली भी नितान्त व्यक्तिक थी। अपनी अनुभूति को उसके अनुसृत तत्वात्मक अभिव्यक्ति देने का विधान स्वच्छन्दतावादी कलाकार की प्रगीतात्मकता से जोड़ देता है। पाश्चात्य लैडक रस्किन के अनुसार गीत काव्य में कवि की वैयक्तिक भावना का प्रकाशन होता है। सहज शुद्ध भाव स्वच्छन्द कल्पना तर्कवाद और न्याय मूलता से युक्त विचार ये ही गीत काव्य की मुख्य विशेषताएँ हैं। बुनैतियर का विचार है कि गीत काव्य में कवि भावानुसृत सगों में अपनी आत्म निष्ठ वैयक्तिक भावना अभिव्यक्त करता है।³

1. डा० अजय सिंह नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 174.

2. डा० अजय सिंह, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 36

3. डा० पीरेन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्यकोश, भाग-1, पृ० 289.

इस तरह गीत काव्य में कवि की वैयक्तिक भाव धारा तथा अनुभूति की प्रधानता आवश्यक है। सदैव बहुता, स्वाभाविकता तथा मधुर भाषा गीत काव्य की अन्य प्रमुखा विशेषताएँ हैं। गीत काव्य की आत्मा भाव की माना जाता है जो अपने अतिशय आवेग के क्षणों में किसी प्रेरणा के प्रभाव से गीत के प्रभाव में बह जाता है। अर्त-निहित सैवात्म्यता और तीव्र स्वानुभूति पूर्ण मूलकता ये गीत काव्य के तात्त्विक लक्षण हैं जो उसकी आत्मा कहे जा सकते हैं। उन्हीं के परिणाम स्वल्प गीत में सहज उद्बेक, नवीनमेष, सद्ग, स्फूर्ति, स्वच्छन्दता, अनाहम्बर आदि विशेषताएँ आ जाती हैं। गीत काव्य में अनुभूति की तात्सा तथा अभिव्यक्ति की स्वच्छन्दता की प्रधानता रहती है। गीत स्वतः पूर्ण रचना है व्यञ्जना और संकेत उसके प्राण है। उसके सम्पूर्ण क्षेत्र में सैवात्म्यता का प्रत्यक्ष तारतम्य रहता है।² 'सृष्टि विकास के साथ ही संगीत आत्मा अभिव्यक्ति के सर्वात्कृष्ट साधन के साथ में सम्मानित रहा है। प्रगीतात्मकता काव्य की ऐसी संगीतमयी अभिव्यञ्जना है जिसमें शब्दों पर गावों का पूर्ण नियन्त्रण रहता है। कवि की आत्मा सर्वाधिक होने वाली आवाज प्रगीत है। यह एक आध्यान्तर ध्यान है, या प्राण की आवाज है जो सम्भावित वन्ता या श्रोता के प्रति निरपेक्षा है।'³ 'प्रगीत की मूल ध्वनि आन्तरिक अगत् की उद्भाषना है और उसकी रेखाये कवि की आन्तरिक अनुभूति से उभारती है। इसमें कवि की चेतना आन्तरिकता तथा वैयक्तिकता के

1. डा० शशि भूषण सिंह: आधुनिक साहित्य, बिछाए और दिशाएँ, पृ० 38

2. सम्पा० डा० धीरेन्द्र वर्मा: हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1 (दिव० सं०) पृ० 260

3. डा० अजय सिंह: नव-स्वच्छन्दतावाद से उद्घात, पृ० 51.

लिये होती है।

स्वच्छन्दतावादी कवि अपने हाथ नधीन होती लेकर आये। सुजातमक तथा दुजातमक दोनों पुरुषों को संगीत मयी भाषा में लिहाकर इन कवियों ने गीति की धृष्टि में पूर्ण योग दिया। जब कभी कवि की आत्मा भाव की अग्नि से पिघल कर बहने को हुई है उसके ताप से वाणी की देवी भूत हो जाती है। और भाव गीत का रूप धारण कर लेता है। गीत का व्यंग्य संगीतात्मक तय में प्रयुक्त ऐसे शब्दों की योजना है जिसमें तीव्र निजी अनुभूतियाँ, का व्यक्त किया जाता है। स्वच्छन्दतावादी काव्य में गीतात्मकता सहज ही देखाने को मिल जाती है।

जहाँ मानव-मन किसी सौन्दर्य, राग, सत्य के किसी कोण से गहरे छू जाता है, वही गीत की भूमि होती है। यह कथ्य अपेक्षाकृत आत्म प्रधान होता है। गीत की अनिवार्य विशेषताएँ ये मानी जा सकती हैं 1- स्थानुभूति की तीव्रता 2- लघु आकार 3- प्रभाव की समग्रता। स्थानुभूति बड़े महत्त्व का तत्व है। इसमें कवि के व्यक्तित्व की जीवन्तता, दृष्टि की नवीनता समाहित होती है। जीवन्त व्यक्तित्व और उन्मुक्त दृष्टि वाला ही नया अनुभाव कर पाता है। उसकी अनुभूति सदर्भा से नया ताप प्राप्त करती है²। 'गीत स्थानुभूतिमूलक होते हैं- किन्तु ये अनुभूतियाँ तौक-जीवन के निरन्तर सम्पर्क से ताजगी और शक्ति प्राप्त करती हैं। तौक-जीवन गीत के भाव-सत्य और उपकरण दोनों स्तरों में उसे उपकृत करता है। अनुभूति की संचार्ध गीत

1. डा० अजय सिंह आधुनिक हिन्दी कविता में नव-स्वच्छन्दतावाद

पृ० 240

2. डा० राम दरश मिश्र, हिन्दी कविता: आधुनिक आयाम, पृ० 149.

के लिए आवश्यक शर्त है । वह अनुभूति यदि व्यक्तिगत प्रेम की है तब भी तीव्र प्रभावशाली गीत उत्पन्न हो सकता है, किन्तु यदि लोक-जीवन की अनुभूतियाँ को कवि ने लिया है तो गीत और भी प्रभावशाली और संशक्त होगा¹ । वस्तुतः गीतों में स्वानुभूतियों की अभिव्यञ्जना के क्रम में वैयक्तिक प्रेम के साध्या एक दूसरी चेतना के रूप में शोक गीत भी वैयक्तिक चेतना की प्रस्तुति में विलक्षण होता है । इसमें कवि वैयक्तिकता एवं आन्तरिकता की सच्ची प्रस्तुति में सक्षम होता है । हिन्दी के छायावादी कवियों में निराशा की 'सराज-स्मृति' शोक गीत है । इसमें कवि निराशा ने अपनी आन्तरिक वेदना की अभिव्यक्ति को बड़ी सफाई से प्रस्तुत किया है । इसी क्रम की दूसरी कड़ी के रूप में डॉ० रामेश्वर ताल छाण्डेलवाल की काव्य-सर्जना 'हम शिल्पी सत्रारु' में कविवर तस्या ने अपने एक लोहा बेटा अमित के निधान पर शोकगीत लिखा था । यह रचना भी शोकगीत के गहन, सफाई वेदना की संशक्त माध्यम बनकर वैयक्तिक वेदना की प्रस्तुति में 'शोकगीत' के रूप में एक मानक सृष्टि है । यह संयोग था कि निराशा की एक मात्र सतान सराज के निधान पर 'सराज-स्मृति' का प्रणयन होता है । रामेश्वरताल छाण्डेलवाल 'तस्या' ने अपने एकलौता पुत्र के निधान पर 'अमित-स्मृति कुंज'² की रचना की थी । इसमें दुःख की कहानी है पुत्र के निधान पर चित्रित है । यह रचना वैयक्तिक वेदना की चरम उपलब्धि है । हिन्दी कविता के इतिहास में ऐसी दुःखद स्थितियों का संयोग फिरले ही देखाने को मिलता है । विधाद, वेदना की ऐसी सफाई एवं गहनता का होना कठिन होता है ।

1. वही, पृ० 151.

2. डॉ० रामेश्वर ताल छाण्डेलवाल तस्या, हम शिल्पी सत्रारु के

मुक्त छन्दः

मुक्त छन्द वस्तुतः हिन्दी काव्य के क्षेत्र में एक विद्रोह भाव का प्रतीक है। इसे स्वच्छन्द भी कहते हैं। सामान्य रूपवहार में भी सवैगों की बहुलता होने पर वाक्य विन्यास तथा शब्द चयन तड़काड़ा जाता है। स्वच्छन्दतावादी काव्य तो सवैगात्मक है ही। अनुभूति प्रबलता कभी कभी अपने उद्गम प्रवाह में निश्चित अन्य बन्धा में नहीं समायाती। और छन्द बन्धान तोड़कर कवि मुक्त छन्द का प्रयोग करता है।

मुक्त छन्द किसी प्रकार के वर्ण, गण, पंक्ति, तुक मात्रा आदि छन्द शास्त्रीय नियमों से सर्वथा मुक्त भाषा की सहज व्यवस्थात्मक तथ पर आधारित अनिश्चित आकार की पंक्तियों में हल को म्हा जाता है।¹...

पश्चिम में मुक्त छन्द का आविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी की छाटना है। अंग्रेजी काव्य के विद्यार्थी उन्नादकों शैली की तुल्य विहीन भिन्न आकारों की पंक्तियों में इस प्रवृत्ति का प्रारम्भिक रूप दिखाई देता है। तत्पश्चात् पटमोर हेनरी जैसे कवियों ने भी गद्य की तथ के आधार पर सफल प्रयोग किये। अमेरिक कवि रिवटमैन (लीव्ज आफ् ग्रास) मुक्त छन्द के सर्वश्रेष्ठ प्रयोजनता के रूप में प्रसिद्ध है। जर्मन कवि अनौसैत्स ने अर्धा व्यंजन के लिये आठ तिरछे मुद्रण के द्वारा मुक्त छन्द के स्वल्प में नवीन संभावनाओं का स्थापन किया।²...

1. सम्पादक डॉ० नगेन्द्रः भारतीय साहित्य केश, पृ० 990

2. वही, पृ० 992

पश्चिम के प्रतीक कथादियाँ ने जिस प्रकार की विद्रोहात्मक परिस्थितियों में 'बेरलीज़' को जन्म दिया लगभग ऐसी ही परिस्थिति में निराला ने शास्त्रीय छन्द बन्धानों से मुक्त होकर ब्रह्मी की कली कविता लिखी। इस तरह हिन्दी में निराला मुक्त छन्द के प्रधान प्रयोजक है।

स्वच्छन्दतावादी कवि अनुभूति की अभिव्यक्ति से इतना तन्मय हुआ कि छन्द के बन्धान ही टूट गये। और स्वच्छन्दतावादी कवि मुक्त छन्द का उत्कृष्ट प्रयोग करने लगा कारण यह कि नूतन ध्वनि की ध्वनित करने में मुक्त छन्द में सहजता थी। अंग्रेजी कवि टी. ए. ह्यूम भी इसी प्रकार मुक्त छन्द की अभिव्यक्ति के लिये नवीन एवं सहज मानते हैं²। 'निराला' ने पटिपत्र की भूमिका में बन्धानमय राह की अस्वीकार करते हुए उद्घोष किया है कि- मनुष्यों की पुच्छ की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों के पुच्छ कर्मी के बन्धान से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग हो जाना है।

मुक्त छन्दों का प्रयोग करके स्वच्छन्दतावादी कवियों ने काव्य में शक्ति उपस्थित कर दी। स्वच्छन्द वृत्तियों का प्रकाशन शक्ति के बिना सम्भव न था। स्वच्छन्द व वेतना में व्यर्थ के

1. वही, पृ० 992.

2. The Speculations, P.269

3. 'निराला पत्रिका की भूमिका, पृ०-15.

तुल्य-तुल्यता का बंधन स्वीकार नहीं किया। यद्यपि मुक्त छन्द में भी लय और गति मौजूद है। 'निराला' और पंथ के काव्य में मुक्त छन्द का प्रयोग सर्वाधिक है। डा० अबुल सिदिक का कहना है कि स्वच्छन्दता गीति काव्य के लिए आवश्यक है। स्वच्छन्दतावादी कविता में गीत काव्य का अन्य गुण प्रगीतात्मकता एवं नाद-सौष्ठव भी है। इसी प्रगीतात्मकता में बन्धन रहने के कारण स्वच्छन्दतावादी कवि मुक्त छन्द के प्रवाह में बहने लगता है, क्योंकि नये विषय को नयी अभिव्यक्ति चाहिए।¹

.....

1. आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 39 .

तृतीय-अध्याय

स्वच्छन्दतावाद का नवोन्मेषः नव स्वच्छन्दतावाद ।
(क) नव स्वच्छन्दतावाद की चिन्तन रेखाएँ
(ख) यणार्णवाद का स्वच्छन्दतावादी संदर्भ

(*) नव स्वच्छन्दतावाद की चिंतन रेखाएँ

'कामायनी' को अन्तिम रूप देकर जब प्रसाद जी इस दुनिया से ज्त बसे, उसी के आस-पास स्वयं छायावादी काव्य-संसार बदलने लगा था। पंत, युगान्त, युगवाणी एवं ग्राह्या की दौर में जो तथा निराशा अपनी एक मात्र बेटी सरोज के 1935 ई० में छोटे देने के बाद आक्रोश भरी मुद्रा में आ गये थी। 1938 में प्रकाशित द्वितीय अनामिका में 'सरोज-स्मृति' जैसा शोकगीत है जिसमें कल्याण के साधु निराशा ने सामाजिक विद्रोह की अभिव्यक्ति दी है। इसके साधु ही 1937 ई० में 'वह तड़ती पत्थार' जैसी सामाजिक व्यंग्य की कविता की रचना हुई। इस प्रकार 1935-36 के आस पास हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य की स्वच्छन्दतावादी परिवेश से हटकर व्यंग्य की नयी भूमिका में प्रवेश करने लगा था। 'कामायनी' की रचना पूरी करने के बाद प्रसाद जी स्वर्गवासी हुए और यह संयोग था कि यह स्वयं छायावाद के निधन का भी समय सिद्ध हुआ। पंत का 'प्रगल्भ' छायावाद के अन्त की घोषणा है। स्वयं निराशा ने कविता की छायावादी मुद्रा से अपने को अलग करना शुरू किया और 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की विधिवत स्थापना के बाद तमाम जागरूक रचना कर्मी छायावाद से मुक्त होने के प्रक्रम को प्रगतिवाद से जोड़ने लगे।

निराला की 1937 ई० में प्रकाशित कविता 'बह सौइती पत्थर' में
 कैयल एक सौंदर्य रचना सिद्धा हुई बल्कि छायावाद के बाद की
 रचना-प्रवृत्ति की प्रमाणिक कृति की सिद्धा हुई। इस संदर्भ में ही
 बाद में 'छायावाद की शव परीक्षा' (प्रोफेसर नवल किशोर गौड़ और
 'छायावाद का पतन' डॉ० देवराज के निबन्धों की प्रकाशित हुए।
 छायावादी मनोवृत्ति के साथ आन्तरिक रूप में सम्बद्धता महसूस करते
 हुए बच्चन, अयल और नरेन्द्र शर्मा ने जिस तरह की कविताएँ लिखी
 वे छायावाद से भाषा के मामले में इतनी अलग थी और उनकी अभि-
 व्यक्ति प्रणाली इतनी मूर्त, लौकिक तथा रहस्ययुक्त थी कि उसे
 उत्तरछायावाद की कविता नहीं मई। प्रगतिशील आन्दोलन से सम्बद्ध
 नागार्जुन, कैदारनाथ अग्रवाल, 'शिव मंगल सिंह' 'सुमन' तथा त्रिलोचन
 जैसे कवियों ने कविता की नयी जमीन तलाशी। प्रयोग धर्मिता की
 कविता के तैवर से जुड़ी और अक्षय के नेतृत्व में प्रयोगवाद छाड़ा ही गया।
 लेकिन उत्तर छायावाद तथा कथित प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता,
 नव गीत तथा अकविता मिला जुताकर एक ऐसी निर्माणधीन प्रवृत्ति
 का संकेत करते हैं जिसे 'बाद' के स्तर पर 'नव स्वच्छन्दतावाद' स्तर
 उचित है। इस 'नव स्वच्छन्दतावाद' का आलोचक डॉ० राम बिलास
 शर्मा एक ठास तरह के संक्रमण मानते हैं¹। 'छायावाद के उत्तरकाल
 में स्वयं छायावादी अथवा अपनी पुरानी भाव-धारा से क्लिप्त होकर
 यथार्थवाद की नई भूमियाँ की और बड़े 100 प्रसाद की 'तितली'
 निराला की देवी चतुर्दी चमार, बिल्लैसुर बजरिहा, श्रीमती महादेवी वर्मा
 के रेखाचित्र-में सब इस संक्रमण के प्रमाण हैं²।

1. डॉ० अबन सिंह, नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 79-80

2. डॉ० राम बिलास शर्मा, आस्था और सौन्दर्य, पृ० 248

(७) यथार्थवाद का स्वच्छन्दतावादी संदर्भ

'यथार्थवाद यूरोप में स्वच्छन्दतावाद के विरोध में आया था, इसलिए वास्तविक जीवन से इसका गहरा सम्बन्ध है। यथार्थवादी साहित्यकार मानवीय जीवन के अर्जन से अपनी कलात्मक यात्रा प्रारम्भ करता है। इसके लिए नायक की परिकल्पना, वयन, समाजोन्मीलन जीवित मानवीय चरित्र से करता है, जिसकी धेतना सामाजिक धेतना होती है। अपने युग का इंसान जो संघर्षरत है, जो क्रांति की ओर प्रयाण करने वाला है वही यथार्थवादी साहित्य में नायकत्व ग्रहण करता है। सबसे पहले इस चरित्र को प्रासंगिक टीपिक्त बनाया जाता है। इसकी धेतना सामाजिक धेतना से सिक्त होती है। इसके अतिरिक्त इसकी धेतना में लोकधेतना निहित होती है। लोक-परिदेश, लोक संस्कृति की अभिव्यञ्जना के लिए वह लोकगीतात्मक शैली को अपनाता है। लोक कला यथार्थवादी कला की अव्यक्त उपलब्धि है। यथार्थवादी कला में नव मानव की प्रतिष्ठा मिलती है। यथार्थवाद मानवता है। इसमें मानव अनुभूतियों सर्वांगी है। इसमें जीवित मानव की कला चित्रित होती है। मनुष्य के पूर्ण व्यक्तित्व की अभिव्यञ्जना यथार्थवाद में है। इसमें मानव की अंतर बहिरंग दोनों पक्षों की सुन्दर हाकिया मिलती है।

यथार्थवाद में सर्वथा कल्पना का निषेध नहीं है। बाह्य यथार्थ की पुनर्रचना कल्पना तत्व के अभाव में ही नहीं सकती, यथार्थवादी रचनाकार चित्रण की 'फोटोग्राफिक' पद्धति का विरोध करता है।

इसीलिए वह कल्पना तत्व का विरोधी नहीं होगा। साहित्य अथावा कला की अपनी मूल प्रकृति में कल्पना तत्व को स्वीकारा है। साहित्य एवं कला के अर्थ हैं बिम्बों में सोचना और बिम्बों में अभिव्यक्त करना। यथार्थ जीवन बृहीत इन बिम्बों के रचनाकार के मानस में कल्पना तत्व का साहचर्य प्राप्त होता है। यथार्थवादी रचनाकार रचना प्रक्रिया के गणित को अच्छी तरह जानता है। अपने साहित्य चिन्तन के अन्तर्गत गीर्जी ने भी कल्पना तत्व को बिम्बों में सोचने की क्रिया माना है और कहा है कि साहित्य सर्वना की कला जिसका सम्बन्ध तथा प्रतिनिधि चरित्र निर्माण से है कल्पना विद्यमानता तथा आविष्कारिता की अपेक्षा रहती है¹ जो चित्र अथावा बिम्ब हम स्मृति से प्राप्त करते हैं उनके पीछे भी यथार्थ अनुभव पदार्थों की स्थिति होती है। यथार्थवादी चिन्तन इस तथ्य को स्वीकृति देता है कि मन और बाह्य जगत के पदार्थों को व्यवस्थित करके उन्हें कलात्मक रूप देने का कार्य कल्पना शक्ति के माध्यम से ही सम्पन्न है। कल्पना यदि वह सच्ची कल्पना है, यथार्थ अनुभावों से असंपृक्त नहीं रह सकती और यथार्थ वादी रचना यदि वह वास्तव में यथार्थवादी रचना है, कल्पनातत्व को अस्वीकार कर, अपना साहित्यिक और कलात्मक रूप स्थिर नहीं रखा सकती²। कल्पना को स्वच्छन्दतावाद का वैरोध कहा गया है, और कल्पना का यथार्थवाद से ऐसा सम्बन्ध स्थापित किया गया है कि यथार्थवादी रचना कल्पना तत्व को अस्वीकार करके अपना साहित्यिक और कलात्मक स्थिर नहीं रखा सकती तो कल्पना तत्व के आधार पर यथार्थवाद में स्वच्छन्दतावाद की स्थिति ही कब नज़र आ सकती है। यथार्थवाद में कल्पना की महत्ता स्वीकार करते

1. डॉ० शिवकुमार मिश्र यथार्थवाद: पृ० 145-146

2. वही पृ० 146

दुर डा० रामअच्छा दिवसेदी ने कहा है- 'कला जब जीवन का निरूपण करती है तब उसको एक नवीन रूप और व्यवस्था प्रदान करती है कला में जीवन का रूप सुस्पष्ट होकर निहार उठता है और इस नवीन रूप में नवीन अर्थ और प्रयोजन की प्राप्ति है कहने का अभिप्राय यह है कल्पना और यथार्थ कला के क्षेत्र में एक दूसरे के पूरक हैं और उनमें से कोई भी जैसे कला सृजन के कार्य में सफल नहीं हो सकता। क्योंकि काव्य भी एक कला है। अतः यही बात काव्य पर लागू होगी।

यथार्थवादी काव्य में यह कल्पना अप्रस्तुत विधान के लिए एकान्त मानसिक जगत की अपेक्षा यथार्थ वस्तुओं की ही शरण में रहती है। ऐसी कल्पना को डा० रामकुमार वर्मा स्वस्था कल्पना कहते हैं। वह स्वस्था कल्पना को यथार्थवाद का आधार मानते हैं²। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि काव्य सृष्टि के लिए कल्पना-परम आवश्यक तत्व है। चाहे यथार्थवादी कविता हो या आदर्शवादी या स्वच्छन्दतावादी कविता के लिए कल्पना अति आवश्यक तत्व है।

यथार्थवादी रचनाकारों ने सुन्दर प्रेम कविताएँ भी लिखी हैं, सौन्दर्य की मोहक अभिव्यक्तियाँ भी की हैं और प्रकृति के रम्यचित्र भी अंकित किये हैं। इन कविताओं तथा चित्रों की विशिष्टता इस बात में है कि ये अपने रचनाकारों के स्वस्था मन की उपज हैं उस कूटहीन मन की उपज जिसने व्यक्ति जीवन के सुहा दुःहा चर्ष विधाद सबको सहज आत्मीयता के साक्षात्समान भाव से स्वीकार किया है।³

1- डा० रामअच्छा दिवसेदी, समालोचक यथार्थ विशेषांक, फरवरी 1959, पृ० 34

2- डा० रामकुमार वर्मा, साहित्य शास्त्र, पृ० 63.

3- डा० शिव कुमार मिश्र, यथार्थवाद पृ० 157.

आदर्शवादी दृष्टि वह है जिसमें आत्म तत्त्व और उससे सम्बन्धित नैतिक तत्त्व को सर्वोपरि माना गया है। यूरोप में इस वाद के अंतिम व्याख्याता हीगेल और फिश्टे माने गये हैं, जिन्होंने साहित्य के सौन्दर्य को आत्म तत्त्व से सम्बन्धित माना है। साहित्यिक रचनाओं में आदर्शवादी कृतियाँ वह मानी जाती हैं, जिनमें जीवन के उदात्त पक्षों का निस्पृह होना है। परन्तु ऐतिहासिक क्रम से यह आदर्शवाद रुढ़ियों में बंधा कर जीवन निरपेक्ष हो जाता है और केवल बाह्य नियमों तक सीमित रहकर स्ववाद या रीतिवाद में परिणत हो जाता है। तब इसी रीति या परम्परावाद के विरोध में स्वच्छन्दतावाद का साहित्यिक आन्दोलन 18 वीं शताब्दी के अन्तिम भाग में, आरम्भ हुआ, जिसके उन्नायक फ्रांस में रसों और इंग्लैंड में वर्गसुधार शैली आदि माने गये हैं। नई आधुनिक सभ्यता के विकास के साधा-साधा प्रसंग सामतवादी अमैतिकता के विरोध में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ साहित्य में आयी थीं। प्रचलित सामाजिक व्यवस्था के प्रति विक्रोहात्मक होने के कारण इसे स्वच्छन्दतावाद कहा गया था। क्रमशः इस साहित्यिक आन्दोलन में भी कमजोर पक्षों का प्रवेश होने लगा, कल्पनिकता बढ़ने लगी, वस्तु पक्षों की हानि होने लगा और कला के लिए कला ग्रहण की जाने लगी। स्वच्छन्दतावाद का दार्शनिक पक्ष सौन्दर्यवादी है और एक सीमा तक व्यक्तिवादी भी। इसमें आदर्शवादी साहित्य धारा की नैतिकता और बाह्य सामंजस्य के तत्वों का विरोध किया गया था और एक आन्तरिक सन्तुलन ताने की चेष्टा की गई थी।

1. आचार्य नन्ददुतारी बाजपेयी, आधुनिक काव्य रचना और विचार,

स्वच्छन्दतावाद की रूपना प्रकृता के विरोध में यथार्थवादी साहित्यिक सृष्टि का आरम्भ हुई थी। 19 वीं शताब्दी के आरम्भ से विज्ञान की उन्नति के साथ यह साहित्यिक आन्दोलन गतिशील हुआ था। इसकी दार्शनिक पीठिका वैज्ञानिक थी। डार्विन में मानव विकास सम्बन्धी अपने अनुसंधानों के द्वारा मनुष्य को पशु और वनस्पति जगत की प्राणसत्ता के समीप पहुँचा दिया था। डार्विन का यह निष्पत्ति आदर्शवादियों के लिए एक बड़ी चुनौती सिद्ध हुआ। इस वैज्ञानिक 'सत्य की स्वीकृति ही यथार्थ की मूल विशेषता है। जिन विचारों को हम यथार्थवादी कहते हैं वे सभी विज्ञान सम्मत तथ्यों को स्वीकार करते हैं, वैज्ञानिक पद्धति को अपनाते हैं और प्रयोगात्मक पक्ष को प्रधानता देते हैं। यथार्थ सम्बन्धी वैचारिक या दार्शनिक मूलिका को प्रस्तुत करने वाला पहला सेंट सायमन माना जाता है। जिसने साहसपूर्वक आधुनिक विज्ञान के साथ क्रिश्चियन-तामोल्मुडा आदर्शों को जोड़ने की कोशिश की थी। औद्योगिक सभ्यता के विकास क्रम में पूँजी की बृद्धि के साथ निर्धनता की भी बृद्धि हुई थी। समाज का एक बड़ा वर्ग साधनहीन और जीविकाहीन हो गया था। सेंट सायमन के 19वीं शताब्दी के आरम्भ के साहित्यिक और स्तंभाकारों से यह अवस्था की एक ओर वे विज्ञान सम्मत सामाजिक और मानवीय यथार्थ का चित्रण करेंगे और दूसरी ओर वे मजदूरों और दुःखी जनों के कष्ट निवारण प्रयत्न भी करेंगे।

साहित्य का उद्देश्य समाज के अनुशासन के बाहर स्वच्छन्द मानव स्वभाव में उनकी मुक्ति को अङ्गुण रखते हुए समाज के लिए 'अनुकूलता उत्पन्न करता है'।²

1. आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, आधुनिक काव्य रचना और विचार पृ० 52-53

2. महादेवी वर्मा विन्तन के हाणों में, साहित्य सन्देश फरवरी सन् 1941, पृ० 271.

यथार्थवाद का विवेचन रोमांस से उसका सम्बन्ध दिखाने के लिए किया गया है। यथार्थवाद की कल्पना और रोमांस का गहरा सम्बन्ध स्वीकार करता है। प्रसिद्ध नीची सौन्दर्य शास्त्री वाज्यांग ने माओत्सेतुंग के दृष्टिकोण द्वारा पुष्ट अपना अभिमत इस संदर्भ में व्यक्त किया है¹। भारतीय कवि एवं आलोचकों ने भी स्वच्छन्दतावाद और यथार्थवाद का सम्बन्ध स्वीकार किया है। महादेवी जी ने रोमांस और यथार्थ का सम्बन्ध स्वीकार किया है- एक और हम भूल गये कि आदर्श की रचना कल्पना के सुनहले झरने से तब तक नहीं जारी जा सकती जब तक उन्हें जीवन के स्पन्दन से न भर दिया जाय और हमें यह स्मरण नहीं रहा कि यथार्थ की तीव्र धारा को दिशा देने के पहले उसे आदर्श के कुत्तों का सहारा देना आवश्यक है। यथार्थवाद में भविष्य का जो कल्पनिक स्वप्न देखा जाता है वह यथार्थ धारित होने के कारण स्वीकार होता है। इसीलिए पंत जी कहते हैं- 'स्त्री पुरुष भौतिक विज्ञान शक्ति संगठित भावी लोक क्षेत्र में रहने योग्य संस्कार विकसित प्राणी बन सकेंगे। तब शापद धरती की चेतना स्वर्ग के पुसिनों को छूने लगेगी। पंत ने कल्पना का यथार्थ से सम्बन्ध जोड़ा है। छायावाद युग की रोमांटिक मान्यताएँ हैं तथा व्यक्तिवाद पर आधारित सूक्ष्मता प्रतिक्रियावादी तत्त्व नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति केवल भूत का पुत्र न होकर अन्य मानवीय आकांक्षाओं से भी युक्त है। वह स्वच्छन्दपूर्वक प्रेम करता है तथा दूसरे भी उसे प्रेम करें वह चाहता है अतः रोमांस साहित्य के आदि काल से उसके साथ जुड़ा बना आया है और जुड़ा रहेगा। छायावादी समीक्षा में जो दुःखावाद-वेदना की

1. सोसलिस्ट सिटीजर एण्ड आर्ट इन भी चेना, पृ० 36.

2. सुमित्रा नन्दन पंत गद्यपद्य, पृ० 84.

वृत्ति मिलती है उसका कारण यही है। मार्क्सवादी समीक्षा मानती है—
 “शाण्डिल्य और सगर्भरत व्यक्तित्व भी मानव है। अरोमेंट नहीं जो सदा
 एक ही बात सोचता रहेगा। पेट की भूछा के अतिरिक्त मानसिक भूछा
 उसे लगती है उसका अकाट्य प्रमाण प्रत्येक देश के लोकगीत और लोक
 कथाएँ हैं। लोकगीत और लोक कथाएँ बुर्जुआ वर्ग की रचनाएँ नहीं हैं।
 कोई नहीं कह सकता कि ये रचनाएँ यथार्थ का चित्रण नहीं हैं। इनमें
 हमें जन-जीवन की सच्ची झाँकी देवाने की मिलती है। यह कटूट से कटूट
 प्रगतिवादी भी स्वीकार करेगा कि लोक साहित्य में केवल सगर्भ और
 राँटी कपड़े की ही बातें नहीं हैं। मानव जीवन में प्रेम सत्य का अप्र पाया
 जाना विरन्तन सत्य है, फलस्वरूप साहित्य के अन्दर रोमांस उतना ही
 शाश्वत है जितना कि साहित्य में मानव। मैं डा० त्रिभुवनसिंह के इस
 मत से सर्वथा सहमत हूँ और उनके इस मत से साहित्य की सभी धाराओं
 में स्वच्छन्दतावाद अर्थात् रोमांस का हीना स्वतः सिद्ध हो जाता है।
 क्योंकि जहाँ जीवन है वहाँ मनुष्य है और जहाँ मनुष्य है वहाँ स्वच्छन्दतावाद
 है। इसे कोई नहीं नकार सकता²।

साहित्य ने जीवन अर्थात् जगत की वास्तविकता की उसके नग्न रूप
 में उपस्थापित किया, उसे तो साहित्य में यथार्थवाद के नाम से पुकारा
 गया और जिसने सम्भावित अष्टतर जीवन अर्थात् जगत की झाँकी दी
 उसे स्वच्छन्दतावादी विचार धारा के नाम से अभिहित किया गया।
 किन्तु दानों के मूल में प्रेरणा अष्टतर जीवन की कल्पना ही है³।

1. डा० त्रिभुवन सिंह: हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ० 16, 17

2. ए० आचार्यनकाँ, सोसलिस्ट रिपब्लिक् एण्ड दी लिटरेरी प्रॉसेस, पृ० 52

3. डा० त्रिभुवनसिंह: आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा, पृ० 58

आधुनिक युग में हम यथार्थवाद की रोमांसवाद से बिल्कुल भिन्न वस्तु समझने लगे हैं, पर रोमांटिक युग के विचारकों की विचारधारा ऐसी नहीं थी। रोमांटिक विचार धारियों की उत्पत्ति ही कृत्रिमता असत्यता और झूठ के विरोध में हुई थी, अतः वे स्वाभाविकता और यथार्थता के पक्षपाती थीं। उनके मत में यथार्थता रोमांसवाद की सार वस्तु है। 'वायरन' ने सत्य के महत्त्व का उद्घोष करते हुए कहा था कि सत्य सदा ही विचित्र होता है कथा कहानी से भी अधिक विचित्र, 'हेजरियट' ने एक बार कहा था कि मौलिकता की परीक्षा और विजय इसमें नहीं है कि वह हमें ऐसी वस्तु दिखावे जो सभी पाटी नहीं है और जिसकी हम आसानी से कल्पना भी नहीं कर सकते पर इसमें है कि वह हमें उस बीज को दिखावे जो हमारी आँखों और पैरों के तले ही फिर भी अपनी प्रतिभा और मस्तिष्क की दृढ़ पकड़ के अभाव में उसके अस्तित्व की कल्पना भी हम नहीं कर सकते। 'वर्ल्डवार्क' ने इस रोमांसवाद और यथार्थवाद के सम्मिश्रण के बारे में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, वह एकदम स्पष्ट है जिसे कोई भी आसानी से देखा सकता है²। यहाँ पर भी यथार्थ और रोमांस का सम्बन्ध स्वीकार किया है।

साहित्य में वह सभी यथार्थ है जिसके पीछे साहित्यकार की अपनी अनुभूति है, और जिसे वह दूसरों को अनुभूत करा सकता है। मानव अनुभूति के विषय असीम और असंख्य है। उनकी सीमा के निर्धारण का प्रयत्न कभी विफल होगी। साहित्यकार के लिए एक नियन्त्रण स्वीकार किया जा सकता है, वह है उसके साहित्य का लोक कल्याणकारी रूप उसे समाज का कल्याण करने का कोई अधिकार नहीं है। उसे कदापि ऐसे यथार्थ का निरूपण नहीं करना चाहिए जिसे कि पाठकों की कुसंवि-पूर्ण कृतिसत, पशुवृत्तियों को सहसाबट मिले। परन्तु स्वस्था रोमांस मानव

जीवन में ताबगी आने तथा उसे गतिशील बनाये रखाने के लिए अति आवश्यक है। साहित्य के क्षेत्र में रोमांस भी उतना ही यथार्थ है जितना रोटी कपड़ा¹।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यथार्थवादी साहित्य अपना विषय वस्तु काल्पनिक संसार से न लेकर वास्तविक संसार से लेता है, कोई मूल्य नहीं रखाता, क्योंकि यथार्थवादी लेखक अपनी कल्पनात्मक प्रतिभा के बल पर बाह्य पदार्थों का यथार्थ चित्र उपस्थापित करने का भी प्रयत्न करता है अर्थात् भाँतिक तथ्यों का चित्रण करते समय अपनी भावुकता तथा कवि की अनुभूतिपूर्ण ही रोमांटिक काव्य की जननी है। जब हम यह स्वीकार करने में नहीं हिचकते कि यथार्थवाद और स्वच्छन्दतावाद के पारस्परिक संबंध को स्वीकार करना ही होगा²।

फीडिन महोदय ने यथार्थवाद में रोमांस की स्थिति को स्वीकार किया है। वह मानते हैं कि आज की यथार्थ स्थिति के दिग्दर्शन के साधन कले के सम्भाव्य रूप का चित्रण भी होना चाहिए। वह उस रोमांटिक दृष्टिकोण का विरोध करते हैं जिसमें भविष्य का चित्रण आज की यथार्थ दशा के विकास रूप में न दिखाया जाकर उदात्त रूप में दिखाया जाता है। इसे फीडिन आत्मवादी दृष्टिकोण कहते हैं जिसमें जीवन गुलाबी रंगों से रंगा हुआ दिखाया जाता है।

मार्क्सवाद में यथार्थवाद और रोमांस का अद्भुत सामंजस्य है। चउबग का कहना है यथार्थवाद में क्रान्तिकारी यथार्थवाद और

1. कल्पना-सम्पादकीय अक्टूबर 1952, पृ० 743

2. डा० त्रिभुवन सिंह: आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा, पृ० 61

क्रान्तिकारी स्वच्छन्दतावाद का आपस में लगाव है¹। वस्तुतः यणार्थ रीमास को लेकर चलता है। प्रेमचन्द के यणार्थवाद में रीमास की स्वीकार किया गया है। "मैं मानता हूँ कि आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रेमचन्द पहले प्रणीत है जो यत्नपूर्वक यणार्थवाद के दबाव से बचने के लिए रीमास की गली में भूलकर मीज करने नहीं गये। रीमास को उन्होंने छोड़ ही दिया जो बात नहीं। उस अर्थमें अभी रीमास छूटता है कोई लेहक कल्पना को कैसे छोड़ सकता है। कल्पना बिना लेहक क्या? लेकिन अपने हृदयगत रीमास को उन्होंने व्यवहार पर वास्तव पर नाटाकर देखा और दिखाया। इनके साहित्य की जूबी यह नहीं है कि उनका आदर्श अन्तिम है। अध्यास सर्वथा स्वर्गीय है। उसकी विशेषता तो यह है कि इस आदर्श के साधन व्यवहार का अन्तर्मजस्य नहीं है। वह आदर्श स्वयं में कम ऊँचा है कि वह नीचे वालों को ऊपर उठाकर उनके साधन-साधन रहना चाहता है। इस समन्वय की पुष्टता के कारण वह पुष्ट है²। 'अब तक हम क्रमशः पश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों द्वारा यणार्थवाद और स्वच्छन्दतावाद के सम्बन्ध में उनके विचारों से परिचित हुए। दोनों की विचार धाराओं द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तव में यणार्थवाद में स्वच्छन्दतावादी स्थान रहती है।

प्रभावकर माचवे जी ने भी रीमास और यणार्थ का सम्बन्ध स्वीकार करते हुए कहा है- 'कवितागत रीमास और यणार्थ एक ही कोण की दो गुलाएँ हैं। रीमास स्वस्था मन का भावनात्मक स्वरूप है यणार्थ उसकी बुद्धिगत परिकल्पना। कालरिल का एक बहुत अपूर्ण कथान है कि गहरी

1. सांस्तिसट लिटरचर एण्ड आर्ट इन वेन, पृ० 219

2. हंस प्रेमचन्द अंक, पृ० 808-809

भावनाएं सारे विचार की कौड़ा से जनमती है¹। कातरिज के इस वाक्य से यह ध्वनित होता है कि यथार्थवाद और स्वच्छन्दतावाद में अटूट सम्बन्ध होता है। समाजवादी यथार्थ समाजवादी यथार्थ और स्वच्छन्दतावादी स्थान को पृथक् करके नहीं देता बल्कि दोनों को मिलाकर एक प्रकार का मिश्रण बनाते हैं। इसमें समाजवादी यथार्थ स्वच्छन्द प्रवृत्ति को बाधनी होने से बचाता है तथा स्वच्छन्द प्रवृत्ति कला के स्तर को उभारती है और इन दोनों को अलग-अलग नहीं देता जा सकता। दोनों को अलग-अलग देवाने से कविता की अस्तित्व को आघात पहुँचता है²। समाजवादी यथार्थवाद और वास्तविक यथार्थवाद हैं इसके अनेक रूप हैं। क्रान्तिकारी स्वच्छन्दतावाद इसका एक रूप है। स्वच्छन्दतावाद या क्रान्तिकारी स्वच्छन्दतावाद में यथार्थ और स्वच्छन्द प्रवृत्ति के मिश्रण से कला में जीवन्तता आती है। यह क्रान्तिकारी स्वच्छन्दतावाद जीवन और आधुनिक जगत् से पृथक् नहीं है। इसके विपरीत जीवन दृष्टि के द्वारा देता हुआ यह जगत् की एक कलात्मक अभिव्यक्ति है³।

1. सम्पादक अज्ञेय: तारसुस्तक, प्रभाकर माचवे, ध्वनित्य से, पृ० 183

2. पूरी धारावाहिक-एस्पेक्टिक्स एण्ड पर्सपेक्टिक्स, पृ० 132.

3. डा० अजय सिंह, नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 156

चतुर्था-अध्याय

- | रामेश्वरलात आण्डैलवाल 'तस्मा' उपस्तित्व एवं कृतित्व
- (क) उपस्तित्वः जीवन परिवय एवं यात्राए
- (ख) कृतित्वः कविवर 'तस्मा' विभिन्न विद्वानां की
दृष्टि मे
- (ग) काव्यारम्भाः काव्य कृतियाँ का सामान्य परिवय



डॉ० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण'

(चित्र : जापानी छायाकार श्री सतोशी हाता के सीजन्य से)

-----+
 चतुर्थ-अध्याय | - रामेश्वर लाल ठाण्डेलवाल 'तस्पा' व्यक्ति
 -----+ एवं कृतित्व

(क) व्यक्तित्व जीवन परिचय एवं यात्राएँ

डॉ० रामेश्वर लाल ठाण्डेलवाल 'तस्पा' का जन्म 25 दिसम्बर 1919 ई० को भीलवाड़ा राजस्थान में एक प्रतिष्ठित ठाण्डेलवाल (वैश्य) परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज व्यापारी थे और आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न, लेकिन संयोगवश 'तस्पा' जी के जन्म के समय उनकी आर्थिक दशा बिगड़ चुकी थी। इनके पिता का नाम श्री हरिवन्तभा और माता का नाम सूरज देवी था। माता-पिता बड़े सरल स्वभाव के अध्यातु तथा धर्मप्रिय व्यक्ति थे। 'तस्पा' जी की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के मिहल स्कूल में हुई। इसके बाद उन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा नन्दताल भाण्डारी हाईस्कूल इन्दौर में ली। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर 1937 ई० में बिरसा कालेज पिलानी में तस्पा जी गये और वही से 1939 में एम०ए० की परीक्षा तीसरे से पास की। इसके अनन्तर 'तस्पा' जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 1941 में बी०ए० और 1943 में हिन्दी भाषा और साहित्य में एम०ए० किया। एम०ए० की परीक्षा में 'तस्पा' जी प्रथम श्रेणी में प्रथम रहे, अध्यापक के प्रश्न-पत्र में उन्हें सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए और इनके लघु-शाब्दा प्रवन्ध हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण को परीक्षाक मंडलों ने सन्तुष्टि कर इसे एक महत्वपूर्ण शाब्दा-प्रश्न बताया। 'तस्पा' जी एक मेधावी एवं विनय शील छात्र भी थे इसलिये इनके सभी गुरुजन-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पंडित केशव प्रसाद मिश्र

तथा आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र इनसे बहुत प्रभावित रहे । यह भी एक संयोग ही था कि मेधावी एवं विनयशील होते हुए भी 'तस्या' जी को १९०१० करने के बाद बहुत समय तक अपनी प्रतिभा का समुचित उपयोग करने का अवसर नहीं मिला । लेकिन फिर भी उन्होंने १९५५ ई० में 'आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य विभाग पर पी-एचडी और १९६५ में 'जयशंकर प्रसाद: वस्तु और कला' पर आगरा विश्वविद्यालय ने डी०लिट० की उपाधि दी । ये दोनों शोध-ग्रन्थ 'नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरिया गंज नई दिल्ली' से प्रकाशित हैं । ये ग्रन्थ हिन्दी शोध-समीक्षा के क्षेत्र में एक मानक शोध-ग्रन्थ माना जाता है ।

१९०१० करने के उपरांत 'तस्या' जी पाँचों समय तक उदयपुर रियासत की राजकीय सेवा करने के बाद राज कलवीर सिंह अहीर हाई स्कूल रिवाड़ी में अध्यापक रहे । वहाँ दो वर्ष अध्यापन करने के बाद १९४५ में 'तस्या' जी नेहता मूलचन्द हाईस्कूल बीकानेर चले गये । १९४६-४७ में विद्या भवन उदयपुर में और १९४७-४८ में जगदीश सरण इन्टर कालेज अमराहा में अध्यापन कार्य किया । इस प्रकार ६ वर्ष छुट्टी-उछाल भटकने के बाद मेरठ कालेज, मेरठ में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति होने पर उनके जीवन में सुस्थिरता आ पायी । वे इस वर्ष तक मेरठ रहे । १९५८ में 'तस्या' जी सरदार पटेल विश्वविद्यालय, कलकत्ता विद्यानगर, गुजरात में रीडर तथा कुछ दिनों के बाद प्रोफेसर भी बने । कुछ दिनों तक कला-संकाय के अधि-ष्ठाता भी रहे ।

१९७० ई० में कुस्तीर विश्वविद्यालय के अधिाकारियों ने उन्हें हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद का कार्यभार संभालने के लिए आमंत्रित किया । वहाँ भी अपनी प्रतिभा, कार्य-कुशलता और प्रभाव

शांती व्यक्तित्व के कारण उन्हें विभिन्न उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य दिये गये । प्रिन्टर तथा क्ला-सकाय के अधिष्ठाता का उत्तरदायित्वपूर्ण पद उन्होंने बड़ी कुशलता, ईमानदारी एवं सुह-बुह से संभाला ।

श्री रामेश्वर ताल डाण्डेलवास 'तस्या' का चार साहित्यिक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें डी०तिटो के लिए लिखी गयी शांता-प्रस्था पर 'तुलसी-पुरस्कार' भी शामिल है । विगत 37 वर्षों से 'तस्या' जी आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों से साहित्यिक वार्ता तथा अन्य कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये आमन्त्रित होते रहे हैं और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भाषण देते रहे हैं ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नयी दिल्ली ने विगत 130 वर्षों की (1850-1980) हिन्दी-कविता के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अध्ययन से सम्बन्धित ग्रन्थ लेखन प्रोजेक्ट कविवर 'तस्या' के लिए स्वीकार किया था । डॉ० 'तस्या' इस प्रोजेक्ट को कुस्ती विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से जुड़ कर कार्य करते रहे । अग्री जी 'तस्या' जी अपने सर्जनात्मक एवं आलोचनात्मक सर्जन में रमे हुए हैं । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत इनका ग्रन्थ लेखन प्रोजेक्ट प्रकाशन की प्रक्रिया में है । पुत्र के आकस्मिक निधन के बाद कविवर 'तस्या' जी कुस्ती का छोड़कर अपना निवास स्थान सोनीपत में बनाया । कुस्ती में मन न लगने के कारण ऐसा करना पड़ा । यद्यपि उन्हें प्रोजेक्ट के क्रम में उन्हें कुस्ती आना जाना पड़ता रहा ।

1. डॉ० अबल सिंह, तथा कविवर 'तस्या' के बीच हुए पत्राचार के आधार पर ।

'तस्पा' जी का एक लौता पुत्र अमित का स्वभाव बड़ा मिलनसार था, वह बड़ा सामाजिक था । क्रिकेट तथा चित्रकारी के प्रति रुचि थी । अमित का स्वभाव तर्कशील एवं विनीत भी था । अपने साथियों का बड़ा ध्यान रखने वाला प्रेमल स्वभाव का था । अकेला बच्चा था । लेकिन संयमित एवं शांतिन था ।'

कविवर 'तस्पा' का प्यारा बेटा अशिताम्हा जिसे प्यार से अमित नाम से पुकारा जाता था । अमित का 3 नवम्बर 1961 (सिटी क्लिनिक, नई दिल्ली) शल्प क्रिया से ।

शिक्षा बी०एस्सी०, एम०बी०ए० (प्रथम श्रेणी)

निधन- मृत्यु मूर्हत, 25 अगस्त, 1983 (सरमंगाराम हॉस्पिटल, नई दिल्ली) व्रैन हैमरैज से ।

(फोटो.....)

1. डॉ० अजय सिंह, तथा कविवर 'तस्पा' के साक्षात्कार के आधार पर ।

अमित



जन्म :
मध्याह्न, ३ नवम्बर, ६१
(सिटी क्लिनिक, नई दिल्ली)
* शल्य-क्रिया से *

शिक्षा :
बी० एस-सी०;
एम० बी० ए०
(प्रथम श्रेणी)

निधन :
ब्राह्म मूर्त्त, २५ अगस्त, ८३
(सर गंगाराम हॉस्पिटल, नयी दिल्ली)
* ब्रेन हेमरेज से *

रामेश्वर सात जण्डैलवाल 'तस्मा' के प्रकाशित साहित्य का
संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

1-सर्जनात्मक कार्य कविता

- प्रथम किरण : 1949 : प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य और संस्कृति की 42 कविताएँ।
पं० मजानवाल चतुर्वेदी की भूमिका सहित। हिन्दी
के मूर्धन्य कवियों तथा साहित्यकारों द्वारा
अभिशासित ।
- हिमाचल : 1954 : उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत। लगभग
74 मील व कविताएँ ।
- धूप दीप : 1951 : नवीन शैली व रूपना में शक्ति गान ।
अंधी और घादनी
: 1975 : म० 20 वर्षों में लिखित कवि की श्रेष्ठतम
कविताएँ व गीतों का संग्रह ।
उक्त संग्रहों में से अनेकानेक कविता भारत के
अनेक प्रदेशों के विश्वविद्यालयों में स्वीकृत
पाठ्य ग्रन्थों में संकलित हैं ।

2-मौलिक शोध कार्य :- हम शिल्पी संग्रह के (1984)-नवीनतम
कविताएँ नवीन भाव बोध एवं जीवन
संग्रह विषयक कविताएँ ।

हिन्दी कविता में प्रकृति चित्रण : एम० ए० में लिखित शोध प्रबंध

प्रकाशित 1954 (द्वितीय संस्करण प्रकाशित) उत्तरप्रदेश सरकार
द्वारा सन् 1955 में पुरस्कृत ।

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य

पी-एचडी का शोध प्रबंध, प्रकाशित, 1958, अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में संस्तुत, द्वितीय संस्करण प्रकाश्य।
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सन् 1959 में पुरस्कृत।

जयशंकर प्रसाद: वस्तु और कला

डी० लि० का शोध प्रबंध, प्रकाशित 1968 उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सन् 1969 में 'तृतीय पुरस्कार' से सम्मानित। भारत के अनेकानेक विश्वविद्यालयों द्वारा पाठ्यक्रम में संस्तुत। द्वितीय संस्करण शीघ्र प्रकाश्य।

3- आलोचना

महाकवि प्रसाद: 1961: डॉ० विजयेन्द्र स्नातक की सहयोगिता में पाठ्यक्रम में संस्तुत।

समीक्षा के वातावरण (1962) मौलिक समीक्षात्मक लेख।

4- शोध : संहिता-सम्पादितः

शोध : सत्त्व और दृष्टि - सरदार पटेल विश्वविद्यालय में यू०जीसी की वित्तीय सहायता से आयोजित शोध संगोष्ठी में प्रस्तुत सामग्री पुस्तक रूप में प्रकाशन: सरदार पटेल विश्वविद्यालय।
साहित्य-समीक्षा, मूल्यांकन और शोध - सरदार पटेल विश्वविद्यालय में यू०जीसी की वित्तीय सहायता से आयोजित शोध संगोष्ठी में प्रस्तुत सामग्री पुस्तक रूप में प्रकाशन: सरदार पटेल विश्वविद्यालय।

गुजराती सतों का : 1971: गुजरात के 6 विशिष्ट संत कवियों पर हिन्दी भाषा में आयोजित सेमिनार में प्रस्तुत सामग्री पुस्तक रूप में प्रकाशन: सरदार पटेल विश्वविद्यालय।

हिन्दी आलोचना के आधार स्तम्भ

सहयोगी-डा० सुरेश चन्द्र गुप्त, 1966, उच्चस्तरीय हिन्दी समीक्षा-
त्मक निबन्धों का संकलन । विशद् भूमिका सहित। अनेक भारतीय
विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के अंश के रूप में निर्धारित । कई
संस्करण प्रकाशित ।

भारतीय कविता

1977, गुजराती, में सहयोगी-डा० सुरेश चन्द्र त्रिवेदी: भारत
की 17 भाषाओं के आधुनिक काव्य पर विविधा विद्वानों
द्वारा लिखित गंभीर आलोचनात्मक लेखों का संकलन, सम्पाद
कीय भूमिका व हिन्दी कविता पर लेख सहित। यूनिवर्सिटी ग्रन्थ
निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य द्वारा प्रकाशित ।

बाणनि वीणा

1949, प्राचीन व नवीन हिन्दी कविता का संकलन सम्पादकीय
भूमिका सहित ।

तुलसी तरंगिणी

1976, 75 पृष्ठों की मौलिक व विचारोत्तेजक सम्पादकीय
भूमिका सहित तुलसी साहित्य के मार्मिक स्थलों का संकलन ।

मध्य पारिजात

1956, उत्तर प्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा इण्टरमीडिएट
स्तरों की हिन्दी पाठ्य पुस्तक के रूप में निर्धारित व 20
वर्षों तक प्रचलित, सम्पादकीय भूमिका सहित ।

गद्य पद्य

1960, सम्पादकीय भूमिका सहित आधुनिक गद्य का संकलन ।

पाठ्यक्रम में निर्धारित रही है ।

मौन के स्वर

1962, रचित हिन्दी निबन्धों का संग्रह, सम्पादकीय भूमिका सहित ।

सप्तरंगिका

1975, सात मार्मिक एकांकियों का संकलन । सम्पादकीय भूमिका सहित । पाठ्यक्रम में निर्धारित ।

कहानी कुसुम

1964, कहानी संकलन, सम्पादकीय भूमिका सहित । विश्व-

विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पाठ्यग्रन्थ के रूप में निर्धारित ।

गद्य गुजन पद्य प्रभा विश्वविद्यालय		सरदार पटेल विश्वविद्यालय के
गद्य गुच्छ विश्वविद्यालय पद्य गुच्छ		तत्त्वाधान में तत्ता मेरे प्रधान सम्पादकत्व में रचित पाठ्य पुस्तकें।

कहानी-कविता, प्रतिपदा साहित्य		कुस्तीर विश्वविद्यालय के तत्त्वाध-
रसायन निबन्ध निरुज गद्य मञ्जरी		धान में तत्ता मेरे प्रधान सम्पादकत्व
कथा माधुरी सव्य किञ्चन काव्य		में रचित पाठ्य पुस्तकें ।
कुसुम		

संभावना :

हिन्दी विभाग, कुस्तीर विश्वविद्यालय की अन्तर्राष्ट्रीय
 व्याप्ति की हिन्दी अधिवाषिणी का सम्पादन। 'तुलसी'
 विशेषांक' व 'शांति' विशेषांक' सर्वत्र मुक्त भूठ से
 प्रशंसित ।

शोध पत्र: लेख

अभिनन्दन ग्रन्थों, अष्ट हिन्दी पत्रों के विशेषांक,
स्मारिकाओं, संग्रहों-संस्तनों में हिन्दी तथा अंग्रेजी में
अब तक लगभग 75 लेख प्रकाशित ।

कवि-कवि-तत्त्वा-विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में

डा० रामेश्वर लाल जण्डेलवाल 'तत्त्वा' का आधुनिक हिन्दी कविता के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। अपनी कला के प्रति निरक्षर भाव से समर्पित रहकर, गंभीर व बहुमुणी जीवन-वेतना को आत्मसात कर अपने में निर्वर्त दीप सा प्राण-प्रज्वलन से उन्होंने अपनी सुदीर्घ काव्य-साधना व रसमयी लेखनी से जो तेज, माधुर्य व सुषमा हिन्दी कविता को मौन विनम्र भाव से अर्पित की है वह प्राण-पोषक होकर सूर्यवान है¹। 'कवि-हरिवंश राय' वचन' का कथन है 'ऋतु वास्त-विह्वल.... रामानुज.... दोनों प्रकार की कविताओं में आपकी कलम संधी है²। 'उनकी कविताएँ व्यक्तिगत दायरे को लांघकर सार्व-जनिक पीड़ा से उधत-पुधत में पड़ी नजर आती है।.... कविता में प्रतीका बढते परिवेश में अपनी एक तस्वीर और देना साधारण बात नहीं है। श्री 'तत्त्वा' ने इसी साधारण को साधा है³। 'कवि-तत्त्वा' की कविताओं के विषय में डा० नगेन्द्र का अभिमत इस प्रकार है :-

'कविताओं में आत्मीय अनुभूति की निश्चल अधि व्यक्त है जो कविता का स्रव गुण है। काव्य में भाव और विचार की स्वच्छता और कथन शैली में उसी के अनुस्य प्रसाद गुण है⁴। '

1. सम्पादक डा० अभिमानन्द सठारस्वत, कवि-तत्त्वा' सर्जन के घरण, पृ० 3

2. आधी और बादनी के विशिष्ट अभिगत तत्त्वा अन्तरंग परिचय

पृ० 3

3. वही, पृ० 3

4. वही, पृ० 4

रामेश्वरतात छापडेतवात 'तस्या' की कविताएँ लोक तय में रचीमई हैं ।
लोक तयता के साथ-साथ 'तस्या' जी की कविताओं में प्रकृति-प्रेम एवं
श्रुति का बड़ा ही मनोहारी स्म मिलता है¹। उदाहरण के लिए
'निहार'² और 'मे' बनवाही होता है³ शीर्षक कविताएँ ही जा सकती
हैं ।

प्रकृति-प्रेम तथा श्रुति की चेतना 'तस्या' की कविताओं में
प्रचुर मात्रा में मिलती है ।

कविवर 'तस्या' ने अपने विषय में 'हम शिल्पी संग्रह के' पहले
छापड़ा-सा-गाह' में लिखा है: " मेरे संस्कार व वैयक्तिक प्रकृति ने
जीवन की बहुमुणी सौन्दर्य चेतना के अवगाहन में भी मुझे प्रवृत्त किया
है, प्रवृत्त रखा है । कोमल, रंगीन, रमणीय, भाव्य व उदात्त तथा
प्रचण्ड, स्फूर्ति, अनमद, कुस्म व सहज-सामान्य में तथा इन दोनों की
मिलती-जुलती स्थितियों में व स्पर्शों में भी मुझे गहन आकर्षक सौन्दर्य
के दर्शन हुए हैं । प्रकृति-सौन्दर्य मानव-सौन्दर्य और मानसिक (भाव)
सौन्दर्य-सभी के प्रति मैं समान भाव से आकृष्ट रहा हूँ । जीवन की
कुस्मताओं, विद्रुपताओं की मैं अपनी सौन्दर्य चेतना में यथा स्थान व
उचित अनुपात में समाविष्ट करता हूँ । सौन्दर्य की मैं कला-संस्कृति व
काव्य का प्रधान मूल्य मानता हूँ जिसमें उसे स्वास्थ्य, समृद्धि व वाजगी
पहुँचाने वाले 'शिव' व 'सत्य' तत्वों का सहज समावेश है⁴ । 'अपनी
अनुभूति की सचाई के विषय में 'तस्या' जी कहते हैं: 'काव्य के माध्यम

1. डा० अजय सिंह, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 203

2. 'तात उणा ही छलक रही है मुझ से जीवन-चेतना ।

अपने ही सौरभ से मेरी नस-नस में उत्तेजना ।"

आधी और बादनी, पृ० 131 .

3. 'हम शिल्पी संग्रह के' पृ० 70-71

4. रामेश्वर तात छापडेतवात; तस्या 'हम शिल्पी संग्रह के' पृ० 11

से मे जीवन सत्यों के साक्षात्कार के लिए अपनी क्षमता के अनुसार और जीवन स्थितियों की चौकटी में निरन्तर अपने गतिर गटका हूँ-गाटकता रहा हूँ। इस गाटकने का ही अपना एक सुहा रहा है। अपूर्णता, गाटकन अतृप्ति की अनुभूति का सुहा भी कवि पूरा गाँग सके, यह कोई छोटी सर्वनात्मक उपलब्धि नहीं।¹''

'तस्या' एक ऐसे रचनाकार हैं। जिनमें प्रतिभा और आलोचक की सूक्ष्म दृष्टि विद्यमान है। कुशल अध्यापक, शांति और अनुसंधान के क्षेत्र में अपनी ताप स्पर्शी दृष्टि के लिए विख्यात और अपनी पुस्तकों आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य 'अवशर प्रसाद' वस्तु और कला आदि से हिन्दी आलोचना साहित्य को समृद्ध करने वाले कवि में उनका आलोचक सदैव प्रबल रूप में मौजूद रहा है। अतः 'तस्या' के काव्य को समझने और पढ़ाने के लिए उनके 'आलोचक' पर ध्यान देना नितात आवश्यक है। उनकी दृष्टि को सुदृग्म करना अपरिहार्य है। उनके आलोचक और कवि के बीच अन्तर्संगति स्थापित कर ही उनके कृतित्व का सम्यक् मूल्यांकन हो सकता है। 'तस्या' अध्ययनशील विद्वान है, परिस्थितियों और चतुर्दिक परिवेश के प्रति जागरूक कलाकार है, अतः उन्होंने अनेक प्रभाव ग्रहण किये हैं पर वह बादों की अजीरा में जकड़े कवि नहीं हैं।²''

डा० रामदरश मिश्र का कथन है:

''आपके गीत कवि के नये मोड़ का परिचय प्रीतिकर है। आपने इन कविताओं में बहुत सहज किन्तु प्रभावशाली ढा से वर्तमान

1. वही, पृ० 12

2. डा० शांति स्वस्म मुख, डा० तस्या दृष्टि और सृष्टि (भूमिका) प० 5

जीवन स्थितियों का उद्घाटन किया है ।... कविताओं में संवेदन की समकालीनता और अभिव्यक्ति की सादगी, छुरदापन तथा व्यञ्जना है।¹ आचार्य विनय मोहन शर्मा का कथन है: 'कवि का नयनोन्मीलन छायावाद युग में हुआ था । उनकी कविताओं में कई भागिमाएँ देहानि जा सकती है । उसमें छायावाद की रोमांटिक मासलता, राष्ट्रीयता को उद्बोधित करने वाली प्रत्यक्षकारी मुहारता, उत्पीड़ितों के प्रति सहानुभूति और शोषकों के प्रति तीव्र ङीठ तथा वर्तमान व्यवस्था से उत्पन्न फूटन की विवशता देहानि जा सकती है ।'² डा० अबल सिंह का कथन है: 'तस्या' की कविताओं में प्रेम, सौन्दर्य और विद्रोह की प्रवृत्तियाँ प्रचुर मात्रा में हैं । इनकी काव्य रसा में प्रेम, सौन्दर्य और विद्रोह की त्रिधारा देहानि जा मिलती है ।'³ डा० गिरधारी लाल शास्त्री ने 'तस्या' के विषय में कहा कि कवि तस्या में प्राचीनता एवं नवीनता का अद्भूत संगम है ।'⁴

'तस्या' के व्यक्तित्व निर्माण में उनके जीवन की तस्या परिस्थितियाँ, धर्मप्रिय, मस्त हृदय माता पिता और गुरुजनों का पर्याप्त योगदान रहा है । माता-पिता की भाक्ति-भावना और आस्तिक वृत्ति ने उनमें भागवान् और जीवन के प्रति आस्था के भाव पल्लवित किये, तभी विद्यापीठों जीवन में पढ़े हुए ग्रंथों-जैनगम ह्यदीपिका, गीता और उपनिषदों के अध्ययन ने उनमें दर्शन के प्रति सम्मान केन्द्रित की । पार्श्ववर्त्य दर्शन और साहित्य के अध्ययन ने आगे चलकर इसे और भी पुष्ट किया । 'तस्या' का अधिकांश जीवन पारिवारिक प्लेशों के बीच साधना करने

1. वही, पृ० 146

2. वही, पृ० 6

3. वही, पृ० 9

4. डा० अमानन्द सोरारस्वत, कविधर तस्या: सर्वज्ञ के चरण, पृ० 145

और भावितिक संचारों से टकरा लेने में बीता जीवन की दिव्यताओं ने उन्हें परिश्रमी, सहिष्णु और कर्मठ बनाया है। वह अपने गायक-निर्माता स्वयं रहे हैं। अभावों के बीच चलने वाला यह कवि अपनी अनवरत साधना के बल पर ही साधारण अध्यापक से विश्व विद्यालय का विभागाध्यक्ष, कला-संकाय अधिष्ठाता बन पाया है।

'तस्मा' जी मात्र सौन्दर्य पारंगत ही नहीं साधक भी है जीवन के संचारों और प्रकृति के निकट सम्पर्क ने उन्हें अन्तर्मुखी बना दिया है। अभी भी कविवर तस्मा को एकल प्रिय है और स्वाध्याय उनका जीवन का आदर्श है। इन आन्तरिक वृत्तियों का प्रभाव उनकी रचनाओं पर भी है। इसलिये 'तस्मा' की कविताओं में आन्तरिकता की प्रधानता के कारण स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ अपने विशुद्ध रूप में मिलती हैं।

'भाव-प्रवण' रोमानी संवेदनों के कवि होते हुए भी उनकी रचनाओं में वैसी तरह रोमानियत या आवेगपूर्ण भाव-प्रवणता नहीं है, जैसी की आवावाद-युग के गीतों में दिखाई पड़ती है। इसके स्थान पर उनकी रचनाओं में स्वानुभूति की अत्यन्त शिष्ट, सयमित और परिष्कृत अभिव्यक्ति में भावना के साध वितर्क का, हृदय के साध बुद्धि का ऐसा अंतरावलम्बन है जो उनके स्वतः ही किस्म के भाव प्रवण रोमानी गीतों से अलग करता हुआ एक विशेष प्रकार की अर्थावत्ता प्रदान करता है। बिना रचना-धर्मों ईमानदारी तथा सच्चाई के इस प्रकार की उपलब्धि तब नहीं है। 'तस्मा' जी की

1. डा० अजय सिंह, तथा कविवर 'तस्मा' के बीच पञ्चाचार के आधार पर

रचनाओं के इस वैशिष्ट्य को स्वीकार करना होगा¹। 'तस्या' की कविताओं में स्वच्छन्दतावादी, नव स्वच्छन्दतावादी तहर आज भी तरंगित है। आधुनिक कवियों में स्वच्छन्दतावादी, नव स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों की दृष्टि से रामेश्वरदास जाण्डेलवाल 'तस्या' का कीर्तिमान एवं प्रभावशाली कवि है²। अध्ययन-अध्यापन, स्वाध्याय और सर्वज्ञ और आलोचनात्मक साहित्य-साधना के अतिरिक्त तस्या की रूढ़ि चित्रकला और यात्रा-ध्रमण में भी रती है। 1971 ई० में जापान और धार्मिक लैंड की यात्रा पर गये। हिन्दी के छायावादी तथा अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों उन्हें प्रिय हैं। प्रकृति-निरीक्षण तथा प्रकृति प्रेम में 'तस्या' की तुलना कविवर 'पत' से की जा सकती है। विभिन्न प्रदेशों की यात्रा के बीच प्रकृति के रम्य और रोमantic स्मॉ के दर्शन ने भी उनकी कवि रूपना को सशक्त बनाया³।

कविवर 'तस्या' के साहित्यिक जीवन के विकास में छन्दों का अपना विशेष महत्व है। इनका सम्बन्ध इन प्रमुख साहित्यकारों से रहा है :

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, श्री सुमित्रानन्दन 'पत'
गोपाल सिंह 'नेपाली' प्रभाकर माधव, बीरेन्द्र कुमार जैन, रामवक्त्र
देवीपुरी, माडान दास चतुर्वेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य विश्व
नाथ प्रसाद मिश्र पंडित केशव प्रसाद मिश्र, डा० नगेन्द्र, डा० विजयेन्द्र

1. डा० शिव कुमार मिश्र का अभिमत, आधी और चौदनी के विशिष्ट अभिमत तथा अन्तरंग परिचय) पृ० 11।

2. डा० अजय सिंह, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, पृ० 204

3. डा० शशांति स्वस्म गुप्त, आधुनिक प्रतिनिधि कवि, पृ० 201।

'स्नातक' इत्यादि । कविवर 'तस्या' के जीवन में दलबन्दी और पार्टीवाजी में कोई आस्था नहीं थी । पोरबेश में अनुचित बातें होती हैं तो उन्हें मार्मिक पीड़ा का बोधा होता है, लेकिन मौन रहते हैं । उनकी शादी जून 1957 होती है । उनकी धर्म पत्नी का नाम श्रीमती अन्तिवार्ता है । उन्हें व्यवस्था, सादगी, संतोष और अम में विश्वास तथा भागवान के प्रति आस्था रही है । शिव भाक्ति में तथा तुलसी माता की पूजा में भी उनकी विशेष आस्था है । प्रत्येक सोमवार को व्रत रखाती है । अतिथियों की सेवा में इनका मन बड़ा रमता है । अतिथियों का स्थान के अनुसार भाजन की स्वतः व्यवस्था करती है । भाजन, नास्ता बगैरह कराने में उन्हें बड़ा सुझा मिलता है । ढान-पान में स्वच्छन्दता तथा त्योहारों में उत्साह भी इनके स्वभाव की विशेषताएँ हैं ।

कविवर 'तस्या' कवि-आलोचक एवं देश से प्रोफेसर पद पर कार्य करते रहने से उन्हें देश विदेश में व्याख्यान के लिए आमंत्रित मिलता रहता था । सारे देश में उड़ीसा को छोड़कर शांति निकेतन, कलकत्ता, बिहार, मध्यप्रदेश, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, मद्रास इत्यादि स्थानों पर भाषण देते रहे हैं । कविवर 'तस्या' जी के सम्मान में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय तथा शहर में भी कई गोष्ठियों का आयोजन होता रहा है । उन गोष्ठियों में कविवर 'तस्या' तथा आलोचक 'तस्या' के रचना संसार के संदर्भ में विद्वान लोग चर्चा परिचर्चा करते रहे हैं । 'तस्या' जी की कविताओं पर बहस की शुरुआत

1- डा० अब्दुल सिद्दिक तथा कविवर 'तस्या' के साक्षात्कार के आधार पर

करते हुए 'स्वच्छन्दतावाद' के विद्वान डा० अबब सिंह ने इनकी कविताओं में प्रेम, सौन्दर्य और विद्रोह की प्रवृत्तियों को रेखांकित किया¹। डा० कुंवर पास सिंह ने कहा कि तस्या जी इतिहास के रथ के साया है।... उनमें आधुनिकता है, सामाजिक प्रतिवद्धता है और उनकी रचनाओं में प्रासंगिकता है²। 'अध्यक्षीय भाषण में डा० गिरिधारी लाल शास्त्री ने कहा कि कवि 'तस्या' में प्राचीनता एवं नवीनता का अद्भुत संगम है³। 'डा० बुद्धासेन नीहार' ने 'तस्या' की 'प्रथम किरण' 'स्मितावता', 'आधी' और 'वीदनी' और 'अग्नि-संगीत' आदि का परिचय देते हुए कहा कि 'तस्या' जी में जीवन के राग की एक ओर प्रेम और सौन्दर्य में अभिप्रेरित हुई हैं, तो दूसरी ओर समाज से जुड़ने पर यही राग तत्त्व क्रांति की आग में पर्यवसित हो जाता है⁴। 'डा० बुद्धासेन ब्रह्मि नीहार निष्कर्ष' रूप में कवि 'तस्या' की कविताओं पर अपने विचार देते हैं 'वस्तुतः मूल रूप से 'तस्या' जी प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं और वे प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करते हुए कभी-कभी अपनी रूपनाओं में बहुत ही दूर निकल जाते हैं और वे अतिशय सौम्य रूपनाओं के कवि हैं। यही तत्त्व राग तत्त्व कवि की समाज से जुड़ने पर विद्रोही बना देता है..... वास्तव में 'तस्या' जी की गणना आधुनिक युग के महत्वपूर्ण कवियों में करता हूँ, स्वस्था परम्परा तथा आधुनिकता दोनों ही उपलब्ध है। वे बहुत से नये कवियों में ज्यादा नये हैं⁵। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के भूतपूर्व हिन्दी विभागा-

1. प्रावदा दैनिक, अलीगढ़, 27 नवम्बर, 1976, पृ० 4

2. दैनिक प्रकाश, अलीगढ़, 29 नवम्बर, 1976, पृ० 2

3. प्रावदा दैनिक, अलीगढ़, 27 नवम्बर, 1976, पृ० 4

4. प्रावदा दैनिक, अलीगढ़, 27 नवम्बर, 1976, पृ० 4

5. प्रावदा दैनिक, अलीगढ़ 27, नवम्बर, 1976, पृ० 5

धरम प्रोफेसर गोखर्दाने नाथ शुक ने कवि 'तस्या' की कविताओं में संशय सामाजिक दृष्टि की ओर ध्यान दिलाया¹। डॉ० श्री कृष्ण वर्ष्ण ने 'तस्या' जी की कविताओं में विद्रोह भावना की प्राण शक्ति की ओर शोध छात्रों को आकर्षित किया²। डॉ० महेंद्र सागर प्रचडिया ने 'तस्या' जी के जीवन और व्यक्तित्व का विवेचन करते हुए 'तस्या' जी के मानववाद की ओर ओताओं को उन्मुक्त किया³। केन्द्रीय हिन्दी के निदेशक प्रोफेसर हरवशतात शर्मा ने 'तस्या' जी को महान कवि बताया। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ० अन्ना प्रसाद 'सुमन' ने कहा कि 'तस्या' जी के काव्य में वैदिक कवि जैसे बिम्ब उपलब्ध होते हैं⁴। छायावादी आलोचक डॉ० पूत बिहारी शर्मा ने 'तस्या' जी को आधुनिक युग का एक महत्वपूर्ण कवि और आलोचक बताया⁵। डॉ० श्री राम शर्मा ने कहा कि 'तस्या' जी के काव्य में जीवन की ताजी अनुभूति है⁶। सौन्दर्य शास्त्रीय समीक्षा डॉ० कुमार विमल का स्थान है कि आधुनिक जीवन-बोध पर निर्भर 'तस्या' जी की मार्मिक कविताएँ इस युग की गहन सांस्कृतिक पीड़ा की सच्ची संवेदना को अभिव्यक्त करती हैं⁷।

1. वही, पृ० 4

2. वही, पृ० 4

3. वही, पृ० 4

4. कविवर 'तस्या', सर्वज्ञ के चरण, पृ० 146

5. वही, पृ० 146

6. वही, पृ० 146

7. वही, पृ० 119, डॉ० कुमार विमल, पटना (24-1-1976) का पत्र।

काव्यारम्भ : काव्य-कृतियों का सामान्य परिचय

काव्यारम्भ :

कवि के स्व रामेश्वर ताल छाण्डेलवास 'तस्मा' की प्रसिद्धि काव्यपन में ही दूर-दूर तक फैल गयी थी। सन् 1930 ई० में उनकी पहली कविता प्रकाश में आई। उन दिनों 'तस्मा' की चौधरी कक्षा में पढ़ रहे थे। छात्रावास के सुपरिन्टेन्डेंट स्वयं कवि थे। उन्होंने उन्हें काव्य साधना के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया। इसी तरह आगे चलकर 50 माछान ताल बलुईदी के सम्पर्क में आये। उड़ी कक्षा में ही कविता पाठ करने पर उन्हें पदक तथा दो स्वयं का पुरस्कार मिला, उनका परिचय 'तस्मा' कवि के रूप में कराया गया। हाईस्कूल तक आते-आते वह आस-पास होने वाले कई कवि-सम्मेलनों में आमन्त्रित होने लगे और इन्दौर में होने वाले लगभग सभी समारोहों पर आयोजित कवि सम्मेलनों में काव्य-पाठ करते रहे। पंडित माछान ताल बलुईदी इनके कवि गुरु रहे।

कविवर 'तस्मा' द्वारा प्रणीत प्रमुखा काव्य-कृतियाँ अधोलिखित हैं :- (क) प्रथम किरण

(ख) हिमाचल

(ग) आधी और बीदनी

(घ) हम शिल्पी संग्रह के

(क) प्रथम किरण

'प्रथम किरण' 'तस्मा' जी का प्रथम काव्य-संग्रह है। सन् 2006 में प्रकाशित इस संग्रह में सन् 1937 से दिसम्बर सन् 1945 तक की कविताएँ संग्रहीत हैं। इस काव्य कृति की पहली रचना 'राष्ट्रगीत' जिसमें 'अतीत प्रेम' राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति है। यह स्व

काव्यात्मक अभिव्यक्ति में स्वच्छन्दतावादी है। देश की महिमा का
व्यापन कवि कर रहा है:-

‘महिमा मय है देश हमारा ।

प्रथम सभ्यता का उन्नायक पुन-पुन की महिमा से मण्डित,
शुद्धा ज्ञान का आदि-स्त्रोत यह महादेश प्राचीन अर्द्धाङ्कित,
भाव्य आर्य संस्कृति का स्वामी सृष्टि मुकुट, जन-जन का प्यारा ।

महिमा मय है देश हमारा ।

ब्रह्म ज्ञान की ज्योति मनीहर पूटी सबसे प्रथम यही पर,
अमर चिन्तन आदर्श का पातन है नित हुआ यही पर,
यही आर्य-सृष्टि-कम्बु कंठ से साम गान की पूटी धार ।

महिमा मय है देश हमारा ।

राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित ‘तत्त्वा’जी की इसी कविता
में मानववादी त्वर ध्वनित है। मानववादी अध्यापण स्वच्छन्दता-
वादी होती है। यह एक व्यापक मानव वृत्ति है। जिसमें वैज्ञानिक जीवन
चिन्तन का स्वर मुखरित होता है। उदाहरणार्थ :

‘सृष्टि है जिआ और जीने दी, यह उदार भावना यही है,
यहां आत्म-बल पूज्य, किसी का पशु बल में विश्वास नहीं है,
तलवारों से नहीं, जगत् पर पार्श्व विजय प्रेम के द्वारा ।

महिमा मय है देश हमारा ।

उच्चकटि की मानवता का अलता पुण्य-प्रदीप यही है,
धर्म भूमि यह, ज्ञान भूमि यह, क्या ऐसी भू और कहीं है,

तीस कौटि कौं से इसकी ज्य का उठो लगावे नारा ।

महिमा मय है देश स्मारा¹ ।

दूसरी 'वन्दना' है² । इसमें कवि नवीन सर्जन की कामना लिये हुए है³ ।
कवि मानव-मानव का प्रेमी भी है⁴ ।

इस संग्रह में कुल 42 कविताएँ हैं । प्रत्येक कविता की अपनी पहचान है । इस संग्रह की कुछ कविताएँ ऐसी हैं जो हमें प्रसाद तथा पत की शैलियों की याद की ताजा करती हैं । कविवर 'तस्या' अपनी इस काव्य-कृति के विषय में कहते हैं :

'ये मेरे बाल प्रयत्न हैं । सिन्धु तट पर बैठ कर अपनी रूपना के असुकुल मेने ये रेत के चारोंदें बनाए हैं-जानते हुए भी कि गरजती हुई लहरों के पेट में ये समा जा जायेंगे । पर निर्माणा में ही मनुष्य अमर है । भावी प्रलय की चिन्ता मात्र से सृजन का सुहा मानव कैसे छोड़े । नाश और मरण की लीला-शूमि इस मर्त्य-लोक में भी मनुष्य मधुर न गीत गा सका और सौन्दर्य की सृष्टि कर सका यही तो नश्वर मानव की महान विजय है । यदि वह ऐसा न कर सकता तो पीड़ा, क्रन्दन, अशान्ति और ज्वाला के इस मरुस्थल में वह रहता ही क्यों और जीता ही कैसे ? 'प्रथम किरण' में जगत् के अन्धकार से संचार्ध कर प्रकाश पाने का प्रयत्न है । ...

1. वही, पृ० 2

2. वही, पृ० 3

3. वही, पृ० 3 'नई रूपना, नये भाव के,

स्म-रग है स्वस्था रहे मन ।

4. वही, पृ० 3

5. प्रथम किरण, निवेदन .

मेरा अस्तित्व¹, अनुभूति², वसन्त-प्रभात³ 'शक्ति का सौन्दर्य स्वप्न'⁴, शीर्षक कविताएँ अनुभूति की प्रामाणिकता एवं दार्शनिकता से वंचित भी हैं।

कविवर 'तस्मा' प्रेम, सौन्दर्य के कवि है। इनकी कविताओं में ये तत्त्व यत्र-तत्र मोतियों की तरह बिछारे हुए हैं। 'प्रथम किरण' की 'गाँव' शीर्षक कविता में 'तस्मा'जी सौन्दर्य, प्रेम और सुखा-शांति की गाँव में है। यह कविता भी आन्तरिकता की संशुद्ध अभिव्यक्ति ही सकती है। इसमें कवि की जीवन-चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है और यह अभिव्यक्ति कलात्मक चित्रण में आत्मपरक है।

'मूले आदर्श' के प्रेमी को-

इस जग में अब तक मिला नहीं,

सौन्दर्य, प्रेम, सुखा-शांति अमर

स्वर्गिक प्रकाश की ज्योति कहीं।⁵

। दो चिह्नियाँ⁶ शीर्षक कविता में प्रेम की ही अभिव्यक्ति की गई है। 'गाँव की और'⁷ कविता में ग्रामीण परिवेश, ग्रामीण जीवन की हाँकिनी मिलती है। कवि ने गाँव का वास्तविक चित्र सामने लाड़ा कर दिया है। इसी क्रम में 'तस्मा' जी ने 'पावस-श्री'⁸ में वर्षा कालीन मनोहारी चित्र लीखा है। 'हरी रास'⁹ में

1-5, वही, पृ० 5, 11, 16, 76

5, वही, पृ० 14

6, वही, पृ० 15

7, वही, पृ० 24

'हिंसक जग में जाकर तुम
यह प्रेम दिगाओ, पंखी !
स्वर्गीय प्रेम का मजुत
संदेश सुनाओ, पंखी ।

8, वही, पृ० 35-36

9, वही, पृ० 27.

वही, पृ० 30.

कवि ने अपने को प्रकृति की गोद में बैठकर अनन्त आनन्द की स्थितियाँ को पाता है :-

‘तू अपना सच्चा हृदय ढाल,
आलिंगन देती बिना माल,
मे देहा चुका सर्वत्र डाल,
मूढ़ मैं न कहीं भी मिला प्रिये, निष्पट हृदय का मदुविलास
ऐ, शैत-तटी की हरी गाल’¹।

‘प्रकृति की गोद में’² शीर्षक कविता संग्रही है और इसमें प्राकृतिक दृश्यों का अंकन किया गया है। कवि प्रकृति-प्रेम का गायक है। ऐसा लगता है कि ‘प्रधान किरण’ में ‘तस्मा’ जी की कविता संग्रह में प्रेम और सौन्दर्य की गंगा-यमुना का मधुर संयोग हुआ है। इस काव्य कृति में ‘अनुभूति’ प्रधान कविताएँ भी हैं, जो अनुभूति की प्रामाणिकता को गवाही देती है। कविवर ‘तस्मा’ प्रकृति के अमर गायक के रूप में ‘प्रधान किरण’ में देहो जा सकते हैं।

‘प्रधान किरण’ के संदर्भ में डॉ० नगेन्द्र का अग्रिम महत्वपूर्ण है।

‘प्रधान-किरण’ हिन्दी के ‘तस्मा’ कवि एवं काव्य-मर्मज्ञ श्री रामेश्वरदास ढाण्डेलवाल की प्रधान काव्याभिव्यक्ति है। ‘तस्मा’ जी के काव्य में स्वभावतः तात्त्व-प्रत्यक्ष भावनाओं का प्राधान्य है। ये भावनाएँ हैं स्फूर्ति और रंगीन मधुरिमा। स्फूर्ति का व्यक्त रूप है सामाजिक चेतना, और रंगीन मधुरिमा का व्यक्त रूप है प्राकृतिक और मानवीय-प्रकृत और सूक्ष्म-सौन्दर्य की निवृत्ति। इन कविताओं में ‘अमृतता

1. वही, पृ० 31

2. सं० ६० ओमानन्द २० सारस्वत, कविवर ‘तस्मा’ सर्वज्ञ के चरण, पृ० 155

है, रूपना कीतलित -क्रीड़ा है, पर नास्त रस की नूनता है।¹

कुल मिलाकर अतः मैं कविवर श्री सुमित्रानन्दन 'पत' के शब्दों में कहा जा सकता है, 'मुझे कवि की प्रतिभा पर विश्वास है। उसकी 'प्रथम किरण' मैं नवीन युग का आलोक तथा नवीन जीवन प्रभात का संदेश है²। 'दस्तुत निष्कर्ष' रूप में मेरी भी धारणा है कि 'प्रथम किरण' में रूपना और अनुभूति की तीव्रता है, प्रेम और सौन्दर्य की छटा है। कुल मिलाकर यह काव्य-कृति प्रकृति की मञ्जूषा है।

भाषा-शिल्प की दृष्टि से 'प्रथम किरण' की कविताएँ स्वच्छन्दतावादी उपकरणों से प्रभावित हैं। इन कविताओं में अनुभूति की तीव्रता, रूपना का वैभाव एवं भाषा का प्रवाह ली पाया ही जाता है, हृन्दी में गति भी है³।

(डा) हिमाचलः

'प्रथम किरण' के बाद सन् 1949 से 1952 तक की लिखी गयी कविताओं का संग्रह 'हिमाचल' नाम से प्रकाशित हुआ। 'हिमाचल' की रचना के संदर्भ में कविवर 'तस्या' के स्वयं का कथन है।

'हिमाचल' का रचना-काल मेरी जीवन की बहुमुळी और मार्मिक अनुभूतियों का काल है, इसलिए इसमें मेरी प्रकाश चेतना, आत्मोत्साह,

1. वही, पृ० 154

2. वही, पृ० 155

3. डा० शांति स्वल्प गुप्त, आधुनिक प्रतिनिधि कवि, पृ० 209.

प्राणी-प्या, सौन्दर्य-स्वान, पुतल-कम्प, रौप्य-चस्तम्भा और अश्रु उच्छ्वास
 आदि सभी का जीवन सुलभा सतरंगी वैभाव विद्यमान है। मेरे हृदय
 की सनस्त सरिता की अभिव्यक्ति होने के कारण 'हिमाचल' की रचना
 से मुझे बहुत संतोष है।¹ 'हिमाचल' की कविताओं में प्रेम और
 सौन्दर्य के मादक के चित्र भी हैं। पंडित रामेश्वर शुक्ल 'अवत' की
 इन कविताओं में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों देहाने की मिठी तथा
 स्वच्छन्दता का मादक तथा शांति से पूर्ण वातावरण मिला। इस
 का व्य-कृति में नवयुग की भावनाएं हैं, उनमें दैनिक जीवन के चित्र अपनी
 सहजता के कारण मादक हैं और उसमें मानववाद की गरिमा और
 महिमा भी भरपूर है। 'नया जीवन-नया समाज' 'मानव बन-मानव-बन',³
 'वाह',⁴ 'प्रेम'⁵ शीर्षक कविताओं में मानव की महिमा एवं मानवी प्रेम
 की प्रस्तुति हुई है। प्रकृति-प्रेम के गायक कवि 'तस्या' अपनी इस
 रचना में ग्रामीण परिवेश, लोक जीवन एवं लोक-संस्कृति की अच्छी
 अभिव्यक्ति इन कविताओं में करते हैं: 'गेन्दा के फूल' सरसों फूली,⁷
 ढाँत की ओर,⁸ 'गान-बधू' तथा 'माटी के घर'¹⁰ इत्यादि। इस
 काव्य कृति की अन्तिम रचना 'गीत' है और वह ग्यारह छान्डों में
 विभाजित है। 'गीत' में कवि को अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों की
 अभिव्यक्ति में बस मिलता है। गीत विधा तथा वैयक्तिक चेतना
 की प्रस्तुति अस्तुतः स्वच्छन्दतावादी चेतना होती है। इस क्रम के

1. रामेश्वर लाल छान्देलवास 'तस्या' हिमाचल, आगास

2. श्री रामेश्वर लाल छान्देलवास 'तस्या' हिमाचल, पृ. 17

3. वही, पृ. 16

4. वही, पृ. 38

5. वही, पृ. 39

6-10, वही, पृ. 78, 79, 80, 85-86, 87-88.

में कवि की अपनी सफलता मिली है।

भाषा और शिल्प की दृष्टि से भी 'हिमाचल' एक सशक्त रचना है। क्योंकि प्रत्येक कविता के पीछे प्रकृत प्रेरणा है, भाषा विषयानुकूल और प्रगीतात्मक है। ध्वनि तथा माधुर्य का सम्बन्ध इन गीतों की विशेषता है। 'सरस्वती, सुखा' और संगीतमय शब्दावली भावों के ताँड़े लेकर जब धारकती हुई चलती है तो कवि की सौन्दर्य सृष्टि का महत्व स्पष्ट हो जाता है¹। 'हिमाचल' में कवि की 74 कविताएँ संग्रहित हैं। कविताओं की भाषा परिमार्जित है। कवि की अभिव्यक्ति में मधुरता और प्रवाह है। कुछ कविताओं में यश उच्चो उड़ान और दार्शनिकता है, वहीं कुछ कविताओं में प्रकृति के मनोरम दृश्यों की सजीव छाँकी भी मन को मोह लेने वाली हैं²। 'हिमाचल' के गीतों में मधुरता है, जीवन के लिए उत्साह एवं संशर्षित रहने की प्रेरणा है। कवि ने स्वर्ग के 'वितासी देवताओं' के गुणगान करना पसन्द नहीं, और न यह चाहता है कि जीवन में किसी 'कल्पनिक मुक्ति' की रट लगायी जाय। उसे तो इस पृथ्वी का 'मानव अपनी दुर्लक्षताओं में भी सुन्दर लगता है। इसलिए वह मधुर जीवन-पथ पर सारे समाज को 'बढ़े चलते' का उपदेश देता है³।

'प्रकृति सम्बन्धी गीतों' में कवि ने भावों के प्राण हास दिए हैं, कल्पना साकार हो उतरी है। इन गीतों में उसने निर्जीव शब्दों में प्रकृति की सजीवता गार दी है, सुमन का पराग भार दिया

1. 'आज' बनारस, 29 जुलाई, 1952

2. सरस्वती, प्रयाग, जनवरी 1952

3. हिमाचल, पृ० 17,

है एवं दर्शन की गम्भीरता भार दी है। इसलिए 'हिमाचला' के एक-एक गीत को बार-बार पढ़ने को जी चाहता है।¹

'हम शिल्पी सत्रास' में 'पहले पाँड़ा-सा यह' में कविवर 'तस्या' का कथान है :

'हिमाचला' में सार्ण-चेतना, आत्म-सत्त्व और प्रणय, स्म-सौन्दर्य, प्रकृति, प्रायः सौन्दर्य व मुक्त मनोरंजन विषयक भावनाओं का वैयक्तिक चेतना है रसात्मक, रूपनात्मक भूमि पर, मुग्धा भाव का चित्रण व व्यञ्जना ही प्रमुखा है। पशु-पक्षी, नार-दोपड़े, बाग-बाड़ी, निदिपा रे गाव, छौत-कुएँ, धूल गारे पधा, उनमें बसी दिन मानवता, तरतता-सादगी, विश्रमता-विहम्बना व परिक्षेशगत अभाव दरिद्रता की ओर मैंने अपनी दृष्टि 'प्रधान किरण' और 'हिमाचला' की अनेक कविताओं में विशेष गहराई से डाली है²।

डॉ० शिवकुमार मिश्र का कथान है:

'प्रधान-किरण' संग्रह में जीवन के प्रति एक उन्मुखाता थी 'हिमाचला' में 'तस्या' पूरी तरह जीवन की धारा के साथ बहे है। 'हिमाचला' की अधिकांश कविताएँ उद्बोधन परक हैं जिसमें कवि ने अपने मन की आशा, आस्था तथा सहस को बाणी दी है। उर्मग तथा उत्साह से पूर्ण ये कविताएँ व्यक्ति की जीवन की विभिन्निकाओं से ताँहा लेने को उत्प्रेरित करती हैं। कर्मउ जीवन की बड़ी ही संशय अविश्वस्त इन कविताओं में छुई है³।

1. युगधर्म, नागपुर, दिसम्बर, 1953 (भागवती धार बाजपेयी का कथान)

2. हम शिल्पी सत्रास के, पृ० ८

3. डॉ० शिव कुमार मिश्र का निबन्ध 'कवि 'तस्या' का रचना-संसार,

उद्धृत कविवर 'तस्या' सर्जन के चरण, पृ० 69-70 .

(ग) आधी और चादनी

'प्रथम किरण' और 'सिखावता' के बाद डा० रामेश्वरलाल ढाण्डेलवाल 'तस्मा' की नयी कविताओं का संग्रह 'आधी और चादनी' का प्रकाशन 1975 ई० में हुआ था। अपनी इस रचना को कविवर 'तस्मा' ने अपने एक लौता बेटा अमित को समर्पित किया था।

अपनी यह कृति

बेटे मुनुआ (अमित) को-

जो नीले आकाश के नीचे

विस्तृत नील हील की

शुद्ध अल-तरंग सा

चटकता-हसरता रहता है।

'आधी और चादनी' में कविवर 'तस्मा' 'अपनी बात के द्वारा 'आधी और चादनी' के रूप एवं शिल्प का बोधा देना चाहते हैं।

'हाँ, 'आधी और चादनी' शीर्षक से ही विदित हो जायेगा कि इस रचना में मेरे अस्तित्व का समस्त क्लृप्त और मधुरतम, और उन दो सीमान्तों के बीच पढ़ने वाला सारा आत्मद्रव्य समाविष्ट है। इस दृष्टि से यह रचना संभवतः मेरी काव्य चेतना के प्रायः सभी प्रवाहों, उर्मियों, स्पन्दनों, अनतरालों व आणवों का अद्यतन प्रतिनिधित्व करती हुई जान पड़ सके।''

1. श्री रामेश्वरलाल ढाण्डेलवाल, 'तस्मा' आधी और चादनी

'आधी और बादनी' संग्रह की कविताएँ दो छान्डों में विभाजित हैं। प्रत्येक छान्ड अपने शीर्षक को सार्थक करता है। 'आधी' छान्ड में 54 कविताएँ हैं। 'मुस्तक' छान्ड में 30 कविताएँ हैं। 'आधी' छान्ड में लिखाने वाला व्यंग्य है, जो समाकालीन कविता का स्वर है। वस्तुतः रोमांटिक आयरनी एक ऐसी प्रवृत्ति है जो पदार्थवाद के साथ उभारती है, जिसमें सौन्दर्य शास्त्रीय व दार्शनिक व्याख्या की जगह पर इनमें ऐतिहासिक एवं सामाजिक समस्याओं की कवि अपनी चेतना है उभारता है। इसे ही डा० अजय सिंह ने 'स्वच्छन्दतावाद' के सामाजिक धारा-तत्त्व की एक प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार किया है¹।

'आधी और बादनी' में आधुनिक जीवन-बौद्धिक की मार्मिक कविताएँ संग्रहीत हैं। कविता की गहराई, उत्कृष्टता और गहरी कला-साधना, मनुष्य की गहन सांस्कृतिक पीड़ा की सच्ची संवेदना, अशिक्षित की ताप-स्पर्शी सूक्ष्मता-शुद्धता और चेतना की रगीन तथा समृद्धि-इन सभी आयामों से 'आधी और बादनी' गरी पुरी काया सर्वना है।

डा० राम वरश मिश्र का स्थान है। 'आधी' छान्ड में संकलित एक गीत 'अपनी कहो कहानी'² बेहद प्यारा लगता है। यह गीत अपनी सादगी में बहुत व्यंजक है और इसकी पूरी संरचना आज की लगती है। यह गीत आपकी नयी यात्रा का संकेत भी करता है।

'आधी' छान्ड की कई कविताएँ मुझे बहुत अच्छी लगीं। आपके गीत कवि के नये मोड़ का यह परिचय प्रीतिकर है और इस मोड़ की कई कविताएँ बहुत प्रभावशाली हैं। आपने इन कविताओं में बहुत सहज किन्तु प्रभावशाली ढंग से वर्तमान जीवन-विसंगतियों का उद्घाटन किया है।

1. नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 75-85

2. आधी और बादनी, पृ० 53

आत्मकथा' ने हमें सर्वाधिक प्रभावित किया है। भारतीय शास्त्रीय शाब्दों और अभिवाचन भाषणा से आज की मिडम्बना का उद्घाटन नहीं हो सकता। इस सत्य की पहचान करने के कारण ही आपके कवि ने इस और इसके समान अन्य प्रभावशाली कविताओं में आज की बोलचाल की भाषा, विम्बों, प्रतीकों और मुहावरों का प्रयोग किया है। यह कविता एक व्यक्ति की नहीं, सड़ी-गली व्यवस्था से गुजरती पूरी सामाजिक जिन्दगी के अन्तर्विरोध की पहचान उभारती है। इसमें एक ही साधा व्यवस्था के प्रति छींटा और सामान्य मनुष्य की लाचारी के प्रति का रूप दोनों उपजते हैं।

मौती की आब से, हम को अपनी इसी हसे ही नहीं,
हमें गुलगुदी करके हसाया गया¹।

राजनीतिक विसंगति को सहज भाव से अभिव्यक्ति देने वाली दूसरी कविता है- 'डेमाँक्रेसी'। प्रकृति के स्पर्श के माध्यम से आपने 'डेमाँक्रेसी' के नाम पर भीड़वाद के नीचे पीसते सत्य का दर्द उभारा है। सत्ता अपनी राजशक्ति से अनेक हाथों को अपने पक्ष में उठाने के लिए विवश कर देती है और लाेभित कर देती है।

सूरज बरमाशा है-

कितना व्यापी-

बेचारे अंधारे को तबाह कर दिया²।

'दल बदलू'³ भी सीधी-सादी अच्छी कविता है। प्रकृति के संदर्भों को नये रूप में संयोजित करने वाली कुछ कविताएँ प्रिय लगती हैं।

1. वही पृ० 21-22

2. वही पृ० 22

3. वही, पृ० 35.

पहले उनकी सुन ली । कविता में प्रकृति के उपकरण परिवार के आत्मीय सदस्यों की तरह आए हैं । इस पूरी कविता में इसलिए पारिवारिक आत्मीयता और आलपन ली है ही-रंगों, स्मों, गंधों की अजीब हलचल ली है । यह कविता आत्म हाँसे-हाँसे सौन्दर्य-प्रेमी होने का दम्भा गारने वाले मानव मन की व्यावसायिकता पर बड़ी सहजता से चोट कर जाती है-

मैं- संस्कृति का प्रहरी ।

और ये मेरे पाँव के रोड़े से बने रहते हैं-

हर समय ।

ये निजल्ले, आचारामर्द

कितने प्यारे हैं ये कम्बुत

और मैं- कितना व्यस्त !

प्रकृति-संदर्भ की अन्य कविताएँ (जो मुझे प्रिय लगी हैं) - 'मैंदा के फूल' भाव्य दृश्य, बिहूंगा: 'मैं अंगार, 'कैमरा', 'जीवन पतंग'-एक आदर्श एक यथार्थ अछी लगी । इन सब कविताओं में संवेदन की समकालीनता और अभिव्यक्ति की सादगी, आलपन तथा व्यंग्यता है ।

दूसरे आण्ड'चादनी' जो मुक्तक रचनाएँ हैं । इनमें अधिस्तार कविताएँ स्वच्छन्दतावादी चेतना से जुड़ी हुई हैं । इन कविताओं में 'हम तुम कहीं घल दें' ² 'फूल छिले बेरा के' ³ 'न जाने कौन जनम की बात' ⁴ 'याद न कर मन, प्रीत पुरानी' ⁵ 'सबका अपना अपना मन है' ⁶ 'यह घाद जिधर से आता है' ⁷ 'निर्झर' ⁸ 'मेरे गीत मौन मत होने' ⁹ इत्यादि ।

1. डा० रामदरश मिश्र, दिल्ली के दिनांक 13-11-77 का पत्रसे उद्धृत
कविधर 'तस्मा' सखन के चरण, 121-पृ० 121-122

2. आण्डी और चादनी, पृ० 103

3. वही, पृ० 105 .

4. वही, पृ० 117 .

5. वही, पृ० 119

6. वही, 120

7. वही, पृ० 122 .

8. वही, पृ० 131

9. वही, पृ० 139 .

कविताओं में रोमानी भाव की प्रस्तुति है !

कवि आशा-निराशामयी अनुभूतियाँ की, वैयक्तिक अनुभूतियाँ को विगतानुभूतियाँ की अपनी सहज, सुन्दर, लौलतनीत पदावली में प्रस्तुत करना है । आशा-निराशा की कूलें पर चढ़ा हुआ कवि कहता है :

‘जब संसार व्यथाओं काता-

हो जाय काज्ज का काला,

चन्द्र-किरण बन आलौकित कर देना शून्य हृदय का कौना!

मेरे गीत मौन मत होना¹ ।

कविवर ‘तस्या’ मानवता, संस्कृति और संवास की पीड़ा के कवि है, यह अन्ततः ‘आधी और चौदनी’ में स्पष्ट होता है । यहाँ उनकी अग्नि-व्यक्ति अत्यन्त स्पष्ट सहज एवं तत्-स्पर्शिनी ही उठी है । चालीस पैंतालीस वर्ष की जीवनानुभूतियाँ हैं युक्त उनकी काव्य यात्रा में हर्ष विधाद से धुती मानवता, चित्रन जागरूक स्वाध्याय और अहर्निश अभ्यास के संस्कारों से प्राप्त सांस्कृतिक विरासत में पनपी और अर्जित संस्कृति पर छाये विराट संवास की उन्हीं साधारणीकृत करके भागेगा है । वे संवास की व्यतिरिक्त नहीं, तत्त्व को अवगत करने वाली साधारणीकरण की भूमिका पर इस पीढ़ी के तथाकथित आधुनिकता पूर्ण पीढ़ी के चक्रित और भाव चक्रित, निर्व्यवस्थित गर देने वाले विश्वव्यापी संवास को भाँगतै है² । ‘जीवन के मधुर रागात्मक पक्ष की और दुःकाव अधिक होने के कारण प्रेमघरों की विभिन्न अन्तर्दशाओं के मार्मिक चित्रण, उक्ति की साक्षात्कार कला तथा चित्रमयी मोहक व्यंजनाओं से संश्लेष का उत्तरा दर्श प्रचुरता के साथ अनुरजित है । कवि

1. आधी और चौदनी, पृ० 139

2. कविवर ‘तस्या’ : संजन के चरण, पृ० 168 .

कवि की सर्वथा मौलिक सृष्टि-कृति से उत्पन्न नए-नए प्रतीक तथा अप्रस्तुत उपमान 'प्रसाद' के काव्य-संग्रह 'तस्मा' की कविताओं की याद दिलाती है ।..... अनुभूति की गहराई, व्यञ्जना की विशदता, भावनाओं की सुकुमारता, भाषा का सौष्ठव, विचार की विमलता-इन रचनाओं की अपनी विशेषता है¹ । 'संक्षेप में, प्रस्तुत संस्तन की कविताएँ यह जताने में समर्थ हैं कि प्रयोगवाद नहीं कवि तथा अकविता के बाद भी सातवें दशक में छायावाद जिन्दा है मरा नहीं² । 'प्रथम किरण' और 'सिमावता' के पश्चात् डा० रामेश्वर ताल जाण्डेसवाल 'तस्मा' की तीसरी काव्य-सर्जना 'आधी और चादनी' का प्रकाशन आधुनिक हिन्दी कविता के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी है । इसमें आधुनिक जीवन-बोध की नूतन जीवन्त कविताओं का सुन्दर निर्देशन हुआ है । प्राचीनता और नवीनता का सुन्दर संगम उनकी काव्य-सरिता में निहारा जा सकता है । मानव-सौन्दर्य, प्रकृति सौन्दर्य मानव-संस्कृति, मानव-पीड़ा, दार्शनिकता एवं मनोवैज्ञानिक वृत्तियों की संशक्त अभिव्यक्ति इनकी कविताओं में हुई है । काव्य, दर्शन एवं मनोविज्ञान की त्रिधारा डा० 'तस्मा' की इस कृति में प्रवहमान है । आधुनिक ऋतु हिन्दी कविता के इतिहास में स्वच्छन्दतावादी और नव स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों के सर्वक स्म में डा० 'तस्मा' सदैव स्मरणीय रहेंगे । इस काव्य सर्जना में लोक-संस्कृति, आदर्श, यथार्थ, राष्ट्रियता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की कवि ने काफी उभारा है । आधुनिक परिवेश और यथार्थ जीवन-बोध के कवि डा० 'तस्मा' आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास के एक प्रमुख हस्ताक्षर है । '

1. कविवर 'तस्मा': सर्जन के चरण, पृ० 108-109

2. हिन्दुस्तान दैनिक, दिल्ली 5 अप्रैल, 1978 .

3. डा० अब्ब विह, का निबन्धा, समिधा-2, अतीगढ़, 1977, पृ० 14 .

आचार्य विनय मोहन शर्मा का ज्ञान है ।

'आधी और बाँदनी' में आचार्य की मासतता, राष्ट्रीयता को उद्बोधित करने वाली प्रसफारी प्रारता, उत्पीड़ितों के प्रति सदानुभूति और शोषकों के प्रति तीव्र छीष तथा वर्तमान वावस्था से उत्पन्न चोटन की विवशता देली जा सकती है-अनुभाव की जा सकती है, कही भी उसमें काव्य-गुण क्षीण नहीं हो पाया, यह उसकी श्रेष्ठत सबसे बड़ी उपसिद्धि है । . .

(फैट)

समर्पण

हमारे
नयन-तारे
प्राण-प्यारे
जीवनाधार, एकमात्र पुत्र
अमित
को

जो—
आया !
खेला !
गया !

—चिर विरह-विदग्ध
मम्मी (कान्तिबाला)
तथा
पापा

कवि-आत्मज



अमिताभ



(ग) इन शिल्पी संग्रह के

इस काव्य-कृति का प्रकाशन 1984 ई० में होता है। इसमें 61 कविताएँ संग्रहीत हैं। इसमें नवीन भाव बोधा एवं जीवन संज्ञा की कविताएँ हैं। इस रचना का दुर्भाग्य है कि इसकी कुछ कविताएँ अमित के निधन के बाद लिखी गई हैं। कुछ कविताएँ उसके पत्नी की हैं। 'अमित-स्मृति कुंज' की रचना अमित के निधन के बाद की है। इस रचना में 'कविवर' 'तस्मा' जी की 1981 से फरवरी 1984 तक की कविताएँ संग्रहीत हैं। पुस्तक 'अभिज्ञान भाण्डवतवास स्मृति प्रतिष्ठान के तत्वावधान में प्रकाशित।

प्रकाशन-पुष्प-1

कविवर 'तस्मा' जी ने अपनी इस रचना के संदर्भ में 'पहले पाँड़ो-सा-वह' में कहा है :

'हम शिल्पी संग्रह के' नामक संग्रह अब अपने प्रिय व सम्मान्य पाठकों के हाथ में है। इसके सम्बन्ध में मुझे कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है।

केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि इसमें वस्तु और शैली की मैंने अपने लिए अनेक नयी भूमियाँ काँटाई है, कई नई प्रश्न पगडंडियाँ पकड़ी हैं, और मेरी आज की विशुद्ध चेतना के लिए मैंने अपनी एक अभिव्यक्ति प्रवण की है। 'इस काव्य कृति की 'अमित-स्मृति कुंज' कविता वस्तुतः निराशा की 'सराय-स्मृति' की स्मृति का साया करती है। निराशा को अपनी एक मात्र संतान सराय के लिए 'सराय-स्मृति' लिखनी पड़ी। शोकगीत में आन्तरिकता की सज्जता उभारती है। 'अमित-स्मृति-कुंज' की पहली रचना 'निपति नगा नाच' में कवि ने साहस के साधन नियति के नगा नाच को बताया है : -

अचानक-

सीतरे पहने

हिर पर सीतरे से बात बिजरी

जैसे अंधारे में

औंटे दात वाली, दुरींदार चेहरे वाली

मिच मिची, नकटी-झूठी

फटीचर नियति

क्याम-मच के इस और से तात्ती बजाती

दोनों हाथों में जूदी-जूदी चलती

अपनी लम्बी मोपारी कैंची से

हमारा किम्बा, सुनस्ता, रेशमी धागा काट गईं डाच्कू... डाच्कू...
डाच्कू करती¹।... इसके बाद 'अमर अभिताशा'², 'जाती दीवाली'³
पुत्र मरण जन्म-गाँठ'⁴, 'शात'⁵, 'स्मृति का गुलाब'⁶ शीर्षक कविताओं
में कवि की आन्तरिक वैदना की मार्मिक अभिव्यक्ति है। वे रचनाएँ
आन्तरिक वैदना से सिन्त हैं।

शांति से पूर्ण होने से इसमें विनाद की पूरी संभावनाएँ हैं।

1. हम शिल्पी संग्रह के, पृ० 89

2. वही, पृ० 90-92

3. वही, पृ० 93,

4. वही, पृ० 94

5. वही, पृ० 95

6. वही, पृ० 96

मौन पलकों को सुधियों से भार लेने दो !
 जीलों की नीरव-नीरव झर लेने दो ।
 छाती को मत दबाओ -
 धीरे-धीरे मन को और मत घाटकाओ !
 इस बरसाती बाधा को मत रोकिए-
 सरा गाव देगा उजाड़ !
 कट जाने दो, गल जाने दो
 अनन्त व्यथा का यह पहलु !
 उस मुला मंडल की गहरी मीठी याद में
 हमें जी भरकर रो लेने दो-
 जो कुछ होता है
 आज, ही लेने दो ।

कविवर 'तस्या' जी ने 'हम शिल्पी संरास के' के संदर्भ में
 कहा है कि प्रकृति-सौन्दर्य, मानव सौन्दर्य और मानसिक (भाव) सौन्दर्य
 सभी के प्रति मैं सम्मान भाव से आकृष्ट रहा हूँ। जीवन की क्लृप्तताओं।
 विद्रूपताओं को मैं अपनी सौन्दर्य चेतना में यथा स्थान व उचित अनुपात
 में समाविष्ट करता हूँ। सौन्दर्य को मैं कला-संस्कृति व सत्य का प्रथम
 मूल्य मानता हूँ जिसमें उसे स्वास्थ्य, सन्निधि व ताजगी पहुँचाने वाले
 'शिव' व 'सत्य' तत्वों का सहज समावेश हो ।

जहाँ जीवन के महान आदर्श व मूल्यों से मैं अनुप्राणित हुआ हूँ
 वहाँ जीवन के यथार्थ ने भी मुझे कम आकर्षित नहीं किया है। यथार्थ
 और आदर्श दोनों ही भूमियों पर मेरी चेतना ने बिना बैज या क्लृप्ता
 लगाये स्वच्छन्द विचरण किया है। परिपूर्ण व स्वस्था-समृद्ध जीवन
 चेतना की अकुठित अनुभूति के लिए दोनों में किसी से भी मेरा तनिक

भी परहेज नहीं रहा। मनुष्य के सुहा-स्वातंत्र्य की व्यापक आकांक्षाओं के प्रति एक स्वतंत्र चेतना सर्वक की तरह सजग रहकर ही काव्य-साधना में ब्रज निमग्न रहना मुझे प्रिय रहा है। 'वस्तुतः' 'तस्या' की प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, जीवन की कृस्पता, विद्रूपता, आदर्श, पथार्थ की भूमियों में स्वच्छन्द विवरण करते हैं। प्रकृति-चित्रण में जैसी इनकी प्रतिभा अपना रंग उभारती है। काव्य ज्ञा की साधना पुत्र शांति की स्थिति में भी वैसी ही उभारती है। ये रचनाएँ कविता के इतिहास में एक नया संदर्भ देती हैं। शांतिगीत स्वच्छन्दतावादी कविता की विधादमयी आन्तरिक अभिव्यञ्जना होती है। इसकी चेतना आत्म परक होती है। वस्तुतः कविवर 'तस्या' की काव्यात्मक साधना में स्वच्छन्दतावादी तत्त्व के रूप में शांतिगीतात्मक अभिव्यञ्जना की बढोत्तरी 'सम शिल्पी संवास' में हुई है।

पंचम-अध्याय

रामेश्वर लाल ठाण्डेलवाल 'तस्मा' की कविताओं
में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ

(क) भाषा बोधा

(ख) शिल्पगत

(क) भाव बाधा

रामेश्वरतात ङण्डेलवाल 'तस्या' प्रेम, सौन्दर्य और विद्रोह के कवि है। प्रेम और सौन्दर्य के द्रष्टा और स्रष्टा होने के नाते इनकी कविताओं में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं। इनकी कविताओं में सर्वनात्मक रूपना अपना विस्तार इन अनेक स्मों में करती रहती है और स्वच्छन्दतावादी संघर्ष उभारता रहता है। कविवर 'तस्या' ने प्रथम आलोचनात्मक संग्रह शोध-प्रकाश 'हिन्दी कविता में प्रकृति-चित्रण' १९०१० की परीक्षा के लिए लिखा था। इसलिए प्रकृति के प्रति सहज आकर्षण इनकी कविताओं में मिलता है। प्रकृति वर्णन की वे सारी प्रक्रियाएँ जो रोमांटिक काव्य-कला की होती हैं, इनकी कविताओं में देखा जा सकती हैं।

प्रकृति प्रेम

कविवर 'तस्या' प्रकृति के सुकुमार कवि है। प्रकृति के प्रति सुकौमल रूपनाएँ इनकी कविताओं में उभारती रही हैं। ये स्वच्छन्दतावादी कवियों की तरह प्रकृति को सदैव मानते हैं। उनमें मानवीय संवेदना की अनुभूति करते हैं। उन्हें ओढ़नी पहने शागती उचा कलियाँ का मूँछाट ढालकर मुस्कुराती, शशि बाला प्रधामासिंहा में सज्जा के कारण सिमटती, पृथ्वी बदनी की घादर ओढ़कर सोती हुई गिरि-मालाएँ उनीची प्रवृत्तियाँ की तरह दिखाई पड़ती हैं।

प्रकृति के प्रति वही संवेदनशीलता के कारण उसे लगता है कि वह मानव के सुहा-दुःहा की रूहें है। उसके सुहा में सुहा और दुःहा में दुःहा अनुभाव करती है। प्रकृति-यही मानव की तरह सहृदय के साधा-साधा प्रेरणा के स्रोत भी है। अंग्रेजी के रोमांटिक कवि वर्ड्सवर्थ और शैली तथा छायावादी-स्वच्छन्दतावादी कवियों पत, प्रसाद, निराला की तरह 'तस्मा' जी भी प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करते हैं। चिड़ियों से वह प्रार्थना करते हैं कि वह उसे सन्मार्ग पर चलने की शक्ति दें। चिड़ियों से वह पुनः प्रार्थना करते हैं कि वे हिंसा के ताण्डव के मध्य अहिंसा-प्रेम का संदेश दें और हरियाली से उनका निवेदन है कि वह उन्हें अपनी हरियाली, आशा और रस प्रदान करें।

'तू मुझको' निज हरियाली दे,
अपनी आशा अविशाली दे,
मन की भाषा रूखाली दे,

तू सीहा मुझे कैसे करना मन के रस से जीवन-विकास दे, शैल तटी की हरी ग्रास।¹

स्वच्छन्दतावादी रहस्य भावना की तरह 'तस्मा' जी प्रकृति में परम तत्त्व के दर्शन करते हैं। कण-कण में उसे परम सत्ता का प्रतिबिम्ब, उसकी छवि और उसका स्पन्दन अनुभाव होता है। कभी उसके मन में उस अनन्त सत्ता के प्रति विश्वास और कौतूहल भाव अंकुशित है पतस्वस्म वह उस परम छवि के दर्शन करना चाहता है।

अरे, मुझे उस ज्योति सिन्धु की दिहाला दो तुम सतक निराली¹।

1. हिमाचल, पृ० 49.

वह उसकी छाँज में निमग्न पड़ता है, पर जब उसके दर्शन नहीं होते,
तो उसकी कचोट उसे बेचैन कर देती है। 'मे घिर सुडा से व्याकृत होकर
गीत-मधुर गा उठता शत-शत, प्रथम किरण के स्वर्ण-बाण से जैसे
बात-बिहग ममहिता।' इस तरह हम देखाते हैं कि 'तस्मा' जी ब्रह्मवादी
कवियों के समान प्रकृति में परम तत्त्व के दर्शन कर कहीं जिज्ञासा, कहीं
दर्शन और कहीं मिलन की आकांक्षा और कहीं असफल होने पर अपनी
पीड़ा की अभिव्यक्ति की है।

प्रकृति के रौद्रस्व भी इनके काव्य में 'कामायनी' की तरह
के रौद्रस्व भी इनके काव्य में 'कामायनी' की तरह चित्रित है। सागर
की दिग्गन्धापी, उत्तास तरंगों और लहरों वाला दृश्य उन्हें मुग्ध
करता है²।

कविवर 'तस्मा' जी प्रकृति के चित्रण में लोक-संस्कृति, लोक-
परिवेश एवं लोक चेतना की शक्ति सजाते हैं। लोक संस्कृति, लोक
परिवेश की अभिव्यक्ति स्वच्छन्दतावादी चेतना का व्यापक स्म है।
'सरसा' पूती³, 'जोत की ओर' पूनों का बीद⁴, 'माम-कपू'⁵, 'माटी के गार'⁶
'चिड़िया'⁷ शीर्षक कविताएँ, ग्रामीण परिवेश को चित्रित करती हैं।
'हिमाचल' के अन्त में 'गीत'⁸ शीर्षक कविता ग्यारह छण्डों में

1- वही, पृ 49

2- प्रथम किरण (शक्ति का सौन्दर्य-स्वप्न 'शीर्षक कविता') पृ 79-79

3- हिमाचल, पृ 79

4- .. पृ 80

5- .. पृ 81

6- .. पृ 82

7- .. पृ 87

8- .. पृ 90

9- .. पृ 93-104

विभाजित हुई है। इसमें कवि की लोक वेतना के साधा-साधा वैयक्तिक वेतना की भी अभिव्यक्ति भी होती रही है।

ग्राम-विरहिणी दीप जलाती !

पिशा गये परदेश, न आई अब तक हाथा, पल्लु की पाती !

ग्राम विरहिणी दीप जलाती ।''

xxx

xxx

xxx

xxx

पल-पल जोर रही है पति आगम,

लौट कुशल से आवें बालम,

मन भाङ्गित, हिमकता दीपा, राख अधोरी बटती जाती ।

ग्राम विरहिणी दीप जलाती ।''

प्रेम

वैयक्तिक वेतना की प्रस्तुति इन गीतों में हुई है। वैयक्तिकता गीतों में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति होती है।

'जो इस काव्य-कृति में प्रचुर मात्रा में दिखलाई पड़ती है। इस क्रम में अन्तिम गीत का मूल प्रतिपाद्य स्वच्छन्दतावादी ही है।

'गीत' शीर्षक कविता का पाँच वे छण्ड में वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रेम रस से सज्जत है। विगत अनुभूति में प्रिय पात्र को याद किया गया है :

1. हिमोचला, पृ० 93.

वै सुन्दर से दिन बीत गये !

अनुराग-भारा रवि अस्त हुआ, सुधि-मैरा सुनस्से-शेष रहे ।

वै सुन्दर दिन से बीत गये !

सातवें जण्ड में भी वैयक्तिक अनुभूतियाँ का चित्रण है ।

इसमें किमता-नुभूतियाँ तो कविवर 'तस्या' ने चित्रित करना चाहा है:

वह एक बसन्ती रानी का

सपना था, जो अब टूट गया ।

जल धारा में दो तिनकी का

संयोग हुआ था, छूट गया ।

xxx

xxx

xxx

xxx

बीती बातें मत याद दिला² ।

वैयक्तिक आन्तरिकता की प्रस्तुति 'चाह'³ शीर्षक कविता

में की है । कवि की दृष्टि है, प्रेम की प्रीति की तथा उसे बसत का

नया प्रभाव चाहिए । इसमें मानव प्रेम की अभिव्यक्ति है । संसार

की कोई भी चीज कवि के लिए प्रेम से अच्छी नहीं है। उसे तो वह स्वर्ग

से भी महत्वपूर्ण बताता है । इसलिए प्रेम के सुरम्य स्वप्न की आकांक्षा

को वह व्यक्त करता है । प्रेम की चाह उसे है । 'तुम मेरे साथी होते

तो'⁴

1. वही, पृ० 97

2. वही, पृ० 99

3. वही, पृ० 38

4. वही, पृ० 43

शीर्षक कविता में भी रोमांटिक प्रेम की प्रस्तुति हुई है।

'तुम मेरे साथी होते तो, जीवन नन्दन बन ही जाता।

हम एक डाल पर रह लेते,

आधी पानी सब सह लेते।

छात साधा, पहुँचकर पूजा में चुपचाप विसर्जन हो जाता'।

इसमें विगत प्रेमानुभूति को अतिव्यक्ति हुई है। प्रेम की दुनिया में प्रेम में एक प्रेम साथी की उपस्थिति से कवि का जीवन नन्दन बन ही जाता है। प्रिय पात्र के वियोग का अभाव कवि को है। उसकी याद में, उसकी उपस्थिति से उसके जीवन में नयी चेतना उभारती, ऐसा उसका सोचना है। यह सब रोमांटिक प्रेम का छति है।

'मुँहा-छवि' में कवि ने वैयक्तिक विगतानुभूति को प्रिय पात्र के माध्यम से अप्रति अपनी स्मृति को ताजा करता है :

'तुम्हारे मुँहा-मँडल का ध्यान-

हृदय में जब आता है प्राय-

ताड़ु जीवन के नियम विधान,²

'स्मृति' में भी विगतानुभूति की प्रस्तुति कविवर 'तस्या' की स्वच्छन्दता वादी चेतना का ही विस्तार है। यही वैयक्तिक प्रेम व रोमांटिक प्रेम का सुन्दर निदर्शन हुआ है।

1. वही, पृ० 43

2. वही, पृ० 45

3. वही, पृ० 46

'तस्मा' जी का प्रेम दर्शन परम्परागत होता हुआ भी सहीन है । इसकी चेतना रैमार्कि है । प्रेम का सैद्धांतिक स्वस्व 'तस्मा' जी के शब्दों में 'प्रेम की अनुभूति से ही आत्मा का उन्मीलन होता है और आनन्द कला छिटकती है ।..... उससे अन्तःकरण में स्थित आत्मा का तत्काल अनुभाव होता है ।' प्रेम से शून्य मानव हृदय मरणाट के समान है । प्रेम के अभाव में जीवन अड़ सी जाता है² । प्रेम के गायन करके ही जीवन की मधुर और अमर बनाया जा सकता है ।

'तस्मा' जी के प्रणय-गीतों में एक और प्रेम की उदात्त भूमि है तो दूसरी और गहन, संशक्त अनुभूति । वह जीवन के मधुमय सुन्दर सुमन की तलाश में है । वह वैयक्तिक प्रेम की पगड़ड़ी को छिड़कर मानव-मानव के प्रेम के लिए ईश्वर से प्रेरणा भी मांगते हैं । इसके लिए कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है:

'हमें प्रेरणा दो प्रभु ऐसी
प्रेम बढ़े मानव-मानव में,
नृत्य गान कर मोद मनावे
हम जीवन के सुसुमोत्सव में'³

'दो चिड़िया' शीर्षक कविता में भी प्रेम की महिमा का गान है
हिसक जग में जाकर तुम
यह प्रेम दिगाओ, पंछी ।
स्वर्गीय प्रेम का संकुल-⁴
सदेश सुनाओ पंछी ।''

-
1. डॉ० रामेश्वर लाल छाण्डेलवाल, आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य, पृ० 93-94
 2. हिमाचल, पृ० 26
 3. प्रथम प्रेरणा, पृ० 4
 4. वही, पृ० 24 .

‘गाव की ओर’¹ तथा ‘पावस-श्री’² में -

बासों के दुरमुट की अगवा
 नैनों की छाया सहज लिपट-
 दानों के धार की भीतों से,
 करती स्वाभाविक स्नेह प्रकट³।

इसमें ग्रामीण परिवेश में सौन्दर्य प्रेम का चित्रण तत्काल चेतना का व्यापार है।

‘पावस-श्री’ शीर्षक कविता में तत्काल जीवन एवं तत्काल रस की गगरी छलक रही है :

‘जा रही छास के गढ़र लै
 अ व्यस समीर में लहराती
 गाती जाती मृदु कंठों से
 रागिनियों मीठी देहाती-
 नैसे से आभूषण पहने
 जौड़नी डीठ की जौड़ नवत,
 दृग चपल, प्रणय रस से पूरित
 यौवन-रस-पूरित वक्षस्पात।⁴

गाव का जीवन और गाव के लोग गाव की सादृ⁵ शीर्षक कविता में चित्रित हैं।

1. वही, पृ० 26

2. वही, पृ० 27-28

3. वही, पृ० 26

4. वही, पृ० 28

5. वही, पृ० 74

कविवर 'तत्त्वा' जी की कविताओं के संदर्भ में श्री कन्हैया लाल रूस्त का कथान है: 'कल्पना और अनुभूति का सुन्दर सामंजस्य आपकी अधिकांश कविताओं में है। कुछ कविताएँ भावना प्रधान होने के कारण अत्यन्त मार्मिक बन गई हैं।' 'श्री रामेश्वर लाल छाण्डेलवास 'तत्त्वा' की रचनाएँ छायावादी युग की प्रतिनिधि होते हुए भी उसके दोषों से रहित हैं। उनकी कविता में अनुभूति की तीव्रता, सत्य और कल्पना के समन्वय का उद्योग, भाव और विचारों के सामंजस्य का प्रयत्न एवं व्यंजना की स्पष्टता है, उनकी भाषा में प्रवाह और छन्दों में गति है। वे अनावश्यक अनेक स्मृता से बोधित नहीं हैं।'²

स्वच्छन्दतावादी प्रेम स्मृति के चित्र 'तत्त्वा' जी की कविता में अनेक स्थान पर चित्रित हुई है। कभी उसे सुदूर दिन की नीली याद सताती है जब प्रेम-युगल अत्यन्त मस्ती-पौवन में होते तो उन दिनों की याद स्वाभाविक है। स्मृतियों की इन गहन नीली गारटियों में वह भावमय सौन्दर्य की झलक पाता है और उनमें डूब जाता है। उसे अपनी प्रेयसी का स्मास सुनाने पर रात-भर नींद न आने की राटना याद आ जाती है तो कभी बरसाती रात में बंसरी की तान सुन उसकी व्यथा हरी हो उठती है।

'याद न कर मन, प्रीत पुरानी।

जल जायेगा छाव गुलाबी, वह जायेगा उर का पानी।

याद न कर मन प्रीत पुरानी'³।

1. 'प्रधान किरण' पर कुछ विशिष्ट सम्मतियाँ

2. कबी, टी० सोमनाथ गुप्त का अग्रिमत.

3. आधारी और चौदनी, पृ० 119

'आँधी और बादनी' के दूसरे छाण्ड में 'बादनी' छाण्ड में जीवन आशावादी रूप में चित्रित है। वैसा कि 'हिमाचला' के 'अमर विश्वास' शीर्षक कविता में भी कवि जीवन के प्रति आशावात् दिशादर्श पड़ता है।

जो छो गया सो छो गया,
जो छो गया सो छो गया,
जो छोटा प्यो सो उस गई,
जो रोष है वह स्वर्ण है !
विश्वास है मन में अमर !²

वस्तुतः 'बादनी' छाण्ड की 'हम-तुम कहीं चल दें'³ शीर्षक कविता रोमान्ती वातावरण की सृष्टि करती है। कवि अपनी प्रियसी से अतिशय आत्पन्निक उड़ान में उड़ना चाहता है।

दूध-जैसी बादनी एक नन्हीं नाव पर हम तुम कहीं चल दें।
मे तुम्हारे कृत्यों को सुनाता डाँटे बताऊँ,
नाव टकराने लगे-गुल-कुल में तुमको बचाऊँ
मधुर दुरागत चिरन्तन रागिनी सुनते अमर-
हम तुम कहीं चल दें !⁴

'पूत जिते बेता के'⁵ शीर्षक कविता में रोमांटिक प्रेम को चित्रित किया गया।

1. हिमाचला, पृ० 20
2. हिमाचला, पृ० 21
3. आँधी और बादनी, पृ० 103
4. वही, पृ० 103
5. वही, पृ० 105

है।

संझा, मूत छिले बैठा है, तुम मुसकाओ ।
 यह रात मछानियाँ, है बादनी स्मरती ,
 कबरी के कच्चे दुधा-पैन-सी उबती,
 है उड़ी-मीठी, कैसी केशरवत-सी,
 सुन लेगा कोई-घुड़ी मत जान काओ ।

फिर नहीं आज सी रात कभी मिलने की,
 बगिया भी ऐसी कभी न फिर छिलने की,
 मैं मूँटूकलिया जल से कुनात में-
 तुम जन जाने अपना अचरा छिसकाओ¹ ।

दूर-वड़ी दूर-तुमको मैं ले जाऊँ दूर - वड़ी दूर² ।

इस गीत में भी रोमांटिक प्रेम व वैयक्तिक प्रेम का चित्रण है । यह रोमांटिक प्रेम वस्तुतः स्वच्छन्दतावादी चेतना की मूल-चेतना है और यह विशुद्ध स्वच्छन्दतावादी संदर्भ भी है ।

‘किसने बजाई बसरी ।

बरसात की इस रात में व्यथा कर दी हरी ।

किसने बजाई बसरी³ ।

इस गीत में बासुरी की आवाज से पुरानी प्रीत की याद कष्टकर हो जाती है । पुरानी स्मृतियाँ ताया होकर मन को पीड़ा देने लगती हैं। प्रेम की कहानी विषाग की

1. बादनी और बादनी, पृ० 105

2. वही, पृ० 106

3. वही, पृ० 107

दशा में पीड़ा देती है। वही स्थिति कवि को इस गीत में भी देखा जा सकती है -

'न जाने कौन जनम की बात-

याद मुझे आ जाती सहसा, जब लौंती बरसात !

'ऊड़ी-मद हवा बरसाती

रौम-रौम सुधि से भार आती !

जी करता-धिर मौन रहूँ मैं, होंवे नहीं प्रभात'।

इसी तरह की रोमांटिक विगतानुभूतियाँ को कवि इस गीत में भी चित्रित करता है।

'याद न कर मन, प्रीत पुरानी ।

वे मधु के दिन कब के बीते-

लौट मेरा, बरस, लौं रीते !

औत पक चुके अब गीतों के सावन से क्या आनी-जानी ।

याद न कर मन प्रीत पुरानी ?'

इसमें वैयक्तिक चेतना के अंश पर बल है।

कवि आशावान है। वसंत कवि मन में बदलाव की स्थिति ताना बाँधता है।

'हरा करी निज प्यार पुरातन,

जोड़ी नेह के बन्धान,

प्रेम-पातियाँ सिँहों शब्द से,

सम्बोधन में सिँहों-प्राण-धान'³

1. वही, पृ० 117

2. वही, पृ० 119

3. वही, पृ० 138

यही आशा मयी जीवतता 'मेरे गीत मीन मत छौना' में कवि ने
चित्रित करता है :-

जब सँसार व्यथाओं का सा-
हो जाये काजल-सा करता,
चन्द्र किरण बन आलोकित कर देना शून्य
हृदय का कौना ।
मेरे गीत मीन मत छौना¹ ।

इस तरह हम देखाते हैं कि 'दादनी' 'छाण्ड' में 'गीत' शीर्षक के
द्वारा कवि ने अपनी आन्तरिकता वैयक्तिकता के साधन विगतानु-
भूतियों को चित्रित किया है। यहाँ रोमांटिक प्रेम का अंकन हुआ है।
वैयक्तिकता इसकी पहचान है तथा विगतानुभूतियों को बड़ी स्थानता
से कवि चित्रित करता है।

वस्तुतः यहाँ कवि की प्रेमानुभूति की अभिव्यक्ति एक क्षण भी
मानवीय संवेदना से पृथक् नहीं हुई है। इसलिए उन गीतों में सहजता,
सरसता एवं स्वाभाविकता की सरसता है। प्रकृति के माध्यम से प्रणय
की सुकुमार अभिव्यक्ति उनके प्रेम काव्य की एक अन्य विशेषता है।
प्रेमसी की स्मृति उनके मन में बिजली सी कौंधाती है, प्रेयसी के सौन्दर्य में
उन्हें प्रकृति का असीम सौन्दर्य प्रतिभासित होता है और विरहिणी
की मनो-दशा का चित्र अंकित करते हुए भी वह प्रकृति के उपादानों
का सहारा लेते हैं। इस सब में कविवर 'तस्या' जी मानवी प्रेम और
सौन्दर्य के कवि के साधन-साधन प्रकृति सौन्दर्य के कवि भी हैं।

'व्यंग्य' के रूप में कवि अपनी चेतना की प्रस्तुति यथार्थवादी
शैली में करता है। व्यंग्य का अंकन 'आत्मकथा'² शीर्षक कविता में

1. वही, पृ० 139

2. आधारी और दादनी, पृ० 53

यदि वह आज के मानव के कृत्रिम जीवन एवं राजनीति के शिकंसे में जैसे व्यक्ति पर व्यंग्य करता है तो 'दत्त-बदतू' एवं 'देते हैं?' आदि कविताओं में आज के राजनीतिज्ञों पर भी व्यंग्य है। इस तरह हम देखाते हैं कि 'तस्या' जी के काव्य में मस्ती है, तप्त लोह की अस्पा धूमनी अग्नि की ज्वाला है तथा सतप्त मानव के विहासित हृदय का उपचार करने वाली शीतलता भी है।

राष्ट्रीय प्रेम :

कविवर 'तस्या जी' की कविताओं में अपने देश के प्रति प्रेम, प्राकृतिक-सुषमा के गौरवमय अतीत पर गर्व है। अतीत प्रेम के माध्यम से कवि राष्ट्रीय प्रेम को उद्बुद्ध करना चाहता है। अतीत गौरव से जब वह वर्तमान की दयनीय स्थितियों की तुलना करता है, निर्धनों को देखाता है तो उसका हृदय चित्कार कर उठता है और कभी उसके प्रति आक्रोश से भर उठता है। अतीतमय गौरव का स्मरण कराकर वह राष्ट्रीय प्रेम को तीव्रता करता है।

'महिमामय है देश हमारा !

प्रधान सभ्यता का उन्नायक युग-युग की महिमा है महित,
शुद्ध ज्ञान का आदि-स्त्रोत यह महादेश प्राचीन अछाण्डित
माध्य आर्य-संस्कृति का स्वामी सृष्टि मुकुट जन-जन का रणार

1. वही, पृ० 19

2. वही, पृ० 13

3. प्रधान किरण, पृ० 1

कविवर 'तस्या' जी के राष्ट्रीय प्रेम वाले गीत जीवन की गतिरहित बनाते हैं। यही गतिशीलता उनकी कविताओं की जीवन्तता है।

कविवर 'तस्या' जी अपनी काव्य प्रक्रिया के संदर्भ में बतलाते हुए कहते हैं: 'समग्र रूप से प्रकृति के प्रति मेरे मन में पुर्ण तक-आरम्भ से ही गहन आकर्षण का अपार विस्मय-विमुग्ध भाव रहा है। विशाल समुद्र, नदियाँ, पर्वत, मैदान, रेगिस्तान के शीघ्रता और अमल-दोनों प्रकार के भौगोलिक सौन्दर्य ने मुझे अभिभूत रखा है। द्रष्टृ होकर प्रकृति की उसकी सूक्ष्मताओं में निहारना, उसके निगूढ़ प्रभावों के तथ्या यथाशक्ति आत्मसात करना, तुलिका-चित्रण व वर्णन शक्ति में प्रकृति-विषयक अपनी अनुरागमयी चेतना को व्यक्त करना अपने विशाल आरम्भिक चरण में मेरा एक प्रमुखा प्रकृति कर्म बन गया था। प्रकृति के साम्निध्य के पिराट और उदस्त तथा लघु-कीमत व क्षुद्र सन्धी से मानसिक अपने मन की भावना की स्थापना का एक मूल्यवान सूक्ष्म प्रशिक्षण मुझे अपने जीवन में मिला है। मैंने अपने काव्य-साहित्य में गहन अनुराग-पूर्वक अपनी प्रकृति-विषयक चेतना को सम्प्रेषित है करने का शार्दिकतम प्रयत्न किया है। अब मैं मानव और मानव-समाज के जीवन्त सन्दर्भों में ही प्रकृति की सार्धक रूप में देहाने के प्रति उन्मुखा हुआ हूँ।

मानव-जीवन की विरह-मिलन-सुलभा व स्वाभाविक मादन भावमयी विशिष्ट प्रणयानुभूति की आत्मिक व ऐन्द्रिय भाव तरंगों में मैं आर्कठ व मुक्त भाव से डूबा उतराया हूँ।

उक्त अनुभूति से मेरे मन प्राण व जीवन की मेरे लिए कुछ अकथनीय व अतथ्य मिला है। कविताओं के साथ गीतों में भी मैंने अपनी प्रेम-सौन्दर्य विषयक रागात्मकता विशेष उच्चवसित व तत्त्वीय भाव से अभिव्यक्त की है।

मेरे संस्कार व वैयक्तिक प्रकृति ने जीवन की बहुमुळी सौन्दर्य-चेतना के अवगाहन में भी मुझे प्रवृत्त किया है, प्रवृत्त रूढ़ा है। कौमल, रंगीन, रमणीय, भाव्य व उदात्त तथा प्रचण्ड, शूरा, अनगढ़, कुत्स व सहज सामान्य में -तथा इन दोनों की मिली-जुली स्थितियाँ में व स्थानों में भी मुझे महान आकर्षक सौन्दर्य के दर्शन हुए हैं। प्रकृति सौन्दर्य, मानव-सौन्दर्य और मानसिक (भाव) सौन्दर्य सभी के प्रति मैं समान भाव से आकृष्ट रहा हूँ। जीवन की कुत्सताओं विद्रुपताओं को मैं अपनी सौन्दर्य चेतना में यथा स्थान व अनुचित अनुपात में सामाविष्ट करता हूँ। सौन्दर्य को मैं कला-संस्कृति व काव्य का प्रधान मूल्य मानता हूँ जिसमें, उसे स्वास्थ्य, समृद्धि, व ताजगी पहुँचाने वाले 'शिव' व 'सत्य' तत्वों का समावेश है।¹

वस्तुतः कविवर 'तस्या' जी के बाद मैं अपनी कविताओं में मानव प्रेम की अभिप्रेरणा करता हूँ। प्रकृति, मानव तथा मानव समाज की समकालीन जीवन समस्याओं तथा जीवन मूल्यों को भी चित्रित किया है। कविवर 'तस्या जी' अपनी प्रारम्भिक रचनाओं में स्वच्छन्दतावादी-छायावादी रहस्यमयता की प्रस्तुति आध्यात्मिक संदर्भ में चित्रित करते हैं। लेकिन बाद की कविताओं में वे विशुद्ध वैयक्तिक एवं मानवी क्रिया कलापों की चेतना की उभारने में लगे हुए हैं। वस्तुतः 'तस्या' जी में वे बदलाव की स्थिति पुनर्धारण की पहचान है। और स्वच्छन्दतावाद और यथार्थवाद के सहज मिलान से काव्य-सिद्धान्त में जो बदलाव की स्थिति बनती है। उसका प्रभाव कविवर 'तस्या' जी के रचना-प्रक्रिया पर भी है। 'आधी और चौदनी' तथा 'हम शिल्पी संरास के' में कवि ने यथार्थ की धारा पर कविवर 'तस्या' जी कहते हैं:

'जहाँ जीवन के महान आदर्श व मूल्यों से मैं अनुप्राणित हुआ हूँ वहाँ जीवन के यथार्थ ने मुझे कम आकर्षित नहीं किया है।

1. 'हम शिल्पी संरास के' पृष्ठ-9

यथार्थ और आदर्श-दोनों ही शूनियों पर मेरी चेतना ने बिना कोई बेज या कितना लगाये स्वच्छन्द विवरण किया है। परिपूर्ण व स्वस्था-समृद्ध जीवन चेतना की अकुंठित अनुभूति के लिए दोनों में किसी से भी मेरा तनिक भी परहेज नहीं रहा। मनुष्य के सुख स्वातन्त्र्य की व्यापक आकांक्षाओं के प्रति एक स्वतंत्र चेतना सर्वक की तरह सजग रहकर ही अपनी काव्य-साधना में निमग्न रहना मुझे प्रिय रहा¹। 'डा० अजय सिंह ने भी नव स्वच्छन्दतावाद' के विश्लेषण के संदर्भ में कहा है कि जहाँ स्वच्छन्दतावाद और यथार्थवाद अपनी सहजता से आपस में मिलते हैं, वही पर 'नव स्वच्छन्दतावाद' दृष्टि उभारती है²।

'तस्या' की कविताओं में स्वच्छन्दतावादी, नव स्वच्छन्दतावादी तरह आज भी तरंगित है। आधुनिक कवियों में स्वच्छन्दतावादी, नव स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों की दृष्टि से सं० रामेश्वर सात छापड़ेसवाल 'तस्या' काफी संशक्त कवि है³। 'वस्तुतः 'तस्या'जी की प्रारम्भिक रचनाओं में 'प्रणम किरण', 'हिमाचल' में विशुद्ध स्वच्छन्दतावादी दृष्टि उभारती है। लेकिन 'आधी और बादनी' और 'हम शिल्पी संग्रह के' कवि की चेतना जीवन यथार्थ से जुड़ गई है। फलतः इन रचनाओं में यथार्थ परक स्वच्छन्दतावाद, नव स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। यहाँ इनकी चेतना मानवी एवं यथार्थ परक हो गई है। अतः प्रेम के स्थान पर वैयक्तिक प्रेम के संयोग-वियोग मयी स्थितियों को चित्रित करते हैं। वैयक्तिक प्रेम के संदर्भ में दो पाटनारें 'तस्या'जी के जीवन में

1. 'हम शिल्पी संग्रह के' पृ० 11।

2. डा० अजय सिंह, नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 61।

3. डा० अजय सिंह, आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ पृ० 204

महत्वपूर्ण है जो उनकी काव्य धारा में एक दिशा संकेत करती है ।
वैयक्तिक प्रेमानुभूति की एक दशा विभाग की होती है, जिसमें मिलन
की संभावनाएँ आशा बनती हैं । ये स्थितियाँ दर्श, उत्साह एवं
आनन्दमयी होती हैं । लेकिन प्रिय पात्र की अनुपस्थिति सदा के लिए हो
जाय या प्रिय पात्र कठोर दपेट में आ जाय, उस मार्मिकता की अपनी
एक जास पीढ़ा होती है । ऐसी स्थिति कविवर 'तस्या' जी के जीवन
में आती रही है : बड़ी बहिन प्यारी, गुलाब की स्मृति में 'रजो केवल
तेरह वर्ष की अवस्था में ही क्रूर कात द्वारा हीन हो गई) कविवर
'तस्या' जी अपनी विगत अनुभूतियों को चित्रित करके रोमांटिक प्रेम
को विस्तार देते हैं ।

कविवर 'तस्या' जी की विगत अनुभूति बहन के मरने के बाद
चित्रित है : -

'मुझे गाँव में ते तुम मधुमय
मुक्त पवन में टहलाती,
अपनी धाती में से मुझको
जाला लाया से सुहा पाती' ।¹

xx xx xx

आज न तुम हो ही धरती पर,
और न हो ही सपनों में
पर भाटका ही करता है मन
दुःख में रह रह अपनों में² ।

इसमें कवि की वैयक्तिकता अपनी सव्यार्थ में अभिव्यक्ति अनुभूति में
आन्तरिकता एवं वैयक्तिकता इसकी स्वच्छन्दतावादी पहचान है⁴।

1- मधुमय किरण, पृ० 70

2- वही, पृ० 71

3- वही, पृ० 73

4- डा० जयसिंह, नव स्वच्छन्दतावाद, पृ० 64

इसमें शोक, विषाद एवं पीड़ा की गहनता की अभिव्यक्ति हुई है।

इसलिए इसमें स्वच्छन्दतावाद का भावबोध तथा शिल्प दोनों हैं।

.....

'हमशिल्पी संग्रह' के 'अमित-स्मृति'² कुछ शीर्षक छाण्ड में कविवर 'तस्या' जी का एकलौता पुत्र अमित के निधन की कारुणिक व्याप्ता कथा है। हिन्दी कविता के 'निराता' की 'सराज स्मृति' के बाद ऐसी सर्वना'हम शिल्पी संग्रह' में ही देखाने की मिलती है। यह एक दुःछाद संयोग है कि 'निराता' की एकलौती बेटी सराज के निधन पर 'सराज-स्मृति' की रचना हुई थी उसी तरह कविवर 'तस्या' (जी एकलौता पुत्र अमित की मृत्यु पर 'अमित-स्मृति' कुछ की रचना हुई थी³।

इस कृति की अधिकतर कविताएँ अमित के निधन के पूर्व की हैं। नियति का घक्र देखाए कि कविवर 'तस्या' इस कृति का नाम 'हम शिल्पी संग्रह' के बहुत पहले से ही देना निश्चित कर लिए थे, जबकि अमित के निधन के लिये थे, उस समय अमित के निधन की संभावना नहीं थी। अमित के निधन के बाद कविवर 'तस्या' जी 'सस्तुत' शिल्पी संग्रह के ही हो जाते हैं। छुट्टापे में संवेदनशील कवि की मार्मिक पीड़ा की स्थितियों का भान उनकी उन कविताओं में चित्रित स्थितियों से लगाया जा सकता है। नियति के प्रज्ञा, आस्था प्रसाद साहित्य के गंभीर अध्ययन से अपने जीवन में भी देखाने की मिलती है। पुत्र के सम्पर्क में कविवर 'तस्या' जी की वेदना एवं अमित की मर्मी कान्ति बाला की स्थितियों

1. वही, पृ० 171-72

2. हम शिल्पी संग्रह के, पृ० 89-96

3. हाँ अब सिंह, नव स्वच्छन्दतावाद, 174.

विरह-दिग्धा है। 'नियति, नगानाया' में नियति की कार्य-क्षमता को दिखाना गया है। कैसे नियति कवि का विरह, सुनहला लज्जा रेशमी धागा काट गई। कविता सर्वस्व ही लुट गया।

अमित के निधान के बाद एक कागज जिस पर उनके बच्चे अमित का हस्ताक्षर मिलता है। जिसका पूरा विवरण 'अमर अभिलेख' शीर्षक अध्याय में है। यह भी अपने में एक विरोधाभास ही है कि मरने के बाद मिलने वाला अभिलेख जिसमें मरने की अमिम सूचना भी है। 'अमर अभिलेख' नाम देकर कविपर ने इसे स्वच्छन्दतावादी रूप दिया है। इसमें कवि की अपनी उठी हुई जिज्ञासा है।

पुत्र निधान के बाद आने वाली दिवाली 'कली दिवाली' है। इसमें कवि की आन्तरिक बेदना अपने पुत्र की याद में उभारती है।

'तुम्हारी निविड़ स्मृतियाँ' की सातहें छुताते,
स्निग्ध धीब का यह मुद्-मुद्, मीठा-मीठा, नीरव नन्हा,

दीप जलाया है-

जन्म-जन्मान्तरों तक-

कल्प-कल्पान्तरों तक-

लोक-लोकान्तरों तक-

तुम्हारी आत्मा के अनन्त यात्रा-पथ में, इस दीप का-

कैसरिया सुनहला,

मीठा-मौमल,

शीतल आनन्द मय

सुगन्धित-तृप्ति दायक,

अनुराग पूर्ण

आलौकिक पक्षों ।

हे हमारे प्राण-प्यारे बेटे ।

हे नयन-तारे बेटे¹ ।

इसमें रीमाटिक प्रेम का विस्तार है । पुत्र के निधन के बाद भी कवि उसे अपनी चेतना में समेटता है और अपनी आन्तरिक वेदना को प्रस्तुत करता है ।

‘पुत्र मरणः जन्म-गीठ’ यह जाण्ड भी शीर्षक के निर्माण में दो विरोधी स्थितियों को बटोरती है । इसलिए शीर्षक में स्वच्छन्दता-वादी भाव छलकता है । एक ओर तो इसमें विरोधी तत्वों के समन्वित रूप का अन्त हुआ है । दूसरी ओर तो इसमें पुत्र के प्रति जन्म-गीठ पर जो अनुभूतियाँ उभरती हैं ।

मौन पतकों को सुधियाँ से भार लेने दो ।

आँखों को नीरव-नीरव एर लेने दो ।

आँसी को मत दबाओ-

धीरे धीरे मन को और मत गायकाओ ।

इस धरसाती बाधा को मत रोक-

सारा गीत देगा उजाड़ ।

कट जाने दो, मत जाने दो

अनन्त व्यथा का यह पहाड़ ।

उस मुँहा-मण्डल की मसरी मीठी याद में

हमें जो भार है री लेने दो-

जो कुछ होता है

आज ही, लेने दो ।

इसमें भी विगतानुभूतियाँ की पीड़ा मयी वेदना का पाद में कविवर 'तत्पा'जी की सच्ची अनुभूति का चित्रित है। 'शांत शीर्षक' छापड में भी पुत्र की उस स्मृति के द्वारा कवि अपनी मन स्थिति को चित्रित करता है :

मन, प्राण, आत्मा व जीवन के सारे अंग श की सुंदरता
हमारी साँसों का गहरा विगुल बन रहा है !

शांत । शांत । शांत² ॥

'स्मृति का गुलाब' शीर्षक छापड में भी अतीत की अनुभूतियाँ को उभारा गया है। कविता में उभारा कवि को अपने बेटे की याद प्रकृति के क्रिया-कलापों द्वारा भी सहसा ही जाता है। क्योंकि उसकी पीड़ा, उसका न सोना, उसके प्रति मन में ममता स्नेह का छिना-पे सारी स्थिति का रोमांटिक प्रेम की है इसमें अपने आत्मीय जन की प्रेमानुभूति को चित्रित किया जाता है। इस रचना में भी ऐसा ही हुआ है। -

मेरे निविड़ मन में

अटकी छी-मेरे बेटे अमित की याद³ ।

'हम शिल्पी संरास के' कविता संग्रह की भूमिका लेखन आरम्भ करने के पूर्व की स्थितियों को कवि ने बड़ी ईमानदारी से बताया है।

'हम शिल्पी संरास के' की भूमिका आरम्भ करने के क्षण में विराट् शून्य में आधी रात के क्लम ताते एकाकी आत्मसीन नशा की तरह अपने में ही अटक सा बैठा रह गया हूँ। वस्तुतः जो उस क्षण में जो हूँ वह अपने सुदीर्घ मानसिक जीवन की अनिवार्य प्रसूति ही ली

1. हम शिल्पी संरास के' पृ० 94 .

2. वही, पृ० 95 .

3. हम शिल्पी के संरास के, पृ० 96 .

है। 'पुत्र' के निधन के बाद 'हम शिल्पी संघ के' का प्रकाशन होता है। इसलिये इसमें पुत्र के प्रति स्नेह, उसकी याद कवि की विह्वल एवं दुःखी बनाती है। विषादमयी वेदना की अभिव्यक्ति के कारण कवि की वेदना वैयक्तिकता व आन्तरिकता को लेकर चलती है, जो उसकी स्वच्छन्दतावादी पहचान है।

इसी कारण आचार्य नन्द दुतारे बाजपेयी ने बहुत ही पहले कविवर 'तस्या' जी के लिए कहा था: 'उनकी बाणी ठाढ़ सच्ची हुई है और मधुर है, यद्यपि उसकी भावना में एक अनौठगी टीस है जिसका उद्गम किसी छिपे स्तर पर नहीं, दूहाती गहराइयों में है'।¹ श्री रामेश्वर शर्मा 'अवल' का कहना है: 'स्वच्छन्दता का एक ऐसा मादक और ताजगी से पूर्ण वातावरण का सुवन आप करते हैं कि हिन्दी के प्रत्येक कवि से दूर आप जलज दिव्यार्द्र देखें²।' 'वस्तुतः यह कथान 'अवल' जी की इनकी आरम्भिक रचनाओं के संदर्भ में ही है। अपनी अनुभूतियों की सच्ची चित्रकारी काढ़ने में कविवर 'तस्या' जी काफी सफल रहे हैं। चाहे वह वैयक्तिक प्रेम का व्यापार हो या वैयक्तिक पीड़ा, वेदना या यातना की। 'अमित' के नहीं रहने पर उस पीड़ा को कलात्मक ढंग से चित्रित करके हिन्दी में 'शोकगीत' की एक कड़ी जोड़ देते हैं। यही कविवर 'तस्या' निराशा की तरह अकेले हैं। डा० शिवकुमार मिश्र का कहना है कवि रामेश्वर तात ढाण्डेलवाल 'तस्या' को उस जमीन से गहरा लगाव है, जिस पर चलते हुए 'निराशा' पंत, प्रसाद और उन जैसे अनेक रचनाकारों ने किसी समय उपलब्धियों के शिखार हुए थे। उनकी भाव सम्पत्ति और उनका शिल्प-सौष्ठव उनके लिए एक ऐसी पूंजी है

1. कविवर 'तस्या' 'अवल' के चरण, पृ० 114

2. वही, पृ० 113.

जिससे किसी कीमत पर ये अपना अलगभाव नहीं चाहते¹। 'आचार्य
 विनय मोहन शर्मा का कथान है: 'आपकी कविताओं में छायावाद युग
 से अद्यतन काव्य-प्रवृत्तियों का इतिहास गुप्त है। उसमें छायावाद की
 रौमॉटिक मासलता, राष्ट्रीयता की उद्बोधित करने वाली मुहारता-
 उत्पीड़िता के प्रति सहानुभूति और शीथकों के प्रति तथा वर्तमान
 व्यवस्था से उत्पन्न झुटन की विवशता देहानि जा सकती है।' डा०
 देवीशंकर दिव्यवैदी का कथान है कि 'तस्मा' प्रत्येक धारातल पर एक प्रकृत
 कवि है³। 'वस्तुतः यह स्मना उचित है कि कविवर 'तस्मा' जी स्वच्छन्द-
 तावादी संशक्त कवि है। उनकी कविताओं में अनुभूति की सच्चाई
 तथा प्रगीतात्मकता ढूँढ उभारी है। इसलिए कविवर 'तस्मा' जी की
 काव्य-चेतना रौमॉटिक है। 'आकाश का निमज्ज⁴ दूर-कासे बादलों में⁵
 हम तुम कहीं धत दे, पूत छितें बैठा के, किसने खजाई बसुरी, यह दाद
 जिधर से आता है 'इत्यादि गीतों में स्वच्छन्दतावादी चेतना उभारी
 है। अक्षेय का कथान है: 'आधी और चौदनी' में गीत की प्रधाति की
 तलित रचनाएँ हैं। उनके गीत ही हमें सबसे प्यारी लगी⁶। 'गीत के ही
 'शोकगीत' है जिसमें उनकी वेदना, पीड़ा तथा पुत्र निधाम की मार्मिक
 अनुभूतियों की अभिव्यजना हुई है। आन्तरिक पीड़ा की सच्ची अभि-
 व्यजना इसमें है। इसके अतिरिक्त भी रौमॉटिक दृष्टि के रूप में नारी
 के आकर्षण अंगों के संकेत यत्र-तत्र कविताओं में है। 'चौदनी' छापड में
 स्वच्छन्दतावादी गीत है जिसमें प्रणय सम्बन्धा के आकर्षक बिम्ब उभारे हैं।

1. कविवर तस्मा सर्वजन के वरण, डा० शिवकुमार मिश्र का निबन्धा

कवि 'तस्मा' का रचना-संसार पृ० 67.

2. वही, पृ० 14-15

3. वही, पृ० 66

4-7 वही, 77, 101, 103, 105, 107, 122

8. वही, पृ० 28.

(७) शिल्पगतः

कविवर 'तस्या' जी प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। वस्तुतः वे 'हायावादी' काव्य से प्रभावित रहे हैं। इसलिए इनकी कविताओं की ये विशेष एवं शिल्प दोनों शक्तियाँ में स्वच्छन्दतावादी-हायावादी कविताओं जैसी सूक्ष्म रूपना, भाषा में तादात्म्यता, उपचारव्युत्पत्ति, मानवीकरण, बिम्ब एवं प्रतीक की प्रस्तुती हुई हैं। चांद पूर्व में अंगूरी रस का सागर लहराता है, हायावाक्य में तितली-दल रेशम का पट फहराता है, तारक कुंजी में प्रेम की मुरली बजती है, अपसरिणी हम हम नृत्य करती है और किन्नरिणी मंजीर बजाती है। इस प्रकार हम देखते हैं इनकी कविताओं में रूपना की सुकौमलता और स्वच्छन्दतावादी मनोवृत्ति के दर्शन होने लगते हैं। इनकी कविताओं में वाक्यों के शब्द स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं। हायावाद की रोमांटिक मासतता, ऐन्द्रियता, सौन्दर्य की सुकुमारता एवं भाषा की रगीन मादकता का प्रभाव इनकी भाषा पर भी है। इनकी कविताओं में वाहे प्राकृतिक सौन्दर्य ही और या नारी का मादक सौन्दर्य ही इन सभी के चित्रण में स्वच्छन्दतावादी विशेषताएँ-तादात्म्यता, सुकौमल शब्द-विधान, चित्रमयता, रोमान्तीक रूपना इत्यादि मिलती हैं। 'तस्या' जी का काव्य चित्र प्रधान है। उनके काव्य का आदर्श चित्र-रत्ना है, उनके काव्य में भावाभिप्रेत का माध्यम चित्रमयी भाषा है।

'आधी और चांदनी' जी कवि ने तीन छान्डों में विभाजित किया है: आधी, मुक्तक और चांदनी। वास्तव में इन तीन छान्डों का अपना महत्व है। आधी प्रतीकात्मक है कटुतम आत्म द्वय का

प्रतीक, जीवन की दुःखा का काव्यात्मक स्थापन और चौदनी प्रतीक है मधुर तम द्रव की। जीवन की मधुरतम ज्योत्सना की, जिसमें आधी की कटुतम अनुभूति को विस्मृत कर कवि जीवन के उत्साह और उमंग में डाले जाता है। वस्तुतः आधी की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति चौदनी की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति को और भी मधुर और मार्मिक बनाती है।

गीतात्मकता इनकी कविताओं में है। वस्तुतः प्रेम के गायक होने के नाते गीत का चयन आवश्यक है। 'हिमीचला' में 'गीत' शीर्षक कविता के कई छण्ड हैं। और उनमें कवि ने अपनी वैयक्तिक चेतना की प्रस्तुत की है। 'आधी और चौदनी' के चौदनी छण्ड में गीत है। उनमें भाव-प्रवणता और कोमलता के विशिष्ट उदाहरण 'चौदनी' की रचनाओं में हैं। इनमें से अधिकांश में आशा-विश्वास और उद्बोधन के स्वर हैं। 'चौदनी (छण्ड) प्रगीतों' का गण्डार है। और इसमें कवि की आन्तरिकता बोलती है। चौदनी में गीतों का वह स्वर है जिसमें मस्ती का आलम है। गाथा में भावों के अनुस्यू जहाँ संस्कृत निष्ठता है वहाँ लोकभाषा के ठेठ शब्द गीत हैं।

गीत की एक पद्धति 'शास्त्रीगीत' है जिसमें आत्मीय के निधान से वैयक्तिक-आन्तरिक पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति होती है निराशा की 'हरौक-स्मृति' के बाद कविवर 'तस्मा' जी ने 'अमित-स्मृति कुंज' लिखा। इसमें कवि की पीड़ा-वेदना अपने पुत्र की याद में उभारती है। वस्तुतः गीतों में अनुभूति की सच्चाई है। इस तरह हम देखते हैं कि संरचना में भी कविवर 'तस्मा' जी का काव्य समृद्ध है। उनकी गाथा में कोमलता, सुन्दरता, बिम्बात्मकता, क्लृप्तात्मकता, प्रतीकात्मकता लोक्यता तथा अप्रस्तुत योजना में नूतन रूपनाशीलता उन्हें स्वच्छन्दतावादी नव स्वच्छन्दतावादी कवियों के प्रथम कतार में छाड़ा कर देते हैं।

कविधर 'तस्मा' जी मूलतः प्रगीत कवि है। अतः ये भी इनकी इस कला की सराहना की है। वस्तुतः इनके गीतों की पढ़कर सुनी महादेवी वर्मा की प्रगीत की परिभाषा की याद आ जाती है प्रगीत व्यक्तिगत सीमामें तीव्र सुहा-दुःखात्मक अनुभूति का वह शब्दस्म है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके उनके हृदयस्थ भाव किसी प्रेरणा के भार से दबकर एक साधारण गीत में फूट पड़े हैं, उनके गीतों का जन्म अन्तर्ज्वारों से हुआ है-चाहे वह अन्तर्ज्वारों विरह, मृत्यु, जीवन-तपार्ण से उत्पन्न हुई हों और चाहे उसके पीछे मादर-मधुर स्मृतियों का ज्वार रहा हो। वे विशुद्धा प्रगीत (तिरिक्त) है, उसमें जीवन का तार कहीं नहीं टूटा है, चिन्तन या अलंकरण से उनसे प्रकाश की अवस्था नहीं किया है। भाव-प्रेम ऐश्व की दृष्टि से कविधर 'तस्मा' जी के गीत सफल है। उनके सभी गीतों में आरम्भ से अंत तक एक ही भाव अनस्पृष्ट है। सफल प्रगीत कला बाह्य रूप से नहीं होती, अन्तः स्फुरित होती है। गीतकार अपने हृदय की पीड़ा या उत्साह के ज्वार की समय में बाधता है। वस्तुतः समय की आग में तपकर ही शोक-क्रन्दन शोक गीत बनता है। 'तस्मा' में वह समय और भाव-नियंत्रण सर्वत्र हैं।

ਬਾਬੂ- ਅਪਾਧ

ਉਪਸ਼ਰ

नये साहित्यशास्त्र ने कलात्मक दुनियामें शास्त्रीयता-वाद, स्वच्छन्दतावाद तथा यथार्थवाद को जन्म दिया। क्योंकि मानव मन में इन वृत्तियों का निवास है। 'इदम्' की स्थिति में स्वच्छन्दतावादी कला उभारती है। 'अस्मि' की स्थिति में शास्त्रीयतावादी कला अपना विस्तार लेती है। 'अति अस्मि' की मनःस्थिति में यथार्थवादी कला का सृजन होता है। इसलिए कोई भी कवि या कलाकार मात्र स्वच्छन्दतावादी, शास्त्रीयतावादी व यथार्थवादी नहीं होता है, बल्कि उसकी वृत्तियों के क्रमानुसार ही काव्य-कला में ये प्रवृत्तियाँ उभारती चलती हैं। उसे ही हम कभी स्वच्छन्दतावाद, कभी शास्त्रीयतावाद तथा कभी यथार्थवाद के नाम से सम्बोधित करते हैं। 'इदम्' 'अस्मि' 'अति अस्मि' की दृष्टि का विस्तार काल-क्रम में 'उभारती' रहती है। साहित्य को शास्त्रीयतावाद और स्वच्छन्दतावाद के रूप में विभाजित करते रहते हैं, किन्तु कोई भी कवि ऐसा नहीं हुआ, जिसे विशुद्ध रूप से, स्वच्छन्दतावादी शास्त्रीयतावादी या यथार्थवादी कहा जा सके। वस्तुतः शैली में संतुलन, नियन्त्रण और नियमितता की मनोदशा में स्थिरता के कारण शास्त्रीयतावादी कह दिया जाता है, किन्तु ऐसे कवि के भीतर भी स्वच्छन्दतावादी भाव धारा प्रवाहित हो सकती है। इस प्रकार आवेग प्रधान भाव दशा तथा विस्फोट शैली का प्रेमी होने के कारण कवि स्वच्छन्दतावादी समझा जाता है, किन्तु एक हद तक नियन्त्रण और नियमितता बरतें बिना ऐसे कवि का काम नहीं चल सकता।

अब कभी एक वाद की प्रमुखाता से अनुसरण होने लगता है, तब उसके विरोध में दूसरी काव्य धाराएँ आविर्भूत होती हैं और

और एक संतुलन बनाती है। ऐतिहासिक दृष्टि से समस्त विश्व काव्य पर एक नजर डालने से यह भी बात होता है कि अनेक कवियों ने किसी एक वाद या सीमित सरणि का आधार नहीं लिया है। शास्त्रीयतावादी काव्य, स्वच्छन्दतावादी काव्य तथा यथार्थवादी रचनाएँ एक दूसरे के साधनों और उपादानों का बराबर अपनाती आती हैं और यही काव्य के सामाजिक विकास के लिए अपेक्षित भी हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शास्त्रीयतावादी तथा स्वच्छन्दतावादी एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं। काव्य-रसा का इतिहास इस बात का साक्ष्य है कि शास्त्रीयतावादी युग में भी स्वच्छन्दतावादी रचनाएँ होती हैं। शास्त्रीयतावादी कलाकार भी स्वच्छन्दतावादी काव्य रचना करता है और स्वच्छन्दतावादी कवि भी शास्त्रीयतावादी रचना कर सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि न कोई वाद, वाद या व्यक्ति निरपेक्ष रूप से शास्त्रीय या स्वच्छन्द होता है। लेकिन मनुष्य की कृतियाँ ही क्लासिक या रोमांटिक होती हैं। कृतियों की प्रधानता के कारण उसकी रचनाएँ कभी शास्त्रीयतावादी और कभी स्वच्छन्दतावादी कहलाती रहती हैं। देश-विदेश के विद्वानों का कथन है कि क्लासिक तथा रोमांटिक काव्य के नितांत भिन्न गुण नहीं हैं। एक ही कवि क्लासिक और रोमांटिक दोनों हो सकता है। सभी महान कलाकार क्लासिक तथा रोमांटिक दोनों होते हैं, केवल मध्यम एवं निकृष्ट श्रेणी के कवि कलाकार ही विशुद्ध स्वच्छन्दतावादी या विशुद्ध शास्त्रीयतावादी होते हैं। वास्तव में सभी बड़े कलाकार अपने युग में रोमांटिक होते हैं। रोमांटिक कविता केवल कविता का एक प्रकार ही नहीं है बल्कि कविता का एक तत्त्व भी है। इस दृष्टिकोण पर रोमांटिक काव्य वह है जो संवेदनात्मक वस्तु को रूपनात्मक रूप में चित्रित करता है।

स्वदेश-विदेश में काव्य का इतिहास एक सदैव आदेता रहा है और वह यह कि कविता वाद मुक्त होकर अपने चरम उत्कर्ष को प्राप्त करती

हैं। जब तक कवि की चेतना वादग्रस्त रहती है, तब तक पूर्ण समाधि की स्थािति उसके लिए संभाव नहीं होती और पूर्ण समाहिति के बिना पूर्ण आत्माभिच्यवित्त संभाव नहीं। वाद ग्रस्त चेतना विवाद में उलझ जाती है और विवाद निश्चय ही सर्जन को बाधक होता है। नया कवि अग्नी काव्य के आन्दोलन में इतना अधिक ग्रस्त है कि प्रायः समाहिति की स्थािति में नहीं पहुँच पाता। जब कभी ऐसा होता है तभी उत्कृष्ट काव्य का सर्जन भी होता है, पर वह सर्जन 'वाद' के तारे में नहीं जाती लेकिन कवि और आलोचक उस पर रोमानी हो जाने का बाधक करने लगता है। मूलतः अच्छी काव्य सर्जन के समय कवि 'वाद' के तारे में नहीं रह सकता। यदि वह 'वाद' के तारे के बाहर नहीं निरस्त पाता तो उत्तम काव्य का सर्जन उसके लिये संभाव नहीं हो सकता जब भी श्रेष्ठ काव्य की रचना होती है, उस समय कवि या लेखक किसी विशेष 'वाद' के तारे में नहीं होता, प्रत्युत उसके सामने साहित्य का विशाल क्षेत्र पड़ा हुआ प्र रहता है, उसी में वह रमता है, चाहे उसे कोई शास्त्रीय, रोमांटिक या ग्याणवादी, कुछ से प्रत्येक महान कलाकार अपने युग का स्वच्छन्दतावादी कलाकार होता है। कविता की शास्त्र रचना ने क्लासिक काव्य को जन्म दिया। लेकिन कविता अधिक दिनों तक परम्पराओं एवं शास्त्रीय प्रजाताओं में बंधकर नहीं रह पाती, वह आज के युग में समस्त उचित अनुचित बन्धानों को तोड़कर युग की आवश्यकताओं तथा मांगों से संकत पाकर स्वच्छन्द रूप में 'कवि' के अन्तःकरण से फूट पड़ी, जिसमें 'श्रेष्ठतर जीवन कल्पना', महत्वाकांक्षा, वैयक्तिक सम्मान तथा युग जागरण का समोहन गान निहित है। इस प्रकार आधुनिक युग में जिस कविता द्वारा मानव समाज की विविध समस्याओं मनुष्यों की दैनिक अनुभूतियाँ और भावी स्वर्णिम कल्पनाओं की अत्यन्त सत्य स्वच्छन्द अभिव्यक्ति होती है, उसे हम स्वच्छन्दतावादी कविता के नाम से अभिहित करते हैं।

'स्वच्छन्दतावाद' एक साहित्यिक आन्दोलन है, शक्ति है, जीवन के प्रति एक विशेष प्रकार की स्थान है। कवि इसमें सौन्दर्यानुभूतियों की अभिव्यक्ति सक्रिय रूपना एवं अनुभूति के आधार पर करता है। स्वच्छन्दतावादी व्यक्तिवादी होता है। इसमें स्वतंत्रता की तात्पर्य अधिक रहती है, परन्तु स्वच्छन्दतावादी कवि रुढ़िमत विचार धाराओं एवं जादूय शक्तियों के विस्थापन विमोह करता है। वह शक्तिकारी विचारों का समावेश करता हुआ राष्ट्रीय स्वातंत्रता, सामाजिक न्याय और व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावनाओं से मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध स्थापित करता है। ऐसी स्थिति में रूपना गतिशील एवं सूक्ष्म होती है जो कवि में भावावेश की स्थिति उत्पन्न करती है। कवि की अनारुढ़िष्ट ही जब सर्वनात्मक रूपना के माध्यम से व्यक्त होती है तो स्वच्छन्दतावादी चेतना उभरती है।

स्वच्छन्दतावादी कवि अपनी वैयक्तिक आन्तरिक काल्पनिक अनुभूति के माध्यम से संसार के उन अप्राप्य तथागोप्य साधनों एवं तत्त्वों की अभिव्यक्ति करता है जिनके सुझाव होने की संभावना रहती है। यह सब है कि इस संसार में मानव की सभी इच्छाएँ पूरी नहीं होती किन्तु इच्छा मात्र को समाप्त कर देने से कोई भी इच्छा अपने आप पूर्ण भी नहीं हो सकती है। विश्वास एवं कामना मानव जीवन के ऐसे तत्व हैं जो उसके जीवन को अधिक गतिशील रखाते हैं। वस्तुतः स्वच्छन्दतावाद एक भावना है इसके मूल में 'शक्ति एवं अभिन्न सृजन की प्रधानता है। स्वच्छन्दतावादी कवि सत्ता, परंपरा एवं रुढ़ियों का विरोध करता है, चाहे वह राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक या साहित्यिक ही क्यों न हो ? तत्कालीन स्वच्छन्दतावादी चेतना होती है।

वह व्यक्ति जो प्रकृति को जड़ समझता है तथा मनुष्य को शत्रु समझता है, जो रूपनाओं को केवल जोड़ने की एक शक्ति समझता है और जो मिथ्या, बिम्ब, प्रतीक एवं प्रगीत जैसे उपादान का प्रयोग नहीं करता, उसे स्वच्छन्दतावादी नहीं कहा जा सकता। स्वच्छन्दतावादी कविता के मूल

उपादान है। संयोगात्मक कल्पना शक्ति का प्रयोग, विरोधी चीजों का सामंजस्य, विषय और विपर्यय, मानव और प्रकृति, चेतन और अचेतन, केन्द्र और परिधि का विलयन है। इस प्रकार स्वच्छन्दतावादी काव्य-धारा वैयक्तिक आन्तरिक अनुभूतियों के आधार पर विरोधाभास समाप्त करने की साहित्यिक साधना है।

मानव मस्तिष्क की आत्मिक चेतना की आन्तरिक अभिव्यक्ति स्वच्छन्दतावाद है। स्वच्छन्दतावादी कवि यथार्थ की दुनिया से हटकर स्वयं निर्मित संसार में वापस आ जाता है और यही है प्रकृति की और लौटने की शुरुआत होती है। स्वच्छन्दतावादी कवि अपनी अनुभूति को सच्ची अभिव्यक्ति करता है। इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में 'तस्या' जी की कविताओं में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों की जाँच की गई है।

रामेश्वर ताल ढाण्डेलवाल 'तस्या' प्रेम, सौन्दर्य और जीवन के कवि है। जीवन के प्रति प्रगाढ़ आस्था और कल्पना, लोक की मधुरिम उड़ान काव्य उनके काव्य की विशेषताएँ हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि, तस्या के तस्या वैभव की लाती है मस्त यह कवि, हिन्दी काव्य संसार का अभिनव 'पत' है। उभा का मदिदौलतास, रवि रश्मियों का विकास, साध्य किरणों की गुलाबी गंधा, ज्योत्स्ना का रास, तारकों के भाव भी ने गान, फूलों की मुस्कान, पक्षियों का क्लरव, अलियों का गुंजन, प्रकृति का स्पन्दन, फुलक और कंप जैसे कवि के प्राणों में भावों का भाण्डार इनके काव्या के अध्ययन के बाद हल हल करता विस्त है।

'तस्या' जी का जन्म मीरा की भूमि राज्यस्थान के, गति-वाड़ा स्थान पर हुआ है। इनके गीतों में कल्पना का अपार वैभव है। उसमें जीवन से पलायन का स्वर नहीं है, बल्कि जीवन के प्रति आस्थावान हैं।

‘पाव तले की गूँमि छीन लीं

पर मन का विश्वास मत छीनो ।

झंझाओं में नीह उड़ा दो,

पर मेरा अकाश न छीनो ।’

सौन्दर्य, प्रेम, सुषमा और सरावता से मधुच्छायाँ से सिंचित कविवर
‘तस्या’ की रचनाओं का काव्य-सौरभ तब के मधुर पवन-प्रवाह पर
बहता मादकता भरा सदेश देता है :

यह बाह बिछार से जाता है ।

उस और कहीं पर अंगूरी रस का सागर सराता है ।’

कविवर ‘तस्या’ प्रेम और सौन्दर्य के कवि है । प्रसाद साहित्य से गहरी
रूप से जुड़े रहने से उनकी उमर प्रसाद की रोमांटिक कला का प्रभाव है ।
कविवर ‘तस्या’ के मन में प्रकृति के प्रति आसक्ति भाव है । प्रकृति प्रेमी
होने से उनकी काव्य-कला में रोमांटिकता आई है । ‘हिमाचल’ में ‘तस्या’
जी ने प्रेम और सौन्दर्य के मासत चित्र दिये हैं । इन कविताओं में क्लामय
रूप चित्रण है, मिसन और विरह के चित्र हैं, स्वच्छन्दता से भरा मादक
वातावरण है । ‘मुँहा-कवि’ शीर्षक कविता में नारी सौन्दर्य का वर्णन
स्वच्छन्दतावादी शैली में है । कविवर ‘तस्या’ जी प्रकृति के सुकुमार कवि
हैं । उनकी लेखनी तभी उठी है, जब अभिव्यक्ति के लिए विवश हो गये ।
उसने अपने में व्यक्तिगत राग-विराग, हृदय के समस्त आवेग-आवेश को
स्वच्छन्द होकर उन्मुक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है । ‘हिमाचल’ में कवि
की विभिन्न अनुभूतियाँ से सम्बन्धित 74 रचनाएँ हैं, जिनमें गीतों की
संख्या अधिक है । विषय की दृष्टि से रचनाओं में प्रेम प्रकृति चित्रण

की प्रधानता है। प्रकृति की कविवर 'तस्या' जी ने बड़ी तन्मयता से निहारा है। प्रकृति के साथ तन्मयता इतनी अधिक है कि वह अनायास ही प्रकृति के सुकुमारकवि 'पत' की सद्य स्मृति दिती देती है। वैयक्तिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए गीत एक अच्छी काव्य शैली है। इसमें कवि की आन्तरिकता की अभिव्यक्ति हर्षमयी व विषादमयी स्थितियों में होती रहती है। 'तस्या' जी मानव-प्रेम, प्रकृति-सौन्दर्य के साथ-साथ मानव सौन्दर्य के कवि हैं।

श्री रामेश्वरलाल छाण्डलेवाल 'तस्या' जी प्रेम, सौन्दर्य और विद्रोह के कवि हैं। और प्रेम सौन्दर्य के द्रष्टा और सृष्टा होने के नाते उनकी कविताओं में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं। प्रकृति प्रेम की वे सारी प्रस्थितियाँ जो रोमहर्षिक काव्य-कला की होती हैं, उनकी कविताओं में देली जा सकती हैं। कविवर 'तस्या' प्रकृति के सुकुमार कवि हैं। प्रकृति के प्रति सुकौमल कल्पनाएँ उनकी कविताओं में उभारती हैं। उनकी प्रकृति स्वच्छन्दतावादी व छायावादी कवियों की तरह सचेतन है।

'तस्या' जी के प्रणय गीतों में एक और प्रेम की उदात्तभूमि है तो दूसरी और गहन संशक्त अनुभूति। वे जीवन के मधुमय सुन्दर सुमन की तलाश में हैं और वे प्रेम की महिमा को भी स्वीकार करते हैं /

‘हिसक जग में जाकर तुम,
यह प्रेम दिखाओ, पछी ।
स्वर्गीय प्रेम का मंजुल-
सदेश सुनाओ पछी ।’

1. हिमाचल, पृ० 45 .

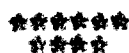
2. प्रणय किरण, पृ० 24

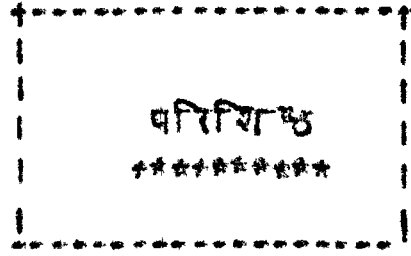
इनकी कविताओं में पत्र-सत्र शोक-रस एवं लोक जीवन की गमरी छलती है । कल्पना और अनुभूति का सुन्दर सामंजस्य 'तस्मा' जी की अधिकांश कविताओं में है । कुछ कविताएँ भावना प्रधान होने के कारण अत्यन्त मार्मिक बन गई हैं । स्वच्छन्दतावादी प्रेम स्मृति के चित्र 'तस्मा' जी की कविताओं में अनेक स्थान पर चित्रित है । 'आधी और चादनी' में चादनी छाण्ड में गीतों की प्रधानता है । ये गीत वैयक्तिकता व आन्तरिकता की अच्छी प्रस्तुति है । इसी क्रम में इनके दो गीत भी हैं जो 'शोक-गीत' हैं । 'प्रथम किरण' में 'बहिन गुलाब की स्मृति में भी पीड़ा है हम शिल्पी संरास के' में तथा निपति अपना ऐसी नगापन दिगाती है कि 'तस्मा' जी शोक के सागर में डूब जाते हैं ।

'हम शिल्पी संरास के' अमित-स्मृति कुंज- ' 'शोक-गीत' ' है । इसमें कवि ने अपने प्रिय पुत्र 'अमित' की मृत्यु वियोग में अपनी आन्तरिक वेदना व्यक्त कर रचा दिया है । पीड़ाभरी वेदनामयी अभिव्यक्ति की घम सीमा है । कवि विधादमयी स्थितियों में निमग्न हो जाता है । वस्तुतः 'अमित-स्मृति कुंज' निराशा की 'सरास-स्मृति' की स्मृति को ताजा करती है । शोकगीत में आन्तरिक वेदना गहना होती है ।

वस्तुतः कविवर 'तस्मा' जी प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, जीवन की कुसुमा, विद्वपता, आदर्श, यथार्थ की भूमियों में स्वच्छन्द विचरण करते हैं । प्रकृति चित्रण में ऐसी इनकी प्रतिभा अपना रंग उभारती है । काव्य कला की साधना विशेषकर 'गीत' जो पुत्र-शोक की पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति है । यह रचना छाण्ड हिन्दी कविता के इतिहास में एक नया सदृश देती है । 'शोक-गीत' स्वच्छन्दतावादी कविता की विधादमयी आन्तरिक अभिव्यक्ति होती है । वस्तुतः गीतों के द्वारा सर्वनात्मक

कल्पना के आधार पर कवि ने अपने जीवन की आशावादी तथा विषादमयी आन्तरिक वैयक्तिक मनःस्थितियों को ईमानदारी से चित्रित किया है जिनमें सच्ची अनुभूति की सतता मिलती है। यह सब काव्यात्मक कलात्मक अभिव्यक्ति में स्वच्छन्द कला का विस्तार है। कविवर 'तस्मा' जी की विरासत में स्वच्छन्दतावादी चेतना मिली थी और उसी को वे अपने जीवन में जाने-अनजाने संभालते रहे हैं। आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य, प्रकृति-चित्रण, आसू, हरना और 'सहर' के कवि के साहित्य में अवगाहन लेने वाला साहित्यकार स्वच्छन्दतावादी कला से अलग कैसे रह सकता है ?





सम्मान्य/प्रिय डा० अजब सिंह

गत लगभग ५० वर्षों से काव्य-सर्जन से, ४० वर्षों से अध्यापन-कार्य से तथा ३० वर्षों से शोध/शोध-निर्देशन, साहित्यिक चिंतन-मनन व लेखन से जुड़े रहने के परिणामस्वरूप अपनी समग्र चेतना ने मुझे, एक विनम्र साहित्य-साधक के रूप में, प्रेरित किया कि मैं अपने यत्किंचित् संचित अनुभव से आगे भी कुछ और विशिष्ट लक्ष्यबद्ध व उपयोगी कार्य कर सकूँ।

मुझे यह कहते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गत १३० वर्षों की (सन् १८५०—१९८०) हिन्दी-कविता के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों/पक्षों के अध्ययन से सम्बन्धित मेरा एक ग्रंथ-लेखन प्रोजेक्ट स्वीकार किया है। मैं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से संयुक्त रह कर उक्त कार्य को सम्पन्न करने में निरत हूँ।

अपने चिंतन-मनन के बीच मुझे केन्द्रीय महत्व के अनेक विवादास्पद बिन्दुओं पर साहित्य-जगत् के सह-चिन्तकों, सहकर्मियों से मानस-संवाद स्थापित करके विचार-विमर्श की महती आवश्यकता जान पड़ी है। मैं सम्मान्य कवियों, समीक्षकों व अध्यापक बन्धुओं के मूल्यवान् विचारों से लाभान्वित होने का इच्छुक हूँ। प्रस्तावली संलग्न है। यदि आप अपने अमूल्य समय के कुछ क्षण देकर मुझे अपने सुचिंतित सुभाव/मत/धारणा आदि से अवगत कर सकेंगे तो मैं आपके सौजन्य के प्रति आभारी होऊँगा। आपके मत-विशेष का आवश्यकतानुसार/प्रसंगानुसार उल्लेख भी ग्रंथ में करने की स्वतन्त्रता/अनुमति चाहूँगा।

साथ ही, कवि-बन्धुओं से एक विशेष निवेदन है : वे, सुविधा हो तो, कृपया अपने काव्य-कृतित्व विषयक ज्ञातव्य (रचनाओं के नाम, प्रकाशक, प्रकाशन-तिथि, संस्करण आदि) देते हुए व आधुनिक हिन्दी-कविता के विकास में अपना तात्त्विक/ऐतिहासिक योगदान रेखांकित करते हुए टंकित अथवा हस्तलिखित प्रसंग-प्राप्त सामग्री मेरे पाम भेजनेका कष्ट स्वीकार करें।

सधन्यवाद !

भवदीय,

रामेश्वरलाल खण्डेलवाल

श्री/डा० डा० अजब सिंह,
हिन्दी विभाग

अति गढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

प्रश्नावली

[कृपया अपने उत्तर सूत्रात्मक/संकेतात्मक ढंग से प्रश्नों के साथ के रिक्त स्थान में लिखें, अथवा स्वतंत्र कागज पर लिख कर मेरे पास भेजने का कष्ट करें]

१. क्या आधुनिक हिन्दी-कविता की विविध युगीन धाराओं का प्रचलित नामकरण आपको उचित जान पड़ता है ? जबकि :—

भारतेन्दु युगीन काव्य-धारा	व्यक्ति (भारतेन्दु) के आधार पर निर्धारित है;
द्विवेदी युगीन काव्य-धारा	व्यक्ति (पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी) के आधार पर निर्धारित है;
छायावादी काव्य-धारा	काव्य की सौंदर्यात्मक-रहस्यात्मक भावना या चेतना के आधार पर निर्धारित है;
प्रगतिवादी काव्य-धारा	आर्थिक वर्गसंघर्षात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक क्रांति-चेतना पर आधारित है;
प्रयोगवादी/प्रयोगशील काव्य-धारा	काव्य के शिल्प-तंत्र के प्रामुख्य पर आधारित है;
‘नयी’ कविता	मूलतः काव्य के कालवाचक गुण या विशेषण मात्र (?) को ओर सकेत करती-सी जान पड़ती है;
‘साठोत्तरी’ कविता	जो शताब्दी के एक दशक-विशेष का ही स्थूल विशेषणात्मक संकेत (?) करती-सी जान पड़ती है;

क्या यह अराजकता को सो स्थिति नहीं ? अवज्ञानिकता नहीं ? आपके मतानुसार किस काव्य-गुण, तत्त्व, युग-प्रवृत्ति आदि के आधार पर उक्त धाराओं का नामकरण पुनः होना चाहिए, जिससे कि सब काव्य-धाराएँ सातत्य के एक ऐतिहासिक या काव्यगुणात्मक तर्क-सम्मत अन्विति सूत्र में निबद्ध हो सकें ? या आप चाहते हैं कि उक्त प्रतिष्ठित व्यवस्था में अब कोई फेर-फार न हो ? यथास्थिति ही बनी रहे ।

२. क्या छायावादी कविता सचमुच अपनी जीवन-लीला समाप्त कर अब एक ऐतिहासिक स्मारक-मात्र बन कर रह गई है, अथवा जीवन व व्यक्ति के शाश्वत व मूल उत्सों से अनुस्थित रहने के कारण वह आज भी अपनी उत्तरवर्ती काव्य-धाराओं में, सूक्ष्म-स्थूल रूप में, जीवन्त तत्त्व बन कर रस-रक्त में समायी हुई है ?

205

३. प्रयोगशील/प्रयोगवादी कविता तथा 'साठोत्तरी' कविता से स्पष्टतः भिन्न 'नयी कविता' का स्वतन्त्र व्यक्तित्व क्या है ?

४. 'नयी कविता' की काल-व्याप्ति क्या हो ?—

भारतेन्दु से अब तक की समस्त कविता (प्राचीन काव्य से एकदम रंगत बदल देने के कारण) ?

छायावाद और उससे आगे की समस्त कविता ?

प्रयोगवादी/प्रयोगशील कविता और साठोत्तरी कविता के बीच प्रवाहित होने वाली काव्य-धारा ?

और कोई अन्य काल-व्याप्ति ?

५. 'नयी कविता' में 'नयो' विशेषण की संगति या सार्थकता क्या है ? हिन्दी-कविता के ऐतिहासिक विकास-क्रम में, कलान्तर में, क्या 'नयी' या 'नया' विशेषण अर्थ-शून्य नहीं रह जायगा ?

६. क्या 'नव गीत' जैसी कोई एक स्वतन्त्र काव्य-विधा है ? प्रतिष्ठित है ? गीत के साथ 'नव' विशेषण नितान्त उपयुक्त है, या अनुपयुक्त ?

७. क्या यथार्थ या सच्ची सामाजिक चेतना का प्रसार केवल प्रगतिवादी कविता ने ही किया है ? क्या यह श्रेय उसी को देना चाहिए ? आधुनिक हिन्दी काव्य-धाराओं ने भी बहुत सूक्ष्म व प्रभावी ढंग से व काव्य की मूल प्रकृति के अनुरूप उक्त प्रसार अपने-अपने ढंग से किया है या नहीं ? किया है तो कितना व कैसे ?

८. क्या युयुत्मावादी कविता, अकविता, विद्रोही कविता, बीट कविता, एक्सर्ड कविता, एण्टो कविता, अस्वीकृत कविता, क्षुत्कातर कविता, अपरम्परावादी कविता, अगली कविता आदि तथाकथित काव्य-धाराएँ विकासमान समग्र मानव की पूर्णता-प्राप्ति की ओर उन्मुख किसी अनिवार्य मूल्यवान् व अदम्य आकाक्षा की निदर्शक है। या वे प्रायः निम्नस्तरीय मानव-चेतना की क्षणजीवी, सतही, छिछली, फैशनेबल प्रवृत्तियाँ या सामयिक ऊर्मियाँ मात्र हैं जिनका श्रेष्ठ काव्य से कोई स्थायी दूरगामी, प्रभाव वाला या गहरा सरोकार नहीं है ?

९. विस्मय व रहस्यवादी चेतना से संस्कारगत रूप में सहज-सयुक्त रहना कवि का दूषण है या भूषण ?

१०. आन्दोलनों के बल पर चलने वाली कविता को शक्ति और सोमा क्या है, या होती है ?

११. क्या हिन्दी-कविता इस समय गत्यवरोध व भडकाव की स्थिति में है ? अथवा, वह आत्मवलपूर्वक व प्रयोग-चेतना से सम्पन्न हो मानव-विकास व मुक्ति के एक निश्चित चरण से गुजर रही है ?

१२. प्राचीन हिन्दी कविता की समग्र उपलब्धि के संदर्भ से अधुनिक या नवीन हिन्दी-कविता की उपलब्धि किस रूप में विशिष्ट या मूल्यवान् है ?

१३. क्या प्रतिभा (Genius), अन्तर्दृष्टि (Vision), प्रातिभज्ञान (Intuition) नामक व्यक्तित्व के मूल गुणों की भूमिका उत्कृष्ट काव्य के निर्माण में अनिवार्य है ? अथवा, इन गुणों के बिना भी आप श्रेष्ठ काव्य के निर्माण की पूरी संभावना मानते हैं ? यथार्थवाद के युग में अब ये सब बातें फिजूल तो नहीं हैं ?

१५. यह कहना कहाँ तक ठीक है कि छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी आदि काव्य-धाराओं की प्रायः समस्त दुर्बलताओं या खामियों का परिहार करके 'नभी कविता' ने व्यक्ति, समाज व कला की अपेक्षाओं की समवेत पूर्ति वाले स्वस्थ काव्य-स्वरूप की सफल प्रतिष्ठा की है ?

207

१६. आपकी धारणा में आधुनिक युगीन प्रतिनिधि पाठकीय चेतना, वस्तु-समृद्धि व शिल्प-सौष्ठव की समग्र प्रभविष्णुता की दृष्टि से किस कवि के कृतित्व से सर्वाधिक सन्तुष्ट होती जान पड़ती है—मैथिलीशरण गुप्त ? 'प्रसाद' ? 'निराला' ? 'अज्ञेय' ? मुक्तिबोध ? या अन्य कोई कवि ?

सम्पर्क :

अमीन रोड,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
पिन—१३२ ११८
दिनांक : ३०-११-१९८२

रामेश्वरलाल खण्डेलवाल

ਸੰਘਾਨੁਸ਼ਾਸਿਕਾ -

English.

Aesthetics and Poetics; Yuri Bara Bash, Moscow-1977.

A History of English Literature; A. Compton Ricketts,
London, 1950.

A Literary History of England; A.C. Ed. Baugh, Routledge
& Kegan Paul, Ltd. London, 1950.

A History of Nineteenth Century English Literature;
G. Saintsbury, Macmillan & Co. Ltd., London.

A History of Modern Criticism (The Romantic Age); Rene Wellek,
London, 1961.

A Glossary of Literary terms; M.H. Abrams Macmillan India
Press, Madras, 1986.

Biographia Literaria; S.T. Coleridge, London, 1949.

Coleridge; H.D Trail, London, 1909.

Concept of criticism; Rene Wellek, Yale University Press,
London, 1965.

English Romantic Poets; Ed. M.H. Abrams, Oxford University
Press, New York, 1960.

Imagination; E.J. Parlong, New York, 1961.

Lyrical Ballads; Ed. R.L. Brett & A.R. Jones, 1963, The
Edition of 1798 & 1800.

Myth & Literature contemporary; Ed. by John B. Vickery,
University of Nebraska Press, Lincoln, 1966.

Myth; K.K. Ruthven, Methuen and Co, Ltd. 1979.

Naturalism in English Poetry: S.A. Brooke, J.M. Dent & Sons Ltd. London.

Natural Supernaturalism: M.H. Abrams, New York, Norton, 1971.

Romantic Images: Frank Kermode, Kegan Paul, London, 1957.

Speculations: T.E. Hulme Edited by Herbert Read, New York, 1929.

Social Psychology: M.C. Daugall, George Alleen and unwin, 1936.

Socialist Realism and the Modern Literary Process: A Ovcherenko, Progress Publishers, Moscow, 1978.

Sri Aurobindo And Jung: Styra Prakash Singh, Madhucchandas, Publications, Aligarh, 1986.

Romanticism Reconsidered: Edited by Northrop Frye, Columbia University Press, U.S.A. 1963.

Romanticism in Perspective: Lilian, R. Furst, Macmillan London, New York, 1969.

Romanticism: Edited by John B. Halsted, Macmillan London, 1969.

Romanticism: Lascelles Abercrombie, London, 1926.

Rousseau and Romanticism: Irving Babbitt, New York, 1955.

Romantic Image: Frank Kermode, Kegan Paul, London, 1957.

The Romantic Agony: Maris Praz, Oxford University Press, London, New York, 1951.

The Poetic Image : C.D. Lewis, London, 1947.

The Romantic Assertion: R.A. Foakes, London, 1968.

The Literary History of England: Mrs. Max Aliphan, Macmillan & Co. Ltd. London, 1980.

The Romantic Imagination ; C.M. Bowra, Oxford University Press,
London, 1961.

The struggle of the Modern; Stephen Spender. Hamish Hamilton,
London, 1963.

The Mirror and the lamp; M.H. Abrams, Oxford University Press,
1953.

The Romantic theory of Poetry : A.E. Powell, London, 1926.

The Romantic Triumph; T.S. Omand, London, 1st Edition.

The Decline & Fall of the Romantic ideal; F.L. Lucas Cambridge,
1963.

The Last Romantic; Graham Hough, London, 1961.

Upanisadic Symbolism; Dr. S.P. Singh, Lachman, chand mehar
chand and Das, New Delhi, 1981.

English Journals and Magazines

Studies in Romanticism; Editor W.H. Stevenson.

Volume 12 No.1 Winter, 1973.

Volume 12 No.2 Spring, 1973.

Volume 12 No.3 Summer, 1973.

Volume 12 No.4 Fall, 1973.

Volume 17 No.4, Fall 1978.

Volume 17 No.3, Summer 1978.

Volume 19 No.1 Spring, 1980.

Volume 21 No.4 Winter, 1982.

The Twentieth Century Literature : Volume-24, Summer Nov.2, 1978
Hobstra University Press.

सहायक ग्रंथ-सूची

संस्कृत

अभिज्ञान शाकुन्तल-टीका०डॉ०शिवराज शास्त्री, साहित्य
भाण्डवस्तु, सुगाण्ड बाजार, मेरठ, 1961 .

बुद्धाविरतम्-सं० सूर्यनारायण बोधारी, संस्कृत भावन, पूर्णिया
(बिहार), प्र०भा०, 1948, द्वि०भा०, 1953 .

मातृविक्रान्तिमिश्रटीका०रामचन्द्र मिश्र, बोडाम्बा संस्कृत सीरीज,
बनारस, 1951 .

माध्यमिककारिका-नागार्जुन, पौस्ट प्रेजुएट रिसर्च इन्स्टीट्यूट, दरभंगा
(बिहार)

मेगादूत-सं० सुधीरकुमार गुप्त, भारती मंदिर, छुरवा, 1956

रघुवश-टीका०काशीनाथ पाण्डुरंग, निर्णयासागर प्रेस, बम्बई, 1925

शिशुपात कथाम्-महाकवि माणिक्य, व्याख्याकार, डॉ०आद्याप्रसाद
मिश्र, प्रथम सर्ग अक्षयवट प्रकाशन, एताहाबाद, 1981

हिन्दी शोध एवं समीक्षा :

ओंजी की स्वच्छन्द कविता-प्रमोद वर्मा, हिन्दी ग्रंथ अकादमी,
भाँषात, प्र० सं० 1971

ओंजी भाषा और साहित्य-डॉ०रामअब्बा द्विवेदी, प्रकाशन
शाळा, सुवर्ण विभाग, उत्तर प्रदेश, प्र०सं० 1960

अपेय और आधुनिक रचना की समस्या-डॉ०रामस्वयं चतुर्वेदी,
भारतीय ज्ञानपीठ काशी, प्र०सं०, 1959

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य-डॉ०रामेश्वरनाथ
ठाण्डेलवाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागव, दिल्ली, 1958

आधुनिक कविता की स्वच्छन्द धारा-डॉ०त्रिभुवनसिंह, हिन्दी
प्रचारक पुस्तकालय

आधुनिक प्रतिनिधि कवि-डॉ०शांति स्वयं गुप्त, सूर्य प्रकाशन
दिल्ली, 1976 .

आधी और बादनी-विशिष्ट अभिगत तथा अनारग परिचय), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली .

आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुखा प्रवृत्तियाँ-डा० नरेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1962 .

आधुनिक साहित्य-आचार्य नन्ददुतारे बाजपेयी, भारत भांडार, सीडर प्रेस, इलाहाबाद, सं० 2013 .

आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका-सम्पादक डा० लक्ष्मीसागर बाण्य, हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद, 1952

आधुनिक काव्य: रचना और विचार-आचार्य नन्ददुतारे बाजपेयी, साधी प्रकाशन, सागर, चतुर्था सं० 1969 .

आधुनिक हिन्दी काव्य में अप्रस्तुत विधान-डा० नरेन्द्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली, प्र० सं० 1972

आलवाल- सं० ही० वात्स्यायन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्र० सं० 1971

सामान्य मनोविज्ञान-जयगोपाल त्रिपाठी, जैन संस प्रिण्टर्स, सेठ गती, आगरा, प्र० सं०, 1977

असामान्य मनोविज्ञान-हंसराज भाटिया, राजकमल प्रकाशन, प्र०, दिल्ली 1964 .

आधुनिक हिन्दी साहित्य-एक दृष्टि-प्रकाशचन्द्र गुप्त, आलोक प्रकाशन, बीकानेर, प्रकाशन सं० 1952 ई०

आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य-विधान-डा० सुरेशचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली, प्रकाश सं०, 1960 ई०

आधुनिक काव्यधारा-डा० कैसरी नारायण शुक्ल, सरस्वती मंदिर, बनारस, संवत् 2007 .

आधुनिक परिवेश और नवोदय-डा० शिव प्रसाद सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970 ई०

आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान-डा० कैदरनाथ सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-6, प्र० सं० 1971 ई०

आधुनिक हिन्दी सैजान-सं० प्रभाकर माचवे एवं कृष्णामुरारि शर्मा,

टाइमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड (दिल्ली), प्र० सं०

आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक-विधान-डॉ० नित्यानन्द शर्मा, साहित्य

सदन, देहरादून, प्र० सं०

आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य का स्वप्न और विज्ञान-डॉ० आशा किशोर,

विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशाखापट्टी बॉक, वाराणसी-१, प्रथम

संस्करण, १९७१ ई०

आधुनिकता और हिन्दी आलोचना-डॉ० छन्दनाथ मदान, राधाकृष्ण

प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, प्र० सं०, १९७५ .

आधुनिक सामाजिक आन्दोलन और आधुनिक हिन्दी-साहित्य

(१९००-१९७०)-

कृष्ण बिहारी मिश्र, आर्य बुक डिपो, ३०, नारदवाला, करीब बाग, नयी

दिल्ली-५, प्र० सं० १९७२ .

आस्था के वरण-डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्र० सं० १९६८

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और अंगार-डॉ० रागेय राणाव, राजपाल

एंड सन्स, दिल्ली, प्र० सं० १९६१ .

आधुनिक हिन्दी कविता का मूल्यकर्म-डॉ० छन्दनाथ मदान, हिन्दी भवन,

आसन्धार और इलाहाबाद, प्र० सं० मार्च, १९६२ .

आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ० नामवर सिंह, लोकभारती,

प्रकाशन, १५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१, वतुर्पा सं०

१९६८

आधुनिक साहित्य-आचार्य नन्ददुतारे वाजपेयी, भारती माडार, लीडर प्रेस,

इलाहाबाद, दि० सं० संवत् २०१३ वि०

आधुनिक हिन्दी कविता में नव-स्वच्छन्दतावाद-डॉ० अखिल सिंह, पटना विश्व

विद्यालय की डी० लिट० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध

(अप्रकाशित) १९८१

आधुनिक साहित्य की व्यक्तिवादी गूँमिका-डॉ० कृष्ण विहारी, नन्द

किशोर एंड सन्स, बॉक, वाराणसी-१, प्र० सं०, १९६२ .

आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ-डॉ० अजय सिंह, विश्वविद्या-

लय प्रकाशन, वाराणसी, प्र० सं० 1975

आधुनिक हिन्दी - काव्य-डॉ० राजेन्द्र मिश्र, मन्धा, कानपुर, फरवरी-1966

आधुनिक कवि-विश्वम्भर 'मानव' लोक भारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा
गांधी मार्ग, उत्तराखण्ड-1, दिव, परिचयदिप्ति सं० 1965 .

आधुनिक हिन्दी-कव्य-कुमार 'विमल' अर्चना प्रकाशन, आरा (बिहार),
प्र० सं० 1964

आधुनिक हिन्दी-साहित्य-डॉ० रामगोपाल सिंह चौहान, विनोद पुस्तक
मंदिर, हाथिपटल रोड, आगरा, प्र० सं०, 1962

आधुनिक काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत-डॉ० कैसरी नारायण शुक्ल,
सरस्वती मंदिर, काशी, प्र० सं०, वसन्त पंचमी, 2004

आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प-कैलाश बाजपेयी, आत्माराम एंड सन
कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र० सं० 1963 .

आधुनिक हिन्दी कविता में गीति-तत्त्व-डॉ० सविन्दानन्द तिवारी, हिन्दी
साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1964

आलोचना के सिद्धान्त-शिवदान सिंह चौहान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,
1960 .

आज का हिन्दी-साहित्य-मन्मथराय गुप्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
दिल्ली, प्र० सं० 1966

आज का भारतीय साहित्य-राजपाल एंड सन, दिल्ली, प्र० सं०, 1967

आधुनिक समीक्षा-डॉ० देवराज, राजपाल एंड सन, दिल्ली-6, 1954

आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में पार्श्ववर्त्य चिन्तन-डॉ० रामकिशन सेनी,
पंचशीत प्रकाशन, फिल्म कालोनी, जयपुर, प्र० सं० 1980

आधुनिक हिन्दी कविता में चित्र विधान-डॉ० रामयतन सिंह शर्मा, नेशनल
पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1965 .

इतिहास और आलोचना-डॉ० नामवर सिंह, साहित्य प्रकाशन, 2-डी, मिर्जा
रोड, इलाहाबाद, फरवरी-1962

उत्तर छायावादी हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ अन्धा धारार-डॉ० चन्द्रनाथ
मदान, द्वारा लिखा गया निबन्ध, जी भाषा विभाग,
पंजाब की वार्षिक गोष्ठी 1959-60 में पढ़ा गया ।

कविधर 'तस्मा': सर्वज्ञ के चरण प्र० सं० डॉ० अमानन्द रू० सारस्वत,
चिन्ता प्रकाशन, पिलानी (राजस्थान)

रूपना और छायावाद-कैदारनाथ सिंह, इस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र० सं०
1957

काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध-प्रसाद, भारतीय भाण्डार, तीर प्रेस,
प्रयाग, सं० 2010 .

कविता के नये प्रतिमान- डॉ० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्र०
सं०, 1968 .

काव्य के रूप- गुलाबराय, आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, चतुर्थ
संस्करण, 1958 .

काव्य में उदात्ततत्त्व-डॉ० नगेन्द्र, राजकमल एंड संस, दिल्ली, 1958 .

कामायनी के अध्ययन की समस्या-डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
दिल्ली-6, प्र० सं० 1970 .

काव्य-शिल्प के आयाम-सुदेश शर्मा, आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-7,
प्र० सं० 1971 .

काव्य में सौन्दर्य और उदात्त तत्त्व-शिवबालक राय, वसुमती, 3A, जी रो
रोड, इलाहाबाद-3, प्र० सं०, सं० 1968 .

काव्य की शूक्ति-डॉ० रामधारी सिंह 'दिनकर' उदयाचल, आर्यकुमार रोड,
पटना-4, प्र० सं० 1958 .

कामायनी का रचना सप्ताह-डॉ० प्रेमशंकर, भारतीय भाण्डार, तीर प्रेस,
इलाहाबाद, 1977 .

काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध-जयशंकर प्रसाद, भारती भाण्डार,
इलाहाबाद, सं० ४०

चानानन्द और स्वच्छन्द का व्याख्यान-मनोहर लाल गोड़, नगरी प्रचारिणी
सभा, काशी, सं० २०१५

चिन्तामणि भाग-३, डॉ० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं०
१९८३ .

छायावादोत्तर काव्य में बिम्ब विधान-डॉ० उमाशंकर अष्टवश, आर्य बुक
डिपो, नयी दिल्ली, प्र० सं०

छायावाद-डॉ० नामवर सिंह, राजकमल, प्रकाशन, दिल्ली-६, दि० सं०

छायावाद पुनर्मूल्यांकन-श्री सुमित्रानन्दन 'पंत', लोकभारती प्रकाशन, १५-ए
महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१, प्र० सं० २० मई, १९६५ .

छायावाद का पुनर्मूल्यांकन-डॉ० रामदरश मिश्र, साधु प्रकाशन, सागर, म० प्र०
प्रथम संस्करण .

छायावाद का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन-डॉ० कुमार 'विमल' राजकमल प्रकाशन,
दिल्ली-६, प्र० सं०, १९७० .

छायावाद-सं० डॉ० उदयभानु सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, छठा सं०

छायावादोत्तर काव्य-सिद्धीशंकर प्रसाद, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,
१९६६ .

छायावाद का पतन-डॉ० देवराज, बाणी मन्दिर प्रेस, छपरा, १९४९

छायावाद युग-डॉ० शम्भुनाथ सिंह, सरस्वती मंदिर, जतनवर, बाराणसी, दि० सं०
१९६२ .

छायावादी काव्य और निराशा-डॉ० कुमारी शान्ति श्रीवास्तव, ग्रन्थ प्रकाशन
रामायण, कानपुर, प्रकाशन १९६६ .

छायावाद का काव्य-शिल्प-प्रतिमा कृष्णवत, राधाकृष्ण प्रकाशन, सं० १९७१

छायावाद काव्य तथा ग्रन्थ दर्शन-डॉ० हरनारायण सिंह, ग्रन्थ रामबाग
कानपुर, नवम्बर-१९६४ .

छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि-
डॉ० कमलाप्रसाद पाण्डेय, रचना प्रकाशन, 45-ए, बुलडाबाद, इलाहाबाद
1, प्र० सं० 1972

छायावादी कवियों पर अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों का प्रभाव-डॉ०
पूतबिहारी शर्मा, इन्द्रेक्ष राजपूत, रावैश प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० 1977
जयशंकर प्रसाद: वस्तु और कला-डॉ० रामेश्वरलाल ठाण्डेलवाल, नेशनल
पब्लिशिंग हाउस, प्र० सं० 1968 .

डॉ० 'तस्मा' दृष्टि और सृष्टि-डॉ० शांति स्वस्म गुप्त, सूर्य प्रकाशन,
दिल्ली, प्र० सं० 1978

दूसरी परंपरा की छाया-डॉ० नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1983
नया साहित्य: नये प्रश्न-आचार्य नन्द दुतारे बाजपेयी, विद्यामन्दिर
महमनात, बनारस-1, दिव्यती याधुस्ति, 1959

नयी कविता: नये कवि-विश्वेश्वर 'मानव' लोकभारती प्रकाशन, 15-ए,
महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, -1, 1, जनवरी-1968

नया हिन्दी काव्य और विवेचन-डॉ० शम्भुनाथ चतुर्वेदी, नन्दकिशोर
एण्ड सस, चौक, बाराणसी, प्र० सं० 1964 .

नन्ददुतारे बाजपेयी-डॉ० प्रेमशंकर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्र० सं० 1983

नया हिन्दी काव्य-डॉ० शिवकुमार मिश्र, अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर
आनपुर, प्रकाशन, 1962 .

नयी समीक्षा-अमृतराय, एस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1950 .

नया हिन्दी साहित्य-एक भूमिका-प्रकाशचन्द्र गुप्त, सरस्वती प्रेस, बनारस
नव स्वच्छन्दतावाद-डॉ० अजय सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन बाराणसी,
प्र० सं०

नया साहित्य नये प्रश्न-आचार्य नन्द दुतारे बाजपेयी

नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र-गजानन माधव मुक्ति बांधा, राधाकृष्ण
प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं०

- नई कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबन्ध-गजानन माधव
 मुक्तिबाधा, विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर, 1964
- निराला-पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्र० सं० 1969
- निराला की साहित्य साधना, द्वितीय छांट-डा० रामविलास शर्मा,
 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्र० सं०
- प्रसाद का काव्य-डा० प्रेमशंकर, भारती गण्डार, तीडर प्रेस, इलाहाबाद,
 संशोधित संस्करण, सं० 2018 वि०
- पार्श्ववर्त्य साहित्यचर्चा और हिन्दी पर उसका प्रभाव-डा० रवीन्द्रसहाय
 वर्मा, विश्वविद्यालय, प्रकाशन, गोरखपुर, 1960
- पूर्व और पश्चिम: कुछ विचार-डा० राधा कृष्ण, राजपाल एंड संस, 1967 .
- भारतीय शक्तिशाली आन्दोलन का इतिहास-मन्मथनाथ गुप्त,
 आत्माराम स्पेड संस, दिल्ली, 1986
- बीसवीं शताब्दी: हिन्दी साहित्य नये संदर्भ-डा० तन्मीसागर बाणर्षी,
 साहित्य भावन प्रालि०, इलाहाबाद, प्र० सं० 1966 .
- मनोविज्ञान के सम्प्रदाय-डा० रामपाल सिंह वर्मा, विनायक पुस्तक मंदिर,
 आगरा, चतुर्था सं०, 1977 .
- माधानाथ चतुर्वेदी-यात्रा-पुरुष-सं० की ज्ञान जोशी, नेशनल पब्लिशिंग
 हाउस, दिल्ली, प्र० सं० 1969
- महाकवि प्रसाद- विजयेन्द्र स्नातक एवं डा० रामेश्वरनाथ छाण्डेलनाथ,
 भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली, 1958
- मिथ्या और स्वप्न 'कामायनी' की मनस्सदृश्य सामाजिक श्रुमिका-डा० रमेश
 कृत 'मेरा' मन्था रामबाग, कानपुर, 1967
- मिथ्याकीय रूपना और आधुनिक काव्य-डा० जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव,
 विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1985
- मिथ्या और साहित्य-डा० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
 प्र० सं० 1, 1979 .

रत्न-मीमांसा-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा,
काशी, तृतीय संस्करण

रीति-काव्य की श्रुति-डा० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,
द्वितीय संस्करण

सांस्कृतिक साहित्यशास्त्र-डा० देवराज उपाध्याय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
प्रथम संस्करण, 1951

रहस्यवाद-डा० राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र० सं० 1966

राग-विराम-सं० डा० रामविलास शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद-1

राष्ट्रीय साहित्य तथा अन्य अनेक-आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, विद्या
मंदिर, वाराणसी, 1965

सिद्धान्त और अध्ययन-डा० गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पांचवां
संस्करण

सुमित्रानन्दन 'पन्त'-सं० शहीरानी मुर्दू, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-6,
1959

सुमित्रानन्दन 'पन्त'-डा० नगेन्द्र, साहित्य रत्न भाण्डार, आगरा, अष्टम संस्करण
सं० 2014

स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का दार्शनिक - विवेचन-डा० जगदीश गुप्त'
प्रगति प्रकाशन, आगरा, प्र० सं० 1972 .

स्वच्छन्दतावादः छायावाद-डा० अजयसिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चण्डी,
वाराणसी, प्र० सं० 1975

स्वच्छन्दतावादी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन-डा० सी० आदेश्वरराव, प्रगति
प्रकाशन, आगरा-3, प्र० सं० 1972

स्वच्छन्दतावादी नाटक और मनोविज्ञान-डा० शिवराम माती, पुस्तक संस्थान
109/50-ए, नेहरू नगर, ज्ञानपुर-12, प्र० सं० 1976 .

स्वच्छन्दतावाद स्वल्प विश्लेषण-डा० कृष्णमुरारी मिश्र, प्रगति प्रकाशन,
आगरा-3, प्र० सं० 1979 .

स्वच्छन्दतावाद एवं छायावाद का तुलनात्मक अध्ययन-डॉ० शिवकरणा सिंह,

क्रिस्ताब्ध मसत, हस्ताक्षरवाद, द्वितीय संस्करण, 1967

स्वच्छन्दतावाद का नवमैषा नव स्वच्छन्दतावाद-डॉ० अजय सिंह का आलेख,

6 नवम्बर 1986 श्री 'तुलनात्मक भारतीय साहित्य पर राष्ट्रीय सेमिनार' अलीगढ़ मुस्लिम विश्व-विद्यालय, अलीगढ़ में पढ़ा गया आलेख, पृ० 2 स्वतंत्रता आन्दोलन की विचारधारा-मधुलिमय, पल्लवन प्रकाशन, नवीन शाहदरा, दिल्ली .

श्री धार पाठक तथा सिन्धी का पूर्व स्वच्छन्दतावादी काव्य-डॉ० रामचन्द्र मिश्र, रणजीत प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, चौधनी चौक, दिल्ली, 1959 .

संस्कृत कविता में रोमांटिक प्रवृत्ति- डॉ० हरिश्चन्द्र शर्मा, लीला कमल प्रकाशन ही-141, मेरठ, प्र० सं०

संस्कृति और साहित्य-डॉ० रामविलास शर्मा, क्रिस्ताब्ध मसत, हस्ताक्षरवाद, 1949 साहित्यालोचन-श्यामसुन्दर दास, हण्डियन प्रेस, प्राइवेट लिमिटेड, हस्ताक्षरवाद , वैरसवी आवृत्ति, सं० 2016

साहित्य-सहचर-आचार्य हजारि प्रसाद द्विवेदी, नैवेद्य निकेतन, रवीन्द्रपुरी, धाराणासी, प्र० सं० 1965

साहित्यान्वेषण-डॉ० विनयमोहन शर्मा, साहित्य सदन, देहरादून, प्र० सं० 1969 साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य-डॉ० रघुवंश, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्रथम संस्करण, 1963

साहित्यानुशीलन-शिवदान सिंह चौहान, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली-6, 1955

समीक्षा के वातायन-डॉ० रामेश्वरदास छापडेतवाल, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हाँती मोहल्ला, करनाल, प्र० सं०, 1983

शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भाग-2-गोविन्द त्रिगुमायत, एस्० वाई एण्ड कम्पनी, दिल्ली, 1968

- शुद्ध कविता की जाँच-डॉ० रामधारी सिंह 'दिनकर' उदयाचल, राजेन्द्र
नगर, पटना-4, प्र० सं० सितम्बर, 1966 .
- विचार के प्रवाह- डॉ० देवराज उपाध्याय, मंगल प्रकाशन, जयपुर, प्र० सं० 1981
- विचार और विश्लेषण- डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,
द्वितीय संस्करण, 1961 .
- विचार और अनुभूति- डॉ० नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, सं०
शरद पूर्णिमा .
- हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास (दशम भाग)- प्र० सं० डॉ० नगेन्द्र,
नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्र० सं०
- हिन्दी - साहित्य का वृहद् इतिहास (आठ भाग)- सं० डॉ० नगेन्द्र, नागरी
प्रचारिणी सभा, काशी, सं० 2015 वि०
- हिन्दी साहित्य-शांदा और समीक्षा- डॉ० कृष्णकुमार दिवाकर, दिल्ली
पुस्तक सदन, दिल्ली-6, प्र० सं० 1968
- हिन्दी साहित्य में विविधवाद- डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल, पद्मजा प्रकाशन,
104-ए/344, रामबाग-कानपुर, बसन्त पंचमी, 2010 वि०
- हिन्दी काव्य में प्रकृति-चित्रण- डॉ० किरणकुमारी गुप्ता, हिन्दी साहित्य
सम्मेलन, प्रयाग, द्वितीय संस्करण
- हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी, गुलाब चन्द्र मेड़तिवा,
मानक चन्द बुक डिपो सती दरवाजा, उज्जैन, म० प्र०, प्र० सं०
- हिन्दी साहित्य के प्रमुखा 'वाद' और उनके प्रवर्तक- डॉ० विश्वम्भार नाथ
उपाध्याय, सरस्वती पुस्तक सदन, मौंती कटरा, आगरा, प्र० सं०
- हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना- डॉ० विद्यानाथ गुप्त, भारतीय
साहित्य मंदिर, पम्बारा, दिल्ली, 1966 .
- हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य- अक्षय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
1967 .

हिन्दी-साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, काशी नागरी
प्रचारिणी सभा, तेरहवां संस्करण .

हिन्दी-साहित्य (उत्कर्ष उद्भाव और विकास)-डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी,
उत्तरचन्द एंड सन, दिल्ली, 1955 .

हिन्दी-साहित्य का वृहत् इतिहास (चतुर्दश भाग)-प्र० सं० डॉ० हरदश सात
शर्मा, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, प्र० सं०

हिन्दी की स्वच्छन्द समीक्षा-डॉ० पूरुष बिहारी शर्मा, सारामंडल अतीगढ़,
प्र० सं० 1982

हिन्दी का सामयिक साहित्य-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी
विज्ञान, काशी, प्र० सं०

हिन्दी साहित्य की धाराएँ और दिशाएँ-डॉ० शशिभूषण सिंह,
प्रदीप प्रकाशन, महरौली, दिल्ली, 1981

हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य-डॉ० प्रेमशंकर, मध्य प्रदेश ग्रन्थ अकादमी,
भाोपाल, 1974 .

हिन्दी आलोचना के आधार-स्तम्भ-सं० डॉ० रामेश्वरतात ढण्डेलवाल,
डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1966 .

हिन्दी साहित्य की सदी शताब्दी-आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, लोक-
भारत प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1, संशोधित
एवं परिवर्धित संस्करण, जून-1970

हिन्दी आलोचना पहचान और पर० सं० डॉ० चन्द्रनाथ मदान, लिपि
प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण, 1974

हिन्दी स्वच्छन्दतावादः पुनर्मूल्यांकन-डॉ० नरेंद्रदेव वर्मा, साधु प्रकाशन,
रागर, 1968 .

हिन्दी काव्य पर अन्त प्रभाव-रवीन्द्र सहाय वर्मा, पद्मना प्रकाशन
कानपुर, प्र० सं० दीपावती, सं० 2011 .

हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास-डॉ० कमलकुमारी जोहरी, मन्दास,
कानपुर, 1965 .

हिन्दी काव्य में आयावाद-श्री दीनानाथ 'शरण' ग्या प्रसाद एण्ड
सन्स, आगरा, 1957 .

हिन्दी समीक्षा, स्वप्न और सन्दर्भ-डॉ० रामदरश मिश्र, मैकमिलन, दिल्ली,
म०स० 1974

हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ- (शून्यिका) डॉ० रघुवंश, राजकमल प्रकाशन,
दिल्ली, दि०, स० 1958 .

काव्य

अनामिका-निराशा, भारती भाण्डार, तीडर प्रेस, इलाहाबाद, दि०स०
'अग्नि-संगीत (कविवर 'तस्या' की कविताएँ) प्रस्तोता डॉ० अमानन्द
सारस्वत 'चिन्ता प्रकाशन, पिलानी, राजस्थान, 1975

अतीत के चत-चित्र- महादेवी वर्मा, भारती भाण्डार, इलाहाबाद,
अणिमा- निराशा, लक्ष्मी भारती प्रकाशन, दि०स० 15-२०
महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, 1972 .

आधुनिक कवि-श्री सुमित्रानन्दन 'पत' हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,
सातवीं संस्करण

आधुनिक कवि-श्री माधवान सात चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग, म०स०

आसू- अयशकर प्रसाद, भारती भाण्डार, तीडर प्रेस, इलाहाबाद, दि०स०
आधी और बादनी-रामेश्वर सात छापेसवात 'तस्या' नेशनल पब्लि-
शिंग हाउस, दिल्ली, 1975

उर्मग- गोपाल सिंह 'नेपाली' 'रूप' भावण केन एवं सन्तति नई दिल्ली
म०स० 1980 .

संस्कृत- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' विद्यापीठ प्रकाशन, मन्दिर, प्र० सं० 1931

कुल्लूत्रि- रामधारी सिंह 'दिनकर' उदयाचल, राजेन्द्रनगर, पटना, 1971

कामायनी- जयशंकर प्रसाद, भारतीय भाण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, एकदश संस्करण .

ग्राम्या- सुमित्रानन्दन 'पंत', भारतीय भाण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1967

गुञ्जन- सुमित्रानन्दन 'पंत' भारतीय भाण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण .

गीतिका- निराता, भारतीय भाण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद पाँचवा संस्करण

चन्द्रगुप्त मौर्य- जयशंकर प्रसाद, भारतीय भाण्डार, प्रयाग ग्यारहवा संस्करण

चक्रवात- रामधारी सिंह 'दिनकर' उदयाचल, जय कुमार राठ, पटना

हरना- जय शंकर प्रसाद, भारतीय भाण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सप्तम आवृत्ति .

नक़्कै- 1- नसिब ख़िस्तान शर्मा, कैसरी कुमार, नरेश, मौलीलात बनारसी दास, दिल्ली, प्र० सं०

नक़्कै- 2 नसिब ख़िस्तान शर्मा, कैसरी कुमार, नरेश, परिणत प्रकाशन, पटना, प्र० सं०

प्रथम किरण- रामेश्वरलाल ठाण्डेलवाल 'तस्या' विद्याभास्कर, बुद्धिपी, ज्ञानपीठ, बनारस, सं० 2006 .

साम्ब्यगीत, महादेवी वर्मा, भारतीय भाण्डार, इलाहाबाद, पंचम सं०

स्मृति की रेखाएँ- महादेवी वर्मा, भारतीय भाण्डार, इलाहाबाद, नवा० सं०

हम शिल्पी संग्रह के- रामेश्वर लाल ठाण्डेलवाल 'तस्या' नटराज पब्लिशिंग हाउस, करनाल, प्र० सं० 1984 श्रृंग श्रृंग

हम विषयायी जनम के- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1964 .

हिमाचल- रामेश्वर लाल ठाण्डेलवाल 'तस्या' परमात्मा शरण,

अ० भा० राष्ट्रीय साहित्य परिषद् मेरठ, मार्च 1952 .

पत्र-पत्रिकाएँ

- 'आज' बनारस, 29 जुलाई, 1952
 दैनिक प्रकाश, अलीगढ़, 29 नवम्बर 1976
 प्रावडा, दैनिक, अलीगढ़, 27 नवम्बर 1976
 हिन्दुस्तान, दैनिक, नई दिल्ली, 5 अप्रैल, 1978
 अवन्तिका-काव्यालोचनाक, जनवरी 1954, नवम्बर 1955, अप्रैल, 1956, जून 1956
 आलोचना-जनवरी, 1953, दिसम्बर, 1970, मार्च, 1971, अप्रैल-जून, 1953
 अश्विनव भारती- हिन्दी विभाग-अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
 की शोध-पत्रिका .
 रूपना, जनवरी 1963
 सरस्वती, प्रयाग, अक्टूबर 1952, जून, 1921, जनवरी, 1932 .
 संभावना-वर्ष-1, अंक -1, 2,
 साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 6 अगस्त-1967, 20 मार्च 1968, 10 फरवरी, 1974 .
 साहित्यधामिता-भारती जोनपुर, अप्रैल, 1986, अगस्त, 1986 .
 नई धारा-पटना, अक्टूबर-नवम्बर 1986
 नागरी पत्रिका-अगस्त-दिसम्बर, 1975, मार्च-अप्रैल, 1975
 ज्योत्स्ना-पटना, नवम्बर, 1985
 प्रज्ञा-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका, अंक-30, भाग-2, वर्ष 1985
 युगधर्म, नागपुर, दिसम्बर, 1953 .
